October 2022 I Issue 40

Prabha प्रभा

The Prabha Khaitan Foundation Chronicle

PRABHA KHAITAN FOUNDATION
अपनी भाषा अपने लोग

Season of Mists & Mellow Fruitfulness

Is there a living heart that has not been touched by the whispers and soft beauty of autumn? In this issue of *Prabha*, we explore, among many other things, all the emotions surrounding the season that sets every poet's heart aflame

Pg 4–14

INSIDE

KRISHNA'S STORY 20

NURTURE FIRST 22

TELL REAL STORIES 41

ICONIC JOURNEY 52

INSIDE

MOMENTS IN THE WIND 15

ODE TO A PIONEER 16

QUEST FOR LOVE 23

GIFT OF GRATITUDE 27

SRK, ECONOMICS AND INDIAN WOMEN 30

REMEMBER THE GIRLS 34

LOOKING AT PARTITION 36

ALWAYS ASK FOR HELP 39

HOW TRANSLATION WORKS 42

FUTURE FORWARD 47

HELPING ALL LIVES 50

Prabha प्रभा

MANISHA JAIN
Communications & Branding Chief,
Prabha Khaitan Foundation

A Time to Transform

Autumn is often viewed as the prelude to winter, which, for many, is a symbol of difficult times. But this brief period of transition between the summer and winter months is also when nature is at its fullest. For some, autumn signifies the hope for a second chance, a promise of new beginnings, while, for others, it is a dirge to announce the death of dreams and aspirations. No matter how one looks at it, autumn remains that brief mystical respite that causes one to pause, look back and take stock of the year gone by. As we move towards the completion of another year, we ought to remember Shelley's immortal words: "If Winter comes, can Spring be far behind?" **Prabha Khaitan Foundation** celebrates this spirit of hope, as you will find as you move through the pages of this issue of *Prabha*.

You can also read about our celebrations on the completion of 50 sessions of **Kalam** in the city of Patna, by staging a play to pay homage to the First Lady of Indian Cinema, Devika Rani, one among many remarkable women who have made India proud. And with October 11 having been celebrated as the International Day of the Girl Child across the world, it is time to renew our vows to help girl children blossom into brilliant women with minds of their own. This issue also carries conversations with pioneering women such as Barkha Dutt, Shrayana Bhattacharya, Bhawana Somaaya and Aanchal Malhotra. We also celebrated the International Booker Prize winner, Geetanjali Shree. In fact, I had the good fortune of speaking to one of India's greatest musical legends, Usha Uthup. In our delightful conversation, we discussed her long association with the Foundation and her unique journey in the music industry.

As always, several of the Foundation's events have been enabled by the brilliant **Ehsaas** Women. In this issue, we are thrilled to feature the dynamic **Ehsaas** Women of Hyderabad! We hope that you enjoy reading, and don't forget to write to us with your suggestions and feedback at *newsletter@pkfoundation.org*!

Manisha Jain

Disclaimer: The views and opinions expressed in the articles are those of the authors. They do not reflect the opinions or views of the Foundation or its members.

SNAPSHOT OF THE MONTH

जब भरी धूप में बादल फूटकर कभी बरस ही पढ़ता है
भरी भीड़ में नेता उभर ही पढ़ता है
तो तुझे क्या दर्द किसीका
बस अपने ख़यालों की उचाइयों को
दिल की पुकार दे
कमर कस निशाना लगा
अपने ईरादों को अंजाम दे
नज़र अन्दाज़ कर वो जो नहीं तुझसे सहमत
देर सेवर होती है हर ऊंचे तख़्त की मरम्मत
तूने जो बोया है वो एक दिन रंग दिखाएगा
बिना भरे तो बादल भी ना बरस पाएगा

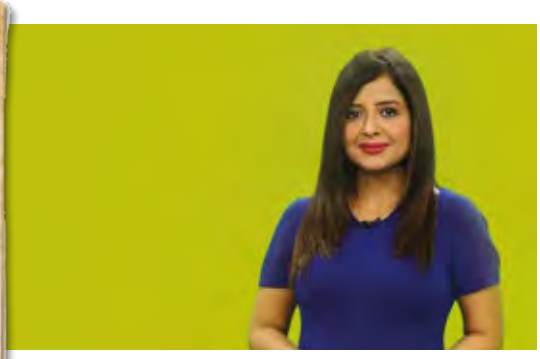

Nisha Poddar is an anchor and editor at CNBC-TV18, with several years of experience in broadcast journalism. Poddar's expertise lies in large corporate coverage as well as mergers & acquisitions. She has been a well-wisher of the Foundation for over 20 years.

Happy Birthday

Prabha WISHES **EHSAAS** WOMEN BORN IN OCTOBER

2nd October

Titikssha Shah

4th October

Vedula Ramalakshmi

9th October

Piali Ray

10th October

Sharmita Bhinder

12th October

Unnati Singh

12th October

Ruhi Walia Syal

13th October

Deepa Mishra

15th October

Sunita Shekhawat

20th October

Anvita Pradhan

22nd October

Pooja Poddar Marwah

25th October

Shefali Rawat Agarwal

26th October

Monica Bhagwagar

27th October

Shrishti Trivedi

30th October

Gouri Basu

शरद ऋतुः जब धरती खिलखिलाती है, आकाश बिहंसता है

शरद प्रकृति के पूर्णता की ऋतु है, धरती के इठलाने, इतराने और गूंजायमान रहने की ऋतु। ऐसी ऋतु, जिसमें धरती खिलखिलाती है, आकाश बिहंसता है और मन उत्सवों में डूब जाता है। हमारे देश को यह प्रकृति की देन है कि हमें शीत, वसंत, ग्रीष्म, वर्षा और शरद सभी मौसम मिलते हैं, पर मानव मन को प्रकृति से जोड़ने का जो आकर्षण शरद में है, वह किसी और में नहीं। यह पतझड़ की उदासी के बाद हरीतिमा का मौसम है, और इस लिहाज से उस उम्मीद का भी, जो अपने साथ उत्सवों का समूचा पिटारा लिए चलती है। यह यों ही नहीं है कि भारतीय काव्य–जगत के शीर्ष रचनाकारों ने खंजन नयन, कमल पुष्प, श्वेत वस्त्र, पकी बालियां, नुपुर ध्वनि जैसी अनगिनत उपमाओं से इसके सौंदर्य को मान दिया है। कालिदास हों, वाल्मीकि या तुलसीदास सबके मन में शरद अपनी धवल छवि के साथ उपस्थित है।

शरद ऋतु की विशेषता उसका नील धवल, स्फटिक–सा आकाश, अमृतवर्षिणी चांदनी और कमल–कुमुदिनियों भरे ताल–तड़ाग हैं। संपूर्ण धरती को श्वेत चादर में ढकने को आकुल कास–जवास के सफेद–सफेद ऊर्ध्वमुखी फूल शरद की विशिष्ट संपदा है। पावस मेघों के अथक प्रयासों से धुले साफ आसमान में विचरता चांद और उससे फूटती, धरती की ओर भागती निर्बाध, निष्कलंक चांदनी शरद का एकाधिकार है। आसमान इतना साफ किसी और ऋतु में शायद ही दिखता हो। शरद में वृष्टि थम जाती है। मौसम सुहावना हो जाता है। दिन सामान्य तो रात्रि गुनगुनी सर्द हो जाती है। यह मनोहारी और स्वास्थ्यपरक ऋतु है। यह प्रकृति की जीवंतता और मानव मन के उल्लास की ऋतु है। यह यों ही नहीं है कि हमारे उत्सवपरक लोक–जीवन के सर्वाधिक पर्व और उत्सव इसी एक ऋतु में आते हैं।

उत्सव, उमंग, स्वास्थ्य के साथ प्रकृति और मानव उमंग के मेल का जैसा तादात्म्य शरद ऋतु में भारत भूमि पर दिखाई देता है, वैसा किसी अन्यत्र देश या अन्य ऋतु में दिखाई नहीं देता। ध्यान से देखें तो हम पाते हैं कि श्रावण में देवाधिदेव आदिदेव शिव, भादो में गणपति, अश्विन में पितृ–पूर्वज पक्ष, तत्पश्चात शिल्पदेव विश्वकर्मा, फिर देवी आराधना, दुर्गा पूजा, विजयादशमी का यह क्रम दीपोत्सव तक आते–आते अपने शीर्ष पर होता है। मान्यता है कि देवासुर संग्राम में समुद्र मंथन के वक्त शरद पूर्णिमा को चंद्रमा, कार्तिक द्वादशी को कामधेनु, त्रयोदशी को धन्वंतरि, चतुर्दशी को काली माता और अमावस्या को भगवती महालक्ष्मी का सागर से प्रादुर्भाव हुआ। इसी ऋतु में चंद्रमा से जुड़ी परंपरा का उपवास–पर्व हरितालिका तीज, गणेश चतुर्थी, करवा चौथ और सूर्य आराधना का पर्व छठ भी आता है।

शरद की इन्हीं विशिष्टताओं, परंपराओं, उमंग, जीवनानुभवों और संस्मरण को प्रभा के इस अंक के लिए विशिष्ट लेखकों ने सहेजा है। प्रकृति और स्वास्थ्य का सम्मान हो, वह हम सबके अनुकूल हो, यही कामना।

शरद की मदिर गंध! छू लीजिए हरसिंगार को

प्रो. चंद्रकला त्रिपाठी

मेरे लिए जनवरी फरवरी मार्च वगैरह से पहले माघ फागुन चैत और वैशाख हुए। शरद, हेमंत, बसंत भी हुए क्योंकि घर में तिथियों और ऋतुओं से सब कुछ होता था। एकादशी, द्वादशी की शुक्ल पक्ष, कृष्ण पक्ष में हुई सिफत या परिवर्तन पर होती बातचीत सुनाई देती। कतिकी नहान यानी कार्तिक स्नान की सुरीली महिमा की तो बात ही क्या है। जीवन का शिल्प दो शैलियों में ढल रहा था। ननिहाल शहर बनारस के हृदय में स्थित थी तो ददिहाल हुई पड़ाव के पास बहादुरपुर नामक गांव में। दोनों जगह दो फ्लेवर हुए और दोनों ही बड़े प्रिय हुए। त्योहार भी शहर और गांव के होकर जैसे अदल-बदल कर मिला करते।

कभी सब फैला कर कहने को मिले शायद तब गांव में प्रकृत धज में खुले खिले जीवन को विस्तार से कह सकूंगी। वह स्मृति में है और स्मृति बहुत ललित है। खूब फैले हुए कई आंगनों वाले घर में इतना विस्तार था कि जैसे दुनिया का सब कुछ वहां बस चुका था। नंगे पैरों से दौड़ते। कांटा धंस उठता तो बैठ कर निकालते। हल्का सा रुधिर छलछलाता हुआ दिखता तो उस पर धूल लगा कर सरपट दौड़ पड़ते। यही औषधि थी वहां। धूल से ढके हुए खेलते। शरीर और मन को उस विस्तार में घूमती हवा आज़ादी में रच रही होती। गांव की ड्योढ़ी से लग कर बहती थी गंगा जो हमारी दाहिनी भुजा से दिशा पकड़ कलकत्ता अब का कोलकाता चली जा रही थीं। कलकत्ता के साथ जोड़ा पकड़ कर झुलनी का धक्का सुनते थे हम और कलकत्ते की ओर चमकती बहती गंगा को देखते रह जाते। बायीं तरफ राजघाट का पुल था। वह भी लोकगीतों में बस चुका था...

> उर्दू के लेखकों में एक बात है कि उनके अंदाज-ए-बयां में एक रवानगी है। बांग्ला के लेखकों में कथा की ही प्रधानता होती है। हिंदी के लेखकों में लफ्फाजी ज्यादा होती है। उनमें कथा से भाषा की चाशनी अधिक होती है। जिस बात के लिए वह बात लिखी जा रही वह सेकेंडरी हो जाती है

कहते हैं न कि बात निकलेगी तो फिर दूर तलक जाएगी....

तो देखिए कि कैसे फिसलती हुई बात कहां कहां जा रही है जबकि शरद ऋतु पर कुछ कहना है।

शरद कब सुना पहली बार!

बहुत सुंदर सी याद है यह। मन में रची बसी याद से मिलते रहते हैं अक्सर ही। आज इसे साझा करने का मौका मिला है तो वह सब कुछ और अधिक साकार हो उठा है। हमारे इस भूगोल की तो माया ही अलग है। हर ऋतु की सुंदरता में पृथ्वी रंग जाती है और जीवन भला क्यों न रंगे। इनसे बहुत जुड़ कर कलाएं समृद्ध हुईं। कविता की परंपरा में तो षट् ऋतु वर्णन की महिमा अपार है। मैथिलीशरण गुप्त जी को जब भावों की गहराई के साथ जीवन को लेकर चलना पड़ा तो प्रत्येक ऋतु के मानवीय विस्तार को रचने बैठ गए। प्रेम और विरह की ऐसी सुंदर परिपूर्णता व्यक्त हुई कि सब कुछ मनोरम हो उठा था। उनमें भी हल्के शीतल स्पर्श में सिहरती हुई सी पृथ्वी वाली यह शरद ऋतु! इसकी सुषमा का तो कहना ही क्या है। कौन भूल सकता है शरद पूर्णिमा की रात में श्रीकृष्ण संग गोपियों का वह महारास। पूर्णता में खिले चंद्रमा की फैली हुई चांदनी में वह मोहक नृत्य। वह पदक्षेप और कमनीय मुद्राएं राधा सहित गोपियों की। यह सब इसी ऋतु में क्यों कर हुआ भला? पूछना तो चाहिए।

आज जीवन शोर में और वस्तुओं से खचाखच भरते संसार में विघटित हो रहा है। ऐसी शरद ऋतु अपनी सुंदरता में महसूस की जाए ऐसा परिवेश खत्म हो रहा है। ग़लती तो हमारी भी है। हम प्रकृति की इस आभा को और ऋतुओं में धीरे-धीरे रुप लेते मौसम के इस रंग को कहां महसूस करने के लिए ठिठकते हैं। कहां जानना चाहते हैं कि कला में साहित्य में और संस्कृति में इसके महत्त्व को कैसे- कैसे कहा गया है। क्यों ऐसे मिथक चले आते हैं जो कहते हैं सृष्टि के आरंभ की यही ऋतु है। यह उर्वर है, पूर्ण है और कमनीय है। यह मानवीय इसलिए है कि आकाश धरा और सागर तीनों में वह कंपन उतर आता है जिसके मूल में परस्पर निकटता का अलग ही रंग है। यह सब मिल जाएगा हमारी महान कविता में। पढ़ कर उस उन्मुक्तता पर अचरज होगा। यह अहसास होगा कि एक साथ कितना ऐंद्रिक और रूहानी है सब कुछ और यह हमारी परंपरा में है।

कहती चलूं कि पहली बार शरद ऋतु को शरद पूर्णिमा के साहचर्य से जाना। वह अनुभव इतना अनोखा था कि नए उपन्यास में जस का तस चला आया। ननिहाल वाले दुमंजिले में घर की ओस भींगी छत पर उतरा हुआ वह विशाल चंद्रमा भूलता नहीं है जो हमारी छत पर रखी खीर में अमृत टपकाने के लिए औंधा गया था जैसे।

हम उस रात खीर की निगरानी करते वहीं जमे थे। हमें उस निर्दोष चमकती चांदनी में सुई में धागा भी डालना था। कुल मिलाकर वह अमृत जीवन में वही टिक गया। कभी कम न हुआ। परिदृश्य बदलते रहे। शहर शहर बदलते रहे। गांव भी कई मिले और कई रंगों में यह ऋतु इसलिए मिली कि यह अपनी पवित्रता में बचपन में ही मिल चुकी थी। अपनी टोह लेती हूं तो दिखता है कि प्रकृति से मुझे बहुत प्यार है।

क्या कहूं-

कितने उद्धरण शरद ऋतु से चले आ रहे हैं। इस ऋतु में बदलते मन की, देह की बातें तो हैं ही पेड़ पालो और पखेरुओं को भी यह लगती है। इसके पुष्पों की मदिर गंध देखना है तो छू लीजिए हरसिंगार को। देखिए उसका कोमल और धवल। स्वाद में पहचानिए न शरद को। कैसे पलटती है जिह्वा चटक की ओर। क्या रहस्य है पूछिए। आंवले का गुन बढ़ जाता है, ज़रुरत भी बढ़ जाती है। ज्योतिष में वैद्यक में इसकी तफसीलें कितनी व्यापक हैं। मनुष्य की रचना में मौजूद सूक्ष्मतम को प्रभावित करने वाली इस शरद ऋतु को सबने अमरता से जोड़ दिया। सौ शरद जी लेना ही क्यों कर भला जीना है? पूछना तो चाहिए न!

अज्ञेय कविता में यथार्थ वाद की राह चले मगर शरद ऋतु उनसे छूट नहीं पाई। कतिकी पूनो की रात लिखा उन्होंने।

और लिखा-

'या शरद के भोर की नीहार न्हाई कुई टटकी कली चंपे की'
शरद ऋतु यही है
भींगी हुई,नरम, मदिर और टटकी।

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के महिला महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्य **प्रोफेसर चंद्रकला त्रिपाठी** हिंदी की चर्चित कवयित्री और कथाकार हैं।

तुम जहां हो वहीं हैं शरद के ये बोलते से दिन

डॉ. ओम निश्चल

बसंत भले चार दिन का होता हो पर उसका स्वागत उल्लास के साथ होता है। *फागुन दुइ रे दिना* कहने वाले लोग भी बसंत की पलक पांवड़े बिछा कर प्रतीक्षा करते हैं जबकि वह यों आया और वह गया। इसी तरह वर्षा ऋतु भी न केवल कवियों के लिए बल्कि इस महादेश के शस्य जीवी किसानों के लिए भी सौगात लेकर आती है। तभी तो कवि मेघों से मनुहार करता है:

धान उगेंगे कि प्रान उगेंगे,
उगेंगे हमारे खेत में
आना जी बादल जरूर।

यह मनुहारों का मौसम है, त्योहारों का मौसम है, पाहुन का मौसम है। किन्तु बारिश से ऊभ चूभ करती धरती पर मंद मंद समीर की सिहरन जब उतरने लगती है, गुलाबी ठंड की अनुभूति होने लगती है, रात गहराते ही लगता है हल्की चादर ओढ़ कर सो जाएं तो समझ लें कि शरद देहरी पर आ पहुंचा है। बारिश के बाद कीचड़, मच्छर–मक्खी के अलावा मौसम में तब्दीली के कारण शरीर में भी कुछ परिवर्तन होने लगते हैं। लेकिन शरद का मौसम बारिश की किचकिच को धो पोछ कर सुहावना बना देता है और देह और मन को कल्पना के हिंडोले में झुलाने–सा लगता है।

> **शरद का यह समुज्ज्वल चंद्रहास जब मल्लिका की डालों में, मालती की क्यारियों में, फूली फुलवारी में पड़ता है तो सौगुनी शोभा बढ़ जाती है। शरद की सोर सुगंधित द्रव्य उड़ेलने वाली है। रत्नाकर ने यहां तक कल्पना की है कि स्वच्छ सुषमा से पूर्ण प्रभा को देखकर लगता है सुंदर सुधा के फुहारे फूट पड़े हैं**

शरद के दिनों की अपेक्षा शरद की रातों के बड़े गुन गाए गए हैं। उस पर भी निरभ्र आकाश में शरद की पूर्णमासी हो तो चांद का नज़ारा देखते ही बनता है। कवियों ने चांदनी की प्रशंसा में कितने ही गीत गाए हैं। किसी कवि ने कहा भी है: *तुम जहां हो वहीं है शरद पूर्णिमा।* यानी शरद की पूनो की रात सुंदरता का जैसे मानक है। आज जब चंद्रमा का भेद खुल चुका है कि वह भी पृथ्वी की तरह एक उप–नक्षत्र है जहां अभी जीवन की संभावनाओं की खोज हो रही है। पर चांद धरती से इतना हसीन लगता है कि शरद की चांदनी के उन्माद में आज भी कवियों की कल्पना थमती नहीं हैं।

तुलसीदास जी के रामचरितमानस में राम लक्ष्मण से कहते हैं, देखो लक्ष्मण, शरद ऋतु की आभा कैसी सुहावनी हो उठी है। कास के फूल खिल उठे हैं। वर्षा बिगत सरद ऋतु आई। *लछिमन देखहु परम सुहाई।* ब्रज साहित्य में भी शरद की महिमा कवियों ने बहुत ही बखानी है। वह कुंज, वह चांदनी, वह बांसुरी, वह कृष्ण की टेर...गोपियां रुकें, तो रुकें कैसे। मन को विह्वल कर देने वाला समां जो होता है। मन यह कहने को आतुर हो उठता है, *'तीर पर कैसे रुकूं मैं आज लहरों का निमंत्रण।'* गोया शरद की पूरी की पूरी ऋतु जैसे चंद्रमा के उजास की ऋतु बन जाती है। आश्विन और कार्तिक के मध्य का यह मौसम जैसे मन को न्योता देता जान पड़ता है। यह उजास जिसके पीछे चांद और चांदनी की महिमा है, इसे ब्रज के ग्वाल कवि ने क्या खूब पहचाना है–

मोरन के सोरन की नैंकौन मरोर रही
घोर हू रही न, घन घने या फरद की।
अंबर अमल, सर–सरिता विमल, मल–
पंक कौ न अंक, औ न उड़नि गरद की।

शरद का यह समुज्ज्वल चंद्रहास जब मल्लिका की डालों में, मालती की क्यारियों में, फूली फुलवारी में पड़ता है तो सौगुनी शोभा बढ़ जाती है। शरद की सोर सुगंधित द्रव्य उड़ेलने वाली है। रत्नाकर ने यहां तक कल्पना की है कि स्वच्छ सुषमा से पूर्ण प्रभा को देखकर लगता है सुंदर सुधा के फुहारे फूट पड़े हैं। ब्रज मंडल के अनेक कवियों केसवदास, गिरिधरदास, श्री विट्ठल गिरधरन, हरिदास, दास सखी, श्रीभट, कृष्ण दास, गदाधर, हरीचंद, सेनापति, नंदराम, सेवक, पदमाकर, देव,रसिक बिहारी, बोधा, घनआनंद, दिवाकर आदि ने शरद का भांति भांति से बखान किया है। ऐसा ही एक कवि

पदमाकर है जिसमें वे कहते हैं कि शरद की जुन्हाई जब कृष्ण के मुकुट पर पड़ती है तो क्या ही न्यारी शोभा देखते बनती है:

तालन पै, ताल पै, तमालन पै, मालन पै,
वृंदावन–बीथिन बिहार बंसीवट पै।
कहै पदमाकर अखंड रास– मंडल पै
मंडित उमंड महा कालिंदी के तट पै।।

आधुनिक कविता में भी शरद का बखान ऐसे ही अनूठे ढंग से किया गया है। शरद की चांदनी पर अज्ञेय लिखते हैं:

साँझ! सूने नील में दोले है कोजागरी का दिया
हार का प्रतीक– दिया सो दिया, भुला दिया जो किया!
किन्तु शरद चाँदनी का साक्ष्य, यह संकेत जय का है
प्यार जो किया सो जिया, धधक रहा है हिया, पिया!

यही नहीं, वे यह भी कहते हैं:

शरद चांदनी बरसी
अँजुरी भर कर पी लो!

केदारनाथ अग्रवाल को भी शरद के दिन विह्वल कर जाते हैं:

दिवस शरद के पास बुलाते
मेरे सपने में रस पीने की
प्यास जगाते !

हो न हो *'चांदनी और चूनर'* उपन्यास लिखने वाले गिरधर गोपाल ने यह गीत शरद की चांदनी को लक्ष्य कर ही लिखा हो– 'आजकल तमाम रात चांदनी जगाती है।' हेमंती भोर को तो वह जादू की पुड़िया कह कर टाल देते हैं पर शरद की रातों के आगे विवश हो जाते हैं। कुंवर नारायण को भी चांदनी मीठी मीठी सी लगती है। तभी तो कहते हैं–

रात मीठी चांदनी है । मौन की चादर तनी है।

अज्ञेय, नरेश मेहता, धर्मवीर भारती और बच्चन जैसे कवि प्रकृति से दूर न थे। वे इसकी छाया में पले पुसे थे। रामदरश मिश्र के यहां भी शरद की आभा अलग ही है। 'मेरी गीत यात्रा' में वे रचते हैं–

सागर से छोर दूरियों ने सब खींच लिए
मेहों से हम तुमने नयन बहुत सींच लिए
आओ अब रहें पास पास, शरद आई
जाये ऋतु लौट ना उदास, शरद आई।

सोम ठाकुर ने भी शायद शरद की रात को लक्ष्य कर ही लिखा होगा– *इस निरभ्रा चांदनी में / आज फिर गुंथ जाए तेरी चाह मेरी चाह।*

> **कहने को शरद के दिन सभी के लिए मनभावन होते हैं । पर ऐसा नहीं है। यह किसी के लिए मिलन की ऋतु है तो किसी के लिए विरह की भी। बल्कि शरद के दिनों में विरह ज्यादा सताता है। पर यह तय है कि शरद ऋतु बहुत सुहावनी होती है, दिन पतंग से उड़ते मालूम होते हैं तो रातें मधुर कल्पनाओं में भीगी**

कहने को शरद के दिन सभी के लिए मनभावन होते हैं । पर ऐसा नहीं है। यह किसी के लिए मिलन की ऋतु है तो किसी के लिए विरह की भी। बल्कि शरद के दिनों में विरह ज्यादा सताता है। पर यह तय है कि शरद ऋतु बहुत सुहावनी होती है, दिन पतंग से उड़ते मालूम होते हैं तो रातें मधुर कल्पनाओं में भीगी। शरद पर लिखते हुए मुझे अचानक अपना ही एक गीत *'याद कोलकाता की सांझ शारदीया'* याद हो आया है:

चंचल हुगली भरती
प्राणों में प्राण नए
झरते मन की टहनी से हरसिंगार नए
सारी रौनक जैसे घाट–घाट पसरी है
सुख की बाहों में ज्यों सोयी सुर–लहरी है
दिखता है जीवन–जल
बहता कलकल–छलछल
मस्ती में दिखती है, पग कोमल धरती है
कोयल–सी कुहुक भरे सांझ शारदीया ।

कोलकाता प्रवास में प्रभाकर श्रोत्रिय ने भी कोलकाता की ऐसी ही एक मनोहारी सांझ का रेखाचित्र उकेर दिया था, जो शरद और कोलकाता दोनों के प्रति उनके प्रेम का इज़हार है। कवियों की कल्पना के उजास में 'शरद' जैसे पूर्णिमा के चांद–सा खिलखिलाता है । ऐसे में कौन भला शरद से मैत्री न करना चाहे। आखिर अज्ञेय तभी तो शरद को अंजुरी में भर कर पी लेने का आह्वान करते हैं। अज्ञेय की कविता पढ़ रहा हूं और मेरे भीतर लखनऊ के कवि विष्णु कुमार त्रिपाठी 'राकेश' की कविता लहर उठी है :

चंद्रमा में तुम
कि तुममें चंद्रमा है
या कि निशि के छवि–वलय में हिम जमा है।

डॉ. ओम निश्चल हिंदी के सुपरिचित कवि–गीतकार, समीक्षक और भाषाविद हैं। आपकी एक दर्जन से अधिक कृतियां प्रकाशित हैं।

संस्मरणः पूजा से पूजो तक का सफर

डॉ. सच्चिदानंद जोशी

बंगाली बाला से शादी के चौंतीस साल बाद इस साल एशियाड विलेज की पूजो कमेटी ने हमें सरबोजनीन पूजा एसोसिएशन का अध्यक्ष बना दिया। हमें आश्चर्य भी हुआ और इस बात पर शर्म भी आ रही थी कि इतने साल में ठीक से बांग्ला भी बोलना नहीं आया, किस अधिकार से ये दायित्व सम्हालें। मालविका जी ने इतने फर्राटे से मराठी सीख ली थी कि उसके बाद घर में और किसी द्वि-भाषी, त्रि-भाषी फार्मूले की जरूरत ही नहीं पड़ी।

बहरहाल जिम्मेदारी मिली तो उसे निभाना जरूरी था। वैसे इस बात का अहसास बहुत जल्दी हो गया कि ऐसे आयोजनों में अध्यक्ष बनना बैलगाड़ी के नीचे चलने वाले श्वान की तरह ही है, जिसे ये भ्रम रहता है कि बैलगाड़ी वह चला रहा है। पूजा तो मां दुर्गा और उनका इस धरा पर अवतार धरने वाली देवियों के प्रताप से ऑटो मोड में संपन्न हो ही जाती है, फिर चाहे कमिटी का अध्यक्ष कोई भी हो।

> "ऐसे आयोजनों में अध्यक्ष बनना बैलगाड़ी के नीचे चलने वाले श्वान की तरह ही है, जिसे ये भ्रम रहता है कि बैलगाड़ी वह चला रहा है। पूजा तो मां दुर्गा और उनका इस धरा पर अवतार धरने वाली देवियों के प्रताप से ऑटो मोड में संपन्न हो ही जाती है, फिर चाहे कमिटी का अध्यक्ष कोई भी हो"

पूजा शुरू होने की पूर्व संध्या पर जब पंडाल का मुआयना करने पहुंचे तो पाया कि कमिटी के कुछ सदस्य पंडाल की तारीफ कर रहे हैं। मन को अच्छा लगा क्योंकि पंडाल के डिजाइन में थोड़ा बहुत योगदान दिया था। लेकिन यह खुशी ज्यादा देर टिक नहीं पाई। क्योंकि जब सब अच्छा अच्छा कह रहे थे तभी पीछे से एक कड़क आवाज आई, "कि भालो भालो। किछु भालो नाई। फायर अरेंजमेंट कोथाय?"

हम सब एकदम चुप हो गए। ये हमारे वरिष्ठ सदस्य दादा गांगुली की आवाज थी। मन में आया कि कहूं "दादा थोड़ी देर तो खुश हो लेने दो। और ये कैसी रीति है, अभी पंडाल लगा भी नहीं है और आपने फायर की बात कर दी।" लेकिन दादा गांगुली का रोबदाब इतना था कि उनके आगे कोई कुछ कह नहीं पाया। कहता भी कैसे, उनकी तो रनिंग कमेंट्री चालू थी। "इतना नेगलिजेंस ठीक नहीं। कुछ भी हो सकता है। You must have full arrangements। मैं फायर इंडस्ट्री में रहा हूं। आमी जानी सबई।"

हमारी अनुभवी सेक्रेटरी महोदया उन्हें समझा रही थीं, "होई जाबे दादा, सब किछु होई जाबे।" लेकिन दादा अपने प्वाइंट पर अड़े थे, "किछु होबे ना। Last year also we did not make proper arrangements." । अब उनमें और सेक्रेटरी महोदया में थोड़ी देर ऊंचे स्वर में वार्तालाप हुआ। दूर से देखने या सुनने वालों को वह झगड़ा लग सकता था, लेकिन था नहीं क्योंकि थोड़ी देर बाद दोनों एक दूसरे को न जाने किस बात पर "भालो खूब भालो" के कॉम्प्लीमेंट्स दे रहे थे। पहली बार कमेटी में लिखे शब्द 'सरबोजनीन' शब्द का मतलब समझ में आ रहा था।

दादा की बात में दम था और हमारी सेक्रेटरी महोदया दमदार थीं। उन्होंने पहले से ही फायर वालों को बोल कर रखा था। दूसरे दिन पूजा शुरू होने के पहले दो तीन फायर एक्सटिंगशर लिए हुए और 'फायर' लिखी वर्दी पहने एक मूंछधारी बुजुर्ग पंडाल में हाजिर थे। पंडाल में घुसते ही उन्होंने हमें कड़क नमस्कार किया। सिर्फ हमें ही नहीं, वे प्रत्येक आने वाले को कड़क नमस्कार कर स्वागत कर रहे थे।

जैसे-जैसे पूजा अपने शबाब पर आने लगी देखा फायर वाले सज्जन की सहभागिता भी पूजा में बढ़ रही थी। वे बच्चों को अनुशासित करने का काम करते, पंडाल में आने वाले दर्शनार्थियों को मार्गदर्शित करते उनकी लाइन लगवाते, और तो और पूजा की अन्य व्यवस्था में हाथ बंटाते।

साज–सामान की देखभाल, पंडाल की कुर्सियों को ठीक से जमवाने की व्यवस्था और देर से आने वाले दर्शनार्थियों को प्रसाद वितरण जैसे काम भी उन्होंने अपने आप ले लिए थे। शाम को सांस्कृतिक कार्यक्रम के समय बच्चों को चुप कराना, उनके जूते–चप्पल करीने से रखवाना, उन्हें ताली बजाने के लिए प्रोत्साहित करना जैसे अन्य काम भी वे बड़े मनोयोग से करते। कुछ समय बाद तो ये अहसास होने लगा कि ये फायर कर्मचारी नहीं, पूजा कमेटी के ही एक स्वयंसेवक हैं। कुछ लोग तो उन्हें अन्य 'दादाओं' की जमात में शामिल कर बाकायदा 'फायर दादा' के नाम से पुकारने लगे थे।

पूजा के तीन दिन धमाचौकड़ी में कैसे बीते, पता नहीं चला। बिजोया के दिन सुबह देवी विसर्जन के समय उन फायर वाले सज्जन से बात करने का मौका मिला। बात करने पर मालूम हुआ कि वे हरदोई निवासी हैं और फायर का काम करने वाले ठेकेदार के बुलाने पर आ जाते हैं। "जहां साइट होती है, वहां जाना होता है। इसके बाद एक क्राफ्ट मेले में जाना है छः दिन। फिर चले जायेंगे घर।"

"उसके बाद," मैंने कौतूहलवश पूछ लिया।

"उसके बाद जब ठेकेदार बुलाएगा, तब फिर चले आयेंगे।" मेरे मन में प्रश्न था कि ऐसे में उनका घर कैसे चलता होगा। मेरे मन का प्रश्न भांप कर वे बोले "सब ऊपर वाला देख लेता है। चार बेटियां हैं, सबकी शादी कर दी। सब अपने घर सुखी हैं। जमीन थी, पुरखों की। हर शादी में थोड़ी थोड़ी चली गई। अभी इतनी बची है कि साल भर का अनाज निकल आता है। हम जब भी बाहर निकलते हैं ऊपर वाला खाने का इंतजाम कर देता है। हमने कह रखा है घर पर कि हमारे हिस्से का खाना जरूरतमंद को खिला देना।"

"आप हमारे साथ इतने अच्छे से घुलमिल गए कि लगा ही नहीं कि आप बाहर से आए हैं।" मैंने कहा तो वे बोले "हमारा काम ऐसा है साहब, जिसकी जरूरत न ही पड़े तो अच्छा है। हम तो हर जगह यही विनती करते हैं कि भगवान हमारी जरूरत ही न पड़े। खाली बैठने से अच्छा है लोगों से घुलें–मिलें, आपके काम में हाथ बटाएं। कोई गलती हो गई हो तो माफी कर देना साहब।"

"अरे गलती कैसी। हम सब तो आपको अपना ही मानने लगे हैं।"

देवी विसर्जन के पहले आखिरी बार अंजली देते समय वे मेरे पास खड़े थे। बंगाली पंडित के उच्चारित शब्दों को वे सबके साथ बड़े मनोयोग से दोहरा रहे थे। देवी प्रतिमा की ओर फूल अर्पित करते समय देखा, उनकी आंखें भीगी हुई थीं। जैसे ही उनसे नजर मिली, उन्होंने अपनी आंख पोंछ ली और चिरपरिचित मुस्कान लाकर बोले "कितना भी मन को मना करें, थोड़ा मोह तो हो ही जाता है।"

शाम को बिजोया मिलन का कार्यक्रम था। सब बिजोया मिलन में व्यस्त थे और आपस में खुशियां बांट रहे थे। पंडाल सूना हो गया था। टेंट वाले अपना सामान ले जाने में लगे थे। सारी लाइटें उतार चुकी थीं। सड़क की रोशनी में देखा, फायर दादा पंडाल के एक कोने में अपने एक्सटिंगुशर के साथ बैठे हैं। वे अपनी ड्रेस में नहीं थे इसलिए पहचानने में थोड़ी देर हुई।

"शाम को बिजोया मिलन का कार्यक्रम था। सब बिजोया मिलन में व्यस्त थे और आपस में खुशियां बांट रहे थे। पंडाल सूना हो गया था। टेंट वाले अपना सामान ले जाने में लगे थे। सारी लाइटें उतार चुकी थीं। सड़क की रोशनी में देखा, फायर दादा पंडाल के एक कोने में अपने एक्सटिंगुशर के साथ बैठे हैं"

"अरे दादा, आप यहां अकेले कैसे बैठे हैं ?"

"गाड़ी का इंतजार कर रहा हूं। ठेकेदार ने कहा है साढ़े सात तक भेजेगा।"

मैंने सामान्य शिष्टाचारवश उनसे कह दिया "दादा, अपना नंबर दे देना और किसी समय आपको याद करेंगे।"

"हमारा नंबर आपके पास न रहे तो अच्छा है। मतलब भगवान न करे आपको कभी हमारी जरूरत पड़े। और फिर अगले साल तो मिलेंगे ही पूजा में।" दादा ने कहा और उनकी घनी मूछों में मुस्कुराहट तैर गई।

फायर दादा से और बात करता लेकिन तभी एक कड़क आवाज सुनाई दी "प्रेसिडेंट कोथाय। आज के खाबार देवे कि नाई ?" आवाज वही थी गांगुली दादा की जिन्होंने पहले दिन डांट लगाई थी लेकिन इस बार डांट नहीं प्यार था उनकी आवाज में। इस प्यार ने इस बात का प्रमाण दे दिया कि शादी के चौंतीस साल बाद ही सही इस मराठी भाऊ को बंगाली दामाद के रूप में मान्यता मिल ही गई। यानी पूजा से पूजो तक का सफर ठीक ही हो गया है।

रंगमंच, टेलीविजन तथा साहित्य के क्षेत्र में सक्रिय **डॉ. सच्चिदानंद जोशी** वर्तमान में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सदस्य सचिव हैं।

लोक, संस्कृति, मानस, परंपरा और उत्सव में शरद

सुजाता शिवेन

आसमान इन दिनों नीला है और मन भी उत्सवों, पर्वों से लबरेज। बादल जी–भर परिश्रम करने के बाद थके पांव लौट चुके हैं। इनके काले–स्याह, धूसर फाहे अब आसमान पर नहीं हैं। बरखा की बूंदों के साथ शायद धरती की हरीतिमा के साथ ही आसमान भी नहा–धोकर, साफ, खुला, नीला, स्फटिक सा चमकीला हो चुका है। सरोवर किनारे कांस फूल के चंवर डुलाने लगे हैं। शिउली फूलों का नारंगी–सफेद गलीचा बिछ चुका है। मन हुलास भर कर कहने लगा है, लो शरद आ गया।

वर्षा के जाने और ठंड के आने के इस संधिकाल की ऋतु 'शरद' बहुत सुहावनी, मनभावन होती है। दिन–रात का तापमान लगभग एक समान हो जाता है। आलस्य के स्थान पर शरीर में चुस्ती–फुर्ती और का उत्साह बढ़ जाता है। मन खिल सा उठता है, शामें अलसाई सी होती हैं, पर दिन और मौसम का तो कहना ही क्या। फल और सब्जियों की बहार सी आ जाती है। इस मौसम की महिमा को लेकर महर्षि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास ने भी क्या कुछ नहीं लिखा है। *रामचरित मानस* में विस्तार से शरद की महिमा का बखान करते हुए गोसाईं जी लिखते हैं–

बरषा बिगत सरद ऋतु आई। लछिमन देखहु परम सुहाई।

फूलें कास सकल महि छाई। जनु बरषां कृत प्रगट बुढ़ाई।

> **शरद ऋतु में राजा, तपस्वी, व्यापारी और भिखारी क्रमशः विजय, तप, व्यापार और भिक्षा के लिए हर्षित होकर नगर छोड़कर निकल रहे हैं। जो मछलियां अथाह जल में हैं, वे सुखी हैं। कमलों के फूलने से तालाब कैसी शोभा दे रहा है, जैसे निर्गुण ब्रह्म सगुण होने पर शोभित होता है**

अर्थात हे लक्ष्मण! देखो, वर्षा बीत गई और परम सुंदर शरद् ऋतु आ गई। फूले हुए कास से सारी पृथ्वी छा गई। मानो कास रूपी इन सफेद फूलों के साथ बरसा ने अपना बुढ़ापा प्रकट किया है। इस मौसम की महिमा के बारे में वे जो दोहे लिखते हैं, उनका अर्थ अपने आप इस मौसम की महत्ता को बताता है।

अगस्त्य तारे ने उदित होकर मार्ग के जल को सोख लिया, जैसे संतोष लोभ को सोख लेता है। नदियों और तालाबों का निर्मल जल ऐसी शोभा पा रहा है जैसे मद और मोह से रहित संतों का हृदय! नदी और तालाबों का जल धीरे–धीरे सूख रहा है। जैसे ज्ञानी पुरुष ममता का त्याग करते हैं। शरद ऋतु जानकर खंजन पक्षी आ गए हैं, जैसे समय पाकर सुंदर सुकृत आ सकते हैं। न कीचड़ है न धूल? इससे धरती निर्मल होकर ऐसी शोभा दे रही है जैसे नीति–निपुण राजा की करनी!

जल के कम हो जाने से मछलियां व्याकुल हो रही हैं, जैसे विवेक शून्य गृहस्थ धन के बिना व्याकुल होता है। बिना बादलों का निर्मल आकाश ऐसे शोभित हो रहा है जैसे भगवद्भक्त सब आशाओं को छोड़कर सुशोभित होते हैं। विरले ही स्थानों में शरद ऋतु की थोड़ी–थोड़ी वर्षा हो रही है। जैसे कोई विरले ही मेरी भक्ति पाते हैं। शरद ऋतु में राजा, तपस्वी, व्यापारी और भिखारी क्रमशः विजय, तप, व्यापार और भिक्षा के लिए हर्षित होकर नगर छोड़कर निकल रहे हैं। जो मछलियां अथाह जल में हैं, वे सुखी हैं। कमलों के फूलने से तालाब कैसी शोभा दे रहा है, जैसे निर्गुण ब्रह्म सगुण होने पर शोभित होता है।

भौंरे अनुपम शब्द करते हुए धरातल को गूंजायमान कर रहे हैं तथा पक्षियों के नाना प्रकार के सुंदर शब्द हो रहे हैं। रात्रि देखकर चकवे के मन में वैसे ही दुःख हो रहा है, जैसे दूसरे की संपत्ति देखकर दुष्ट को होता है। पपीहा रट लगाए है, उसको बड़ी प्यास है, जैसे श्री शंकरजी का द्रोही सुख नहीं पाता और सुख के लिए झीखता रहता है। शरद ऋतु के ताप को रात के समय चंद्रमा हर लेता है, जैसे संतों के दर्शन से पाप दूर हो जाते हैं। चकोरों का समुदाय चंद्रमा को देखकर टकटकी लगाए रहता है।

आधुनिकता में हमारी ऋतुएं चाहे जितनी भी बदलती दिखें, पर भारतीय संस्कृति और लोकजीवन में शरद पूर्णिमा के दिन से शुरू होती है शरद ऋतु। इस रात पूर्णिमा का चांद अपनी सभी सोलह कलाओं के साथ पूरे शबाब पर होता है। माना यह जाता है कि इस दिन चंद्रमा की किरणों से अमृत की बरसात होती है। इस दिन रात भर चांदनी में रखी खीर को सुबह खाने पर धन, प्रेम, स्वास्थ्य के क्षेत्र में लाभ की प्राप्ति होती है। शरद ऋतु त्योहारों की डोलची सौगात के रूप में लाता है। मान्यता है कि शरद

पूर्णिमा के दिन माता लक्ष्मी का जन्म हुआ था। ऐसी भी मान्यता है कि इस दिन लक्ष्मी धरती पर अवतरण करती हैं और देखती हैं कि कौन उजागर है। *जो सोया वह खोया* की तर्ज पर लक्ष्मी माता उजागर व्यक्ति पर धन की वर्षा करती हैं। देश के कुछ हिस्सों में इस दिन लक्ष्मी माता की पूजा की जाती है, जिसे कोजागौरी लक्ष्मी पूजा कहा जाता है।

मान्यता यह भी है कि शरद पूर्णिमा के दिन भगवान शिव और माता पार्वती के पुत्र कुमार कार्तिकेय का जन्म हुआ था। इसी कारण से इसे कुमार पूर्णिमा भी कहा जाता है। ओड़िशा में ऐसी मान्यता है कि कुआंरी लड़कियां इस दिन यानी कुमार पूर्णिमा के दिन व्रत रखकर चंद्रमा की पूजा करें तो उन्हें कार्तिकेय जैसा सुंदर वर मिलेगा। पर इस दिन कार्तिकेय की पूजा अर्चना नहीं की जाती, इस दिन सूर्य और चंद्रमा की पूजा की जाती है।

इस दिन सुबह उठकर कुंआरी लड़कियां नहा-धोकर नये वस्त्र पहनकर सात तरह के फल लेकर तुलसी चौरा के पास एक पीढ़े पर रखती हैं। पानी में हल्दी डालकर सात बार अंजुरी भरकर सूर्य को अर्घ्य देती हैं। शाम को तुलसी चौरा को फूल, खासकर कमल का फूल से सजाया जाता है, क्योंकि चंद्र के उदय होने से कमल खिलता है।

सुंदर रंग-बिरंगे रंगों से तुलसी चौरा को सजाया जाता है। चौरा के सामने सुपारी, दूब, कमल के फूल, बैर का पत्ता रखा जाता है। पानी से भरे कलश को आम के पत्ते, सिंदूर, सुपारी, चंदन आदि से सजाया जाता है। लाई, नारियल, केला, छेना, दही, दूध, खीरा, ताल, मधु, अदरक,घी, गन्ना, अंकूरित मूंग, सेव, चीनी को अच्छे से मसल कर प्रसाद बनाया जाता है और इसे चांद का आकार बनाकर थाली में सजाया जाता है। इस दिन प्रसाद के लिये खास तरह का मंडा पिठा भी बनाया जाता है। पूजा खत्म होने के बाद इसी भोग को खाकर कुंआरी लड़कियां अपने दिन भर के व्रत को तोड़ती हैं।

इस दिन लक्ष्मी का पूजन करते हुए रात उजागर रहा जाता है। लड़कियां जहां नाच, गीत में व्यस्त और मस्त रहती हैं, वहीं लड़के जुआ, चौसर खेलकर अपना समय बिताते हैं। यही मान्यता है कि जाग्रत लोगों पर लक्ष्मी अपनी कृपा की बरसात करती हैं। यूं तो जुआ खेल का परिणाम कई बार भयानक होता है, पर मान्यता है कि शरद पूर्णिमा के दिन खेला जाने वाला यह खेल मनोरंजन के साथ एक सांकेतिक अर्थ लिए होता है।

यह दुनिया अपने आपमें एक जुआ है, इस में कभी किसी की जीत होती है तो किसी की हार। इस दुनिया में आये लोगों के जीवन में भी इसी तरह के उतार-चढ़ाव आते हैं। इस उत्थान पतन में संयम बरतकर अपने को संभाले रखना ही एक मनुष्य का कर्तव्य है... और लक्ष्मी माता तो चंचला हैं। कभी किसी को हंसाती हैं तो कभी रुलाती हैं। कभी किसी को राजमुकुट पहनाती हैं तो किसी को सड़क का भिखारी बना देती हैं।

"पर मान्यता है कि शरद पूर्णिमा के दिन खेला जाने वाला यह खेल मनोरंजन के साथ एक सांकेतिक अर्थ लिए होता है। यह दुनिया अपने आपमें एक जुआ है, इस में कभी किसी की जीत होती है तो किसी की हार। इस दुनिया में आये लोगों के जीवन में भी इसी तरह के उतार-चढ़ाव आते हैं। इस उत्थान पतन में संयम बरतकर अपने को संभाले रखना ही एक मनुष्य का कर्तव्य है"

इस परंपरा में एक लौकिक चेतावनी है कि ये वही माता लक्ष्मी हैं, जिन्होंने कभी श्री हरि अर्थात स्वयं भगवान विष्णु को भी तो दाने-दाने के लिये तरसा दिया था। इसलिए अगर माता लक्ष्मी को साधे रखना ही काम्य है, तो जीवन में सतत पथ पर, सच्चे मार्ग पर चलना होगा, श्रम करना होगा, हमेशा जगे रहना होगा। प्रकृति की संरक्षा करनी होगी, मौसम की गतिविधियों के संग कदमताल करना होगा, उसके संरक्षण और संकेतों को समझना होगा। वाकई आकाश, धरती, हवा और बादलों के इस सामंजस्य से ही तो जीवन है, और जीवन है, तभी तो इसमें शरद ऋतु भी है।

केंद्रीय हिंदी निदेशालय के गैर हिंदी भाषी लेखक पुरस्कार से सम्मानित
सुजाता शिवेन ओड़िया-हिंदी की स्थापित अनुवादक, कवयित्री हैं।

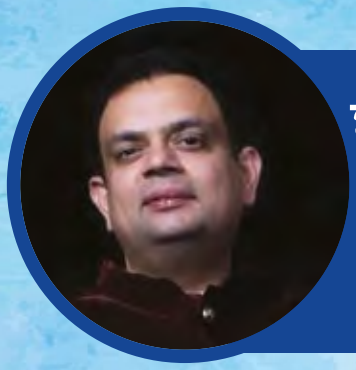

रामनाम संकीर्तन, शरद और अयोध्या की संगीत परम्परा: कुछ नॉट्स

यतीन्द्र मिश्र

अयोध्या की धार्मिकता में संस्कृति की जो पहचान पनपी है, उसमें यह देखना विशेष प्रासंगिक है कि तमाम प्रकार के संगीत का गढ़ रहा यह नगर, किस तरह रामनाम संकीर्तन की परम्परा को एक अन्तः धारा की तरह अपने भीतर समेटे हुए पिछली कई शताब्दियों से जी रहा है। निम्नांकित कुछ बिंदुओं के अंतर्गत अयोध्या में अन्तःसलिल इस प्रवृत्ति को देखना बेहद रोचक स्थापनाएं मुहैया कराता है। अयोध्या में अप्रतिहत भक्ति के साथ ली गयी सीताराम नाम की पुकार, भक्तों की उपासना पद्धति का एक अंग है, न कि देसी या मार्गी जैसी शास्त्रीय अवधारणाओं में रखे जाने का विषय।

यहां यह देखना भी गौरतलब है कि तमाम सारे रसिक भक्तों की परम्परा में गायी जाने वाली यह संकीर्तन पद्धति संगीत के आसरे अपनी नवधा भक्ति को स्पष्ट करती है। इस लिहाज़ से *'सीताराम'* नाम का उच्चार अथवा *'रामधुन'* बजाना, भक्ति के परिसर का अंग है, किसी शास्त्रीय विधा का प्रस्तुतीकरण नहीं। यह सीधे भजनानन्दियों से जुड़ा मामला है, जिसके मूल में आस्था पूरी गहराई से बैठी हुई है। इसलिए यह भी जरूरी है कि हम यहां उसका विवेचन करने के बजाय यह देखें कि कोई कलाकार, संत, भावक या साधारण व्यक्ति किसी मंदिर परिसर में बैठकर भजन सुनते हुए बरबस ही जो रामनाम ले रहा है, वह भक्ति का अंग है। मौसम और प्रकृति के साथ संगीत की इस लय की जुगलबंदी एक अलग तरह की सृष्टि सर्जती है, जिसमें आस्था, भक्ति, संस्कृति और संयोग सबकी तान सुनाई देती है।

> **"रामजन्म, झूलनोत्सव, शरद पूर्णिमा, देव दीपावली, राम-विवाह तथा होली आदि के मौके पर गाये जाने वाले तमाम सारे बधाई पद एवं मुबारकबादियों के बीच भी कहीं न कहीं ढेरों भक्त एवं गायकवृंद भी अकसर सीताराम नाम का कीर्तन करते रहते हैं। इसका सीधा सा अर्थ यही निकलता है कि जैसे यह कीर्तन परम्परा अयोध्या में भक्ति के लिये प्राणवायु सरीखी है"**

अयोध्या के बरक्स यदि हम मथुरा, वृन्दावन की गलियों से होकर गुजरें, तो वहां भी यही पायेंगे कि तमाम सारे कृष्ण मंदिरों में सिर्फ अष्टछाप की कविता या पदावलियां ही नहीं गायी जा रहीं, बल्कि वहां *'राधे-राधे'* या *'जय बाँके बिहारी लाल की'* या *'हाथी घोड़ा पालकी जय कन्हैया लाल की'* जैसे सस्वर नारे गूंजते सुनाई पड़ते हैं। अब अष्टछाप की कविता और उसके ध्रुपद शैली में पद गायन या बेहद मोहक ढंग का हवेली संगीत, इस तरह *'राधे-राधे'* संकीर्तन के रास्ते में नहीं आता। इस लिहाज़ से *'सीताराम'* नाम की अनवरत टेर या *'रामधुन गायन'* भक्ति का वही उन्मीलित स्वरूप प्रस्तुत करता है, जिस तरह वृन्दावन की गलियाँ राधा और कृष्ण के नाम जाप में संलग्न दिखती हैं। शायद इसी कारण *'रामनाम'* का गुंजार इस वैष्णव नगरी का एक धार्मिक स्वरूप ही कहीं न कहीं दर्शाता नज़र आता है।

अयोध्या के तमाम सारे रसिक उपासना के केंद्र बने हुए मंदिरों में ढेरों रसिक भक्तों की पदावलियों के गायन के साथ यह देखना भी आश्चर्य में डाल देता है कि वहां रामजन्म, झूलनोत्सव, शरद पूर्णिमा, देव दीपावली, राम-विवाह तथा होली आदि के मौके पर गाये जाने वाले तमाम सारे बधाई पद एवं मुबारकबादियों के बीच भी कहीं न कहीं ढेरों भक्त एवं गायकवृंद भी अकसर सीताराम नाम का कीर्तन करते रहते हैं। इसका सीधा सा अर्थ यही निकलता है कि जैसे यह कीर्तन परम्परा अयोध्या में भक्ति के लिये प्राणवायु सरीखी है। मठ-मंदिरों में विभिन्न पर्वों या अनुष्ठानों पर कलाकारों द्वारा बधाई गायन जितना अभीष्ट है, उतनी ही महत्ता रामनाम के कीर्तन की भी दिखाई पड़ती है। फिर वह भले ही रसिकों से सम्बन्धित ढेरों मंदिर हों अथवा विरक्तों एवं वैरागियों के स्थान। सभी जगह यह कीर्तन आसानी से कानों में पड़ता या गूंजता सुनाई देता है। और सबसे मनोहारी स्थिति तो तब बन जाती है, जब हम इसे बहुतेरे वाद्यों पर उत्कृष्ट कलाकारों द्वारा बेहद लय व सुर के साथ गूंजता हुआ सुनते हैं। हममें से अधिकांश लोगों में से जिन लोगों ने कनक-भवन, सद्गुरु-सदन, रंगमहल मंदिर, लक्ष्मण किला, बड़ा स्थान तथा हनुमानगढ़ी में आवाजाही की होगी, वे सभी इस तर्क से सहमत होंगे कि अकसर उनके कानों में बेहद मधुर ढंग से 'रामनाम' का कीर्तन पड़ता रहा है।

लक्ष्मण–किला परम्परा: पर्वों के अवसर पर गाये जाने वाले सांगीतिक पद

अयोध्या में रामभक्ति की रसिकोपासना धारा में लक्ष्मण–किला एक प्रमुख पीठ के रूप में समादृत है। लक्ष्मण–किला के संदर्भ में यह विचार–प्रवण तथ्य है कि रामचन्द्र के छोटे भाई लक्ष्मण जी का निवास स्थान लक्ष्मण–किला माना जाता है। यह अकेला ऐसा स्थान है, जिसमें सीताराम के विग्रह के साथ लक्ष्मण कुमार की मनोहारिणी मूर्ति भी, अर्चा में राम की तरह विशिष्टता पाती रही है। यह रसिकोपासना का प्रमुख गढ़ होने के साथ–साथ तमाम महत्त्वपूर्ण सन्तों, आराधकों और भक्तों का उपासना केन्द्र भी रहा है। इसे महान योगी तथा सन्त कवि श्री युगलानन्यशरण जी महाराज ने स्थापित किया था। युगलानन्यशरण जी इतने अनुभवी और ज्ञानी साधक थे कि उन्होंने उपासना के महत्त्व, लोकोत्तर उत्कर्ष तथा रसिक–भक्ति में तल्लीनता के लिये ढेरों ग्रन्थों की रचना की। उनके अब तक कुल 95 प्रामाणिक ग्रन्थ बताये जाते हैं, जिनमें से 75 ग्रन्थ आज भी लक्ष्मण–किला में संरक्षित हैं।

> संगीत से शरद और शरद से अयोध्या के झीने पर अत्यंत आध्यात्मिक–धार्मिक संबंधों को इस बात से भी समझा जा सकता है कि इस उत्सवी ऋतु का सबसे बड़ा पर्व 'दीपोत्सव' भगवान श्री राम, जानकी जी और भाई लक्ष्मण के चौदह वर्ष वनवास काटकर इस अप्रतिम नगरी में लौटने पर मनाया जाता है, जिसे स्वयं श्री राम ने वैकुंठ से भी प्रिय बताया था।

लक्ष्मण–किला से सम्बन्धित शाखाएं अयोध्या के अतिरिक्त चित्रकूट, मिथिला एवं जनकपुर आदि स्थानों में भी फैली हैं। युगलानन्यशरण जी के प्रमुख शिष्य श्री जानकीवरशरण जी के दर्शनों के लिए स्वामी विवेकानन्द भी पधारे थे, ऐसा विवेचन *'द लाइफ ऑफ स्वामी विवेकानन्द'* जैसे ग्रन्थ से हासिल होता है। किला में पर्वों एवं उत्सवों पर संगीत और नृत्य की बेहद समृद्ध धारा विगत डेढ़ सौ वर्षों से निभती रही है। उसका आरम्भ ही युगलानन्यशरण जी जैसे सन्तों के द्वारा रचे पदों के गायन से होता रहा है। आज यह बेहद गौरव की बात है कि मात्र लक्ष्मणकिला में ही नहीं, वरन अन्य रसिकोपासना के प्रमुख केन्द्रों एवं अयोध्या के बाहर भी युगलानन्यशरण जी महाराज के पद प्रचलित हैं, गाये–बजाये जाते हैं और अष्टयाम सेवा में प्रयुक्त होते हैं।

इस परम्परा में और अधिक उत्कर्ष तब आया जब सन् 1957 से किलाधीश के पद पर आसीन आचार्य स्वामी श्रीसीतारामशरण जी महाराज ने अपनी पूर्वज परम्परा के संतों–महंतों के पदों का संकलन करके व्यापक समाज में प्रचार–प्रसार के लिये प्रकाशित करवाया। यह पदावलियां आज भी किला से प्रकाशित और वितरित होती हैं। इनमें प्रमुख रूप से *'जन्मोत्सव बधाई पदावली'*, *'श्री वसंत विहार पदावली'*, *'श्री झूलन विहार पदावली'* तथा *'श्री मैथिली विवाह पदावली'* के नाम लिये जा सकते हैं।

यह जानना अयोध्या की रसिकोपासना के सन्दर्भ में बेहद महत्त्वपूर्ण है कि यहां की गायन परम्परा का अधिकांश हिस्सा युगलानन्यशरण जी महाराज तथा अन्यान्य भक्तों, वाग्गेयकारों के योगदान का ऋणी है। इन पदावलियों से गुजरते हुए हम पाते हैं कि राम की यह मधुर उपासना युगलानन्यशरण जी महाराज से लेकर युगलप्रिया, रसिकअली, सियाअली, रसमाला, प्रीतिलता, हेमलता, शीलमणि, बैजनाथ, रामवल्लभाशरण, जनहरिया, चारुशीला, हरिसहचरी, अग्रअली, चन्द्रकला, कृपानिवास, युगलविहारिणी, मधुपअली, रामशरण, कान्तिलता, शिवदयाल, मधुरअली, सुधामुखी, रसमालिका, रामसखे, रामचरण, कृपासखी, नवलप्रिया, बालअली तथा सियासखी जैसे तमाम श्रेष्ठ सन्तों–साधकों के द्वारा परम्परा में विद्यमान है। यह स्थिति लक्ष्मणकिला के सन्दर्भ में बेहद सम्मानजनक है कि वहां के आचार्यों ने इस परम्परा को अक्षुण्ण रखने के लिहाज़ से इस तरह की परिपाटी का प्रणयन करने के साथ–साथ उसका लोक–विस्तार भी किया।

अयोध्या का झूलनोत्सव संगीत: *हिंडोरे झूलत सिया–रघुवीर*

अयोध्या के सावन झूले में कनक भवन, हनुमानगढ़ी, जानकी महल, बड़ा स्थान, लक्ष्मणकिला तथा अयोध्या राजपरिवार के महल राजसदन परिसर में सजने वाली झाकियां और वहां पर होने वाला संगीत विशेष आकर्षण और चर्चा के केन्द्र में रहते हैं। सम–विषम तालों वाली शास्त्रीय गायकी, अनूठी बन्दिशों, ठुमरी, दादरा, खयाल, कजरी, मलार आदि में तथा भक्ति–पदों या भजनों में जहां जिस की जैसी रुचि होती है, वे अयोध्या के सावन झूले में वैसे स्थानों का पता लगा ही लेते हैं। कत्थकों के कार्यक्रम भी यहां बहुत प्रचलित हैं, यद्यपि अपने समय में इसके मिथक बन चुके ओंकार जी तथा कल्लू महाराज अब स्मृति शेष हो गये हैं।

अयोध्या में श्रावण के शुक्ल पक्ष की तीज के दिन से झूला प्रारम्भ होने की परम्परा है। इसका प्रारम्भ उस मणिपर्वत के मेले से होता है, जिसे 'रत्नाचल' भी कहा गया है। पारम्परिक मान्यता के अनुसार सभी मंदिरों से विग्रहों–स्वरूपों को लेकर रामभक्त मणिपर्वत पहुंचते हैं और वहां वृक्षों की डालों पर झूले डालकर अपने प्रिय आराध्य राम तथा उनकी प्राणप्रिया 'किशोरी जी' को खूब झुलाते तथा आनन्द विभोर होते हैं। वहां से लौटकर वे अपने–अपने मंदिर का झूलनोत्सव प्रारम्भ करते हैं। उस मेले के दिन पार्श्ववर्ती गांवों से स्त्रियां प्रायः यही गीत गाती हुई झुंड में चलती हैं– *'झूला पड़ा मनीपर्वत पर झूलें अवध बिहारी ना'*।

झूलनोत्सव के आनन्दमय आयोजन में दत्तचित्त रहने वाले रसिक संतों की मान्यता है कि इस पर्व की अवधारणा मोक्ष या उद्धार की कामना करने या उनके प्रति अपने क्लान्ति निवेदित करने में नहीं, अपितु परम प्रेमस्वरूप श्री सीताराम के आमोद–प्रमोद के आह्लादपूर्ण गायन एवं स्मरण में है। स्वामी अग्रदास, कृपानिवास, युगलानन्यशरण, रामसखे, रामचरण, युगलप्रिया, रसिकअली, मोदलता, हेमलता, रूपकला, श्यामसखे, प्रीतिकला, रसमाला, नवलप्रिया, रामवल्लभाशरण 'प्रेमलता' आदि झूलन–साहित्य के रचयिता संतों ने इसी भावभूमि से अनुप्राणित प्रचुर साहित्य रचा है। संगीत से शरद और शरद से अयोध्या के झीने पर अत्यंत आध्यात्मिक–धार्मिक संबंधों को इस बात से भी समझा जा सकता है कि इस उत्सवी ऋतु का सबसे बड़ा पर्व 'दीपोत्सव' भगवान श्री राम, जानकी जी और भाई लक्ष्मण के चौदह वर्ष वनवास काटकर इस अप्रतिम नगरी में लौटने पर मनाया जाता है, जिसे स्वयं श्री राम ने वैकुंठ से भी प्रिय बताया था। यह एक अच्छी बात है कि अयोध्या की वह प्राचीन परंपरा हर आने वाले वर्ष के साथ भव्य से भव्यतर होती जा रही है।

अयोध्या, कविता, संगीत, शब्द संवेदना और ललित कला के मर्मज्ञ **यतीन्द्र मिश्र** राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित लेखक हैं।

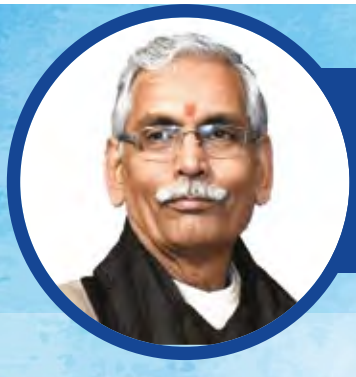

प्रकृति की खिलखिलाहट और शुभता की ऋतु

प्रो. बल्देवभाई शर्मा

भारत प्रकृति आधारित देश है। धरती और प्रकृति को अनादि काल से हमने माता माना है। हमारे ऋषियों का यही संदेश है। अथर्ववेद में उन्होंने लिखा *'माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः'*। दुनिया में किसी देश को प्रकृति का इतना उपहार नहीं मिला है जितना भारत को। कोई देश साल भर ठंडे ही ठंडे हैं तो कोई गरम ही गरम, कहीं वर्षा ही होती रहती है। कहीं सूर्य कम निकलता है, कहीं ज्यादा। भारत में तो छह ऋतुओं का चक्र प्रकृति ने दिया है। कैसा मनोहारी जीवन और वातावरण है यहां। हिमालय, वायु और सूर्य इस ऋतु परिवर्तन का आधार हैं। कालिदास ने हिमालय को 'देवतात्मा हिमालयः' कहा। भारत का कैसा सुंदर वर्णन इन पंक्तियों में है, ऐसा शायद ही विश्व में किसी देश को हो–

'हिमालयात् समारम्य यावदिन्दु सरोवरम।

तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थान प्रचक्षते।' अर्थात हिमालय और हिन्द महासागर के बीच बसा यह देश प्रकृति का प्रचुर आशीर्वाद पाए हुए है, मानो है मानो इस देश की रचना देवताओं ने ही की हो।

ऋतुओं का बदलाव भारत के पर्यावरण, वातावरण और स्वास्थ्य को संरक्षण देता है। यह भारत का जीवन प्रदाता है। कैसा विचित्र और सुषमा समृद्ध देश है यह कि एक तरफ हरीतिमा का सुरम्य फैलाव और दूसरी ओर राजस्थान के विशाल धौरों से अलंकृत रेतीले मैदान। कविवर सुमित्रानंदन पंत ने भारत की प्रकृति का अद्भुत चित्रण किया है–

भारतमाता ग्रामवासिनी
खेतों में फैला है श्याम
धूल भरा सा मैला आंचल।

भारत में ऋतु चक्र का बदलाव ही वस्तुतः इस प्राकृतिक सौंदर्य का आधार है। फसलें, स्वास्थ्य, ऊर्जा, वन, नदियां, पर्वत सब इस ऋतु परिवर्तन से ही प्राणवान होते हैं। यहां तक कि हमारा खानपान और पहनावा भी प्रभावित होता है।

बसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर ये छः ऋतुएं न केवल प्रकृति के बदलते रूपों का दिग्दर्शन कराती हैं, बल्कि जीवनशैली की विविधता को भी दर्शाती हैं। वर्षा के बाद आने वाली शरद ऋतु में मानों प्रकृति खिलखिला उठती है। वर्षा के दौरान चारों ओर फैली नमी, कीचड़, पानी–पानी हुआ पूरा वातावरण शरद ऋतु आते ही धीरे–धीरे बदलने लगता है। वर्षा में अनेक प्रकार के कीट–पतंगों की बढ़ आई फौज सिमटने लगती हैं। वातावरण स्वच्छ होने लगता है। पूरी प्रकृति में एक निर्मलता, ऊर्जास्विता और गतिमानता दिखने लगती है। शारदीय नवरात्रि और विजयादशमी जैसे पर्व एक नए उल्लास से जीवन को भर देते हैं। पितृ पक्ष हमें अपने पूर्वजों की आत्मिक शांति के लिए श्रद्धावनत कर देता है। वर्षा की किच किच से कभी–कभी झुंझलाया सा मन प्रफुल्लित हो उठता है। वर्षा ऋतु में अपना आवागमन रोककर संत–महात्मा चातुर्मास करते हैं। शरद ऋतु में पुनः उनकी धार्मिक यात्राएं प्रारंभ होती है। शरद ऋतु में ही शरद पूर्णिमा का पावन पर्व आता है। बताया जाता है कि इस पूर्णिमा को चंद्रमा 16 कलाओं के साथ, अपनी पूरी पूर्णता में वर्षभर में केवल इसी दिन निकलता है। इस दिन चंद्रमा की किरणें विशेष रूप में व्यक्ति के शरीर, मन और आत्मा को पवित्र गुणों से पोषित करती हैं जो स्वास्थ्यकर भी होती हैं। शरद पूर्णिमा पर रात्रि में चंद्र किरणों की रोशनी में खीर रखी जाती है। कहा जाता है कि वह खीर अमृत तुल्य होती है और उसे खाने से स्वास्थ्य को कई तरह के लाभ होते हैं।

संत तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में शरद ऋतु का बड़ा सुंदर वर्णन किया है। राम शरद ऋतु के आनंद से विभोर होकर लक्ष्मण को कहते हैं–

वर्षा विगत शरद ऋतु आई, लछमन देखहु परम सुहाई
फूले कांस सकल महि छाई, जनु बरसों कृत प्रकट बुढ़ाई।

वनवास काल में राम, सीता, लक्ष्मण शरद ऋतु में प्रकृति के खिलखिलाते रूप सौंदर्य को देखकर आल्हादित हो रहे हैं। तुलसी बाबा ने शरद ऋतु के मनोहारी वर्णन के साथ जीवन के मर्म को भी जोड़कर प्रस्तुत किया है। जैसे– *सरिता सर निर्मल जल सोहा/संत हृदय जस गत मद मोहा।*

शरद काल में नदियों–तालाबों का जल स्वच्छ होकर इतना निर्मल दिखने लगता है जैसे संत–महात्मा का हृदय मद–मोह से मुक्त होकर निष्कलुष हो जाता है। मानस में इस वर्णन को अवश्य पढ़ना चाहिए। इसमें शरद की महिमा के साथ–साथ जीवन की अर्थवत्ता भी निहित है।–

फूलें कमल सोह सर कैसा, निर्गुन ब्रह्म सगुन भए जैसा।

असंख्य कमल खिलने से सरोवर उसी तरह शोभायमान हो रहे हैं जैसे निर्गुण ब्रह्म सगुण रूप पाकर शोभा से परिपूर्ण हो उठता है। प्रकृति का यह आह्लाकारी रूप शरद काल में मन को मोह लेता है। प्रकृति केवल आनंद ही नहीं देती, बल्कि जीवन का दिशाबोध भी कराती है। शरद ऋतु में यही प्रकृति नित–नूतन रूप धारण करती है। मानस में तुलसीदास कैसा विहंगम चित्र प्रस्तुत करते हैं–

भूमि जीव संकुल रहे,गए सरद ऋतु पाई

सद्गुरु मिलें जाहिं जिमि, संसय भ्रम समुदाइ। वर्षा काल में झुंड के झुंड पैदा हो गए कीट–पतंग शरदऋतु आने पर उसी तरह नष्ट हो जाते हैं जैसे सद्गुरु के मिलने से मन के सारे संशय और भ्रम मिट जाते हैं।

प्रकृति को जीवन के मर्म से जोड़कर देखने का चिंतन दुनिया में कहां है? केवल भारत में है। दुनिया ने प्रकृति को उपभोग का साधन माना। नए–नए वैज्ञानिक आविष्कारों से प्रकृति के रहस्यों को जानकर अपने उपभोग के अधिकतम साधन पाश्चात्य जगत ने खोजे। प्रकृति आहें भरने लगी, उसका रोष जन–धन का विनाश करने लगा। रियो–टोक्यो सम्मेलन कर उसका तोड़ निकालने का प्रयास होने लगा। और वह भी प्रकृति को बचाने के लिए शायद ही, अपने भोग में आ रही बाधाओं को दूर कर प्रकृति का और अधिकाधिक दोहन करने के लिए। पाश्चात्य जगत के इस उपभोक्तावादी चिंतन और जीवनशैली ने विश्व को विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया। दूसरों के प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा करने के लिए युद्ध हो रहे हैं। मानवता का सर्वनाश हो रहा है। दुनिया आज भारत की ओर देख रही है। अर्नाल्ड टायन्बी जैसे ब्रिटिश इतिहासकार और समाजविज्ञानी लिख रहे हैं कि दुनिया को इस विनाश से भारत की संस्कृति ही बचा सकती है। यह सच भी है क्योंकि भारत की संस्कृति शोषण की नहीं, पोषण की रही है। हमारे ऋषियों ने विश्व को लोककल्याण का चिंतन दिया। उपनिषद में ऋषि ने लिखा–

ईशावास्यमिंद सर्व यदकिंचिंत जगत्यांजगत

तेन त्यक्तेन भुंजीया या गृधः कस्विस्स्धनम। ईश्वर जगत के कण–कण में हैं। इसलिए जो अपने हिस्से का ही उपभोग करो, दूसरों के भाग का नहीं।

शरद ऋतु शुभता का यही संदेश देती है। बसंत ऋतुराज है तो शरद शुभता का प्रतीक। यह स्वच्छता, आनंद, ऊर्जा और कर्मशीलता का संदेश देती है। विश्व के लिये यह भारत का महत् सांस्कृतिक अवदान है।

लेखक–प्राध्यापक **प्रो. बल्देवभाई शर्मा** वर्तमान में कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, रायपुर के कुलपति हैं।

हर वक़्त फ़िज़ाओं में, महसूस करोगे तुम... आलोक श्रीवास्तव

तुम्हारे पास आते हैं तो सांसें भीग जाती हैं
मोहब्बत इतनी मिलती है कि आंखें भीग जाती हैं
तेरे एहसास की ख़ुशबू हमेशा ताज़ा रहती है
तिरी रहमत की बारिश से मुरादें भीग जाती हैं
तबस्सुम इत्र जैसा है हंसी बरसात जैसी है
वो जब भी बात करती है तो बातें भीग जाती हैं... शायर, गीतकार और टीवी पत्रकार आलोक श्रीवास्तव ने अपनी यह ग़ज़ल **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा आयोजित **कलम** जयपुर में सुनाई। वे इस कार्यक्रम में बतौर अतिथि उपस्थित थे। आरंभ में **अहसास वूमेन** राजस्थान और मध्य भारत की समन्वयक अपरा कुच्छल ने **कलम** और फाउंडेशन की गतिविधियों के परिचय के साथ ही वक्ता आलोक और संवादकर्ता नगमा सहर का स्वागत किया। उन्होंने आलोक के काम की विस्तार से जानकारी देते हुए उनके काव्य–संकलन *आमीन* और कहानी संग्रह *आफरीन* की चर्चा की। कुच्छल ने बताया कि आलोक की साहित्यिक रचनाओं के विभिन्न भाषाओं में अनुवाद हो चुके हैं और आपकी रचनाओं को जगजीत सिंह, पंकज उधास, शंकर महादेवन, रेखा भारद्वाज, सोनू निगम, जावेद अली, उस्ताद राशिद खान, शान, शुभा मुद्गल, अमिताभ बच्चन जैसे दिग्गजों ने आवाज दी है। आलोक ने अनुष्का शंकर और ए. आर. रहमान के साथ भी काम किया है। कुच्छल ने आगे की बातचीत के लिए टीवी पत्रकार नगमा सहर को आमंत्रित किया।

नगमा ने आलोक की लफ़्ज़ों की अदायगी की तारीफ की और उनकी अदबी यात्रा के बारे में जाना चाहा। आलोक ने बताया कि जिस उम्र में लोग खेलते थे, उस उम्र में मैं बेगम अख्तर को सुनता था, गुलाम अली और जगजीत सिंह को सुनता था। भोपाल में हम उर्दू तहजीब में रचे –बसे थे। पिता डांटते थे कि पहले पढ़ाई करो। मेरे तीन बड़े भाई बड़े पदों पर थे, कायस्थ परिवार में नौकरी का माहौल था, पर मेरा मन इधर लगा था। मुझे अच्छे गुरु भी मिले। एक बार मैंने अपनी मां से इच्छा जाहिर की कि साहित्य में मेरा नाम हो। मां ने कहा 'आमीन'। बाद में मैंने इसे ही अपनी पहली पुस्तक का नाम रखा। मेरी पहली अलबम शुभा मुद्गल के साथ आई, जिसका नाम *कोशिश* था। इसमें दो ही शायर थे, एक फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ और दूसरा मैं। इसी में वह नज़्म थी
आओ सोचे जरा
आओ देखें जरा
हमने क्या–क्या किया
सांसें यूं ही गईं... इसे बाद में अमिताभ बच्चन ने भी अपनी आवाज दी.

आलोक ने नगमा के कहने पर जगजीत सिंह की गाई अपनी यह मशहूर ग़ज़ल भी सुनाई–
मंज़िलें क्या हैं रास्ता क्या है
हौसला हो तो फ़ासला क्या है
तुम हमारे क़रीब बैठे हो
अब दवा कैसी अब दुआ क्या है
जब भी चाहेगा छीन लेगा वो
सब उसी का है आपका क्या है...

अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में आलोक ने अपने दो दोस्तों के अलावा अपने गुरु शलभ श्री रामसिंह, बाबा नागार्जुन, डॉ विजय बहादुर सिंह, दुष्यंत कुमार आदि के साथ विदिशा, भोपाल, नोएडा, मुंबई के अपने वरिष्ठों, संस्मरणों और सहयोगियों को याद किया और अपनी खूबसूरत हैंड राइटिंग के चलते *सहाफत* में नौकरी मिलने की बात भी बताई। आलोक ने कहा कि इनमें से कई जनवादी और प्रगतिशील आंदोलन से जुड़े थे। उन्होंने बताया कि उसी जमाने में हंस में एक पेज पर बशीर बद्र साहब और एक पेज पर मेरी रचना छपी थी। ज़बान का शऊर मुझमें अपने बड़ों से आया है। पंकज उधास के साथ अपने काम को याद करने से पहले आलोक ने नगमा के हवाले से सुनाया–
ये सोचना ग़लत है कि तुम पर नज़र नहीं
मसरूफ़ हम बहुत हैं मगर बे–ख़बर नहीं।

आलोक ने कहा कि फिल्मों में अमूमन गीत लिखे जाते हैं। पंकज उधास ने एक बार मुझसे कहा कि मैंने एक धुन बनाई है, आप लिख दोगे क्या? मैंने धुन सुनी और *आमीन* का जिक्र किया। वह ग़ज़ल थी–
तुम सोच रहे हो बस, बादल की उड़ानों तक,
मेरी तो निगाहें हैं सूरज के ठिकानों तक।
ख़ुशबू सा जो बिखरा है सब उसका करिश्मा है
मंदिर के तरन्नुम से मस्जिद की अजानों तक...
हर वक़्त फ़िज़ाओं में, महसूस करोगे तुम,
मैं प्यार की ख़ुशबू हूं, महकूंगा ज़मानों तक।

आलोक ने अपनी यादों, किस्सों, हिंदी–उर्दू के रिश्तों, नई कविता, ग़ज़ल यात्रा, सादा ज़बानी पर अपनी राय रखी। उन्होंने एक और ग़ज़ल सुनाई, जिसके कुछ शेर हैं –
तुझे ऐ ज़िंदगी अब आंख भर के देखना है,
तेरी बारीकियों को ज़ूम कर के देखना है.
चिता की राख से और क़ब्र की गहराइयों से,
कहां जाते हैं सारे लोग, मर के देखना है.

नगमा के अनुरोध पर आलोक ने आशुतोष राणा द्वारा गाया गया खुद का लिखा *'शिव तांडव'*, और उसकी रिकॉर्डिंग के पीछे की कहानी भी सुनाई, और उस रचना को भी सुनाया, जिसे राणा ने उन्हें पहली बार उनके अनजाने ही रिकॉर्ड कर दो वर्जन में भेजा था। वह ग़ज़ल थी–
जो दिख रहा है सामने वो दृश्य मात्र है,
लिखी रखी है पटकथा, मनुष्य पात्र है.
नये नियम समय के हैं– असत्य; सत्य है,
भरा पड़ा है छल से जो वही सुपात्र है...
कहीं कबीर, सूर की, कहीं नज़ीर की,
परम्परा से धन्य ये ग़ज़ल का छात्र है.

आयोजन के दौरान आलोक ने अपनी कई नज़्में और ग़ज़लें सुनाईं। उन्होंने पत्रकारिता के अपने अनुभव, पत्रकार, लेखक और शायर के सामाजिक सरोकार पर अपनी बात रखी और दर्शकों के सवालों के भी उत्तर दिए। आयोजकों की ओर से प्रमोद शर्मा और आकृति पेरिवाल ने अतिथि वक्ता और संवादकर्ता को स्मृति चिन्ह प्रधान किया।

अहसास *वूमेन के सौजन्य से आयोजित* ***कलम*** *राजस्थान के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट. हॉस्पिटैलिटी पार्टनर आईटीसी राजपूताना और वी केयर जयपुर का सहयोग मिला।*

(L-R) Shashwat Kulshreshtha, Vinod Bhardwaj, Lokesh Kumar Singh Sahil, Neetu Shrivastav and Anubhav Kulshreshtha

Beena Agarwal, Laad Kumari Jain and Vidhya Jain

Apra Kuchhal and Alka Batra

An Evening to Remember: Celebrating 50 Sessions of Kalam and the First Lady of Indian Cinema

A great-grandniece of Rabindranath Tagore and the daughter of M.N. Chaudhuri, the first Indian surgeon-general, Devika Rani had wanted a career ever since she was a teenager. Having received her education in England, her rise to fame was as meteoric as it was inspiring. After a chance encounter with producer and actor Himanshu Rai that subsequently resulted in marriage, Devika Rani was asked to be involved in the design of the film, *A Throw of Dice*. It was however, *Karma*, a film in which she acted with her husband, that truly heralded the beginning of her illustrious career. Moreover, Bombay Talkies, which she established with Rai, was one of the best equipped studios at the time — it was instrumental in launching the careers of actors such as Ashok Kumar, Dilip Kumar and Raj Kapoor. Devika Rani acted in several such films; she became a household name and came to be known as the First Lady of Indian Cinema.

To celebrate the life of the legendary actress, and to commemorate 50 sessions of **Kalam** in Patna**, Prabha Khaitan Foundation** organised a production of *Devika Rani*, based on the play by Kishwar Desai, as a part of its **Chalchitra Rangmanch** theatre festival in the capital city of Bihar. The welcome note and the vote of thanks were delivered by Anvita Pradhan and Anubha Arya respectively, both of whom are **Ehsaas** Women of Patna. Directed by Lillete Dubey — who was congratulated on her work by the state information commissioner of Bihar, Tripurari Sharan — and boasting a star-studded cast with the likes of Ira Dubey, Joy Sengupta, Rishi Khurana, Mark Bennington and Pranav Sachdev, the show was a resounding success. Here are a few glimpses from the evening.

A moment from the play *Devika Rani*

The cast of *Devika Rani*

The state information commissioner of Bihar, Tripurari Sharan, felicitates Lillete Dubey

Anvita Pradhan

Anubha Arya

***Chalchitra Rangmanch** Patna was presented by Shree Cement Ltd in association with the Navras School of Performing Arts and with the support of **Ehsaas** Women of Patna*

A scene from *Devika Rani*

For the Love of Films

When it comes to film journalism, Bhawana Somaaya is a name that is widely recognised. Having started her career as a film reporter, her extensive and varied body of work has made her a name to reckon with in the Indian film industry. With more than 13 titles to her name, including the trilogy on the life and work of Amitabh Bacchan, Somaaya was awarded the Padma Shri in 2017 for her notable work in the field of journalism and as an author.

It was an evening to be remembered when **Prabha Khaitan Foundation** organised a special session of **The Write Circle** in Lucknow with Somaaya as the guest. She regaled the audience with stories from her life as an author-journalist. The moderator was Karishma Mehta, **Ehsaas** Woman of Mumbai, while Deepa Mishra, **Ehsaas** Woman of Lucknow, delivered the formal welcome note on behalf of the Foundation. Vinod Pandey, General Manager of Taj Mahal Lucknow, introduced the author, moderator and the audience to an enthralling literary event in the city.

"The thing about show business is that no matter how hard you try, the doors will not open for you unless you are destined for the industry or are talented," said Somaaya, as she discussed the various facets of the Indian film industry. However, she conceded that it is talent that ensures the survival of an actor. Having worn several hats as a reporter, critic, editor, translator and author, Somaaya's indisputable talent has ensured that her career is a long and respected one. But she confessed that she had not planned on being a writer. "My writing was something that happened of its own accord," she said. What are her thoughts on ethical journalism? "Back in the day, film journalism was not as clinical and synthetic as it is now," observed Somaaya. "Earlier, there used to be a genuine bond between the film journalist and the actors, which created a relationship of trust among them." When asked what could guarantee success in the life of a film journalist, Somaaya had a clear and succinct answer. "Discipline, honesty and a commitment to being true to the facts without sensationalising the lives of superstars," she said. "Film journalism is not about delving into the personal lives of the stars, but about focusing on human interest stories."

As the conversation veered towards her work as a translator, Somaaya talked about her experience of translating the books of Narendra Modi, the Prime Minister of India. His works such as *Sakshi Bhaav* and *Aankh Aa Dhanya Chhe* have been particularly close to her heart. "Rather than being a work of simple translation, it was something that required me to keep the essence of the author's thoughts intact," said Somaaya.

The engrossing session drew to a close with Somaaya engaging in a lively Q&A session with the audience. Kanak Rekha Chauhan, **Ehsaas** Woman of Lucknow, delivered the vote of thanks and the noted educationist and theatre personality, Raj Bisaria, felicitated Somaaya on behalf of the Foundation.

The Write Circle *Lucknow was presented by Shree Cement Ltd in association with Taj Mahal Lucknow,* Dainik Jagran *and Lucknow Expressions and with the support of* ***Ehsaas*** *Women of Lucknow*

स्त्रियां केवल स्नेह और प्रेम ही नहीं, आदर करना भी जानती हैं: मैत्रेयी पुष्पा

Maitreyi Pushpa

Sarvaswarupa Jha

"हमारे समाज में लड़की की खूबसूरती देखी जाती है और लड़के की इनकम। ऐसा क्यों किया जाता है, यह समझ में नहीं आता, जबकि एक उम्र के बाद सबको एक जैसा हो जाना होता है।" यह कहना है मैत्रेयी पुष्पा का, जो **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित '**कलम** फरीदाबाद' में बतौर अतिथि वक्ता मौजूद थी। आरंभ में यशिका त्रिपाठी ने अतिथियों का स्वागत किया और फाउंडेशन की कला, साहित्य, संस्कृति और महिला सशक्तीकरण से जुड़ी गतिविधियों की चर्चा की। उन्होंने बताया कि फाउंडेशन की मुहिम अब भारत सहित दुनिया के तीस से भी अधिक देशों, शहरों तक पहुंच चुकी है। अतिथि वक्ता मैत्रेयी पुष्पा का परिचय देते हुए त्रिपाठी ने बताया कि आपके 12 उपन्यास और 7 कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। महिलाओं एवं समाज की चुनौतियों पर आप लगातार लिखती रहती हैं। त्रिपाठी ने मैत्रेयी के *'चाक'*, *'अलमा कबूतरी'*, *'झूला नट'* जैसी कृतियों के अलावा उनकी आत्मकथा *'कस्तूरी कुंडल बसै'* और *'गुड़िया भीतर गुड़िया'* का जिक्र करते हुए कहा कि आपकी रचनाओं में ग्रामीण परिवेश के साथ ही सामाजिक कुरीतियों को चुनौती देती हुईं नायिकाएं साफ नजर आती हैं। मैत्रेयी की अनूठी शैली, निर्भीक और स्वतंत्र लेखन का जिक्र करते हुए त्रिपाठी ने आगे के संवाद के लिए शिक्षिका सर्वस्वरूपा झा को आमंत्रित किया।

हमने एक शाम चिरागों में सजा रखी है
शर्त लोगों ने हवाओं से लगा रखी है... शायरी के साथ झा ने मैत्रेयी से पहला सवाल उनकी आत्मकथाओं को लेकर पूछा? मैत्रेयी ने कहा कि मां को लेकर लिखने में कोई झिझक नहीं होती। मां से सवाल पूछा जा सकता है। पत्रों वाले प्रेमी का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि जब मां ने उससे मेरी शादी के बारे में पूछा तो मैंने मना कर दिया और कहा कि वह प्रेम पत्रों के लिए ही ठीक है। मां ने ब्रज भाषा में पूछा 'लाली तू प्रेम भी करेगी और शादी भी नहीं करेगी?' अब मैं मां को कैसे समझाती कि जिससे प्रेम करते हैं, उससे शादी नहीं करनी चाहिए। मेरा ये सिद्धांत था। उन्होंने पूछा कि फिर किससे तेरी शादी करें? मैंने शर्त रखी कि या तो डॉक्टर से करूंगी या इंजीनियर से करूंगी। यह शर्त कठिन थी। मेरे पिता नहीं थे, मां विधवा थी। मेरी मां का जोर मेरी पढ़ाई पर था। मैं लड़कियों के स्कूल में नहीं पढ़ी कभी। लड़कों से दोस्ती हमेशा अच्छी होती है। वे हमेशा ख्याल रखते हैं। मेरी मां कहती थीं तू पढ़ ले, तू सरोजनी नायडू बन, सुचेता कृपलानी बन। पर मेरी उम्र जब 18 साल की ही थी, मैंने मां से कह दिया मेरी शादी कर दो। मेरी मां नए विचारों की थीं। वह उम्र ऐसी है कि अट्रैक्शन और अफेयर हो ही जाता है। उस जमाने में प्रेम पत्र कंडक्टर लाता था। पर मेरी मां ने कभी भी चिट्ठियों के लिए नहीं टोका। मेरी मां लड़कों के यहां जाती थीं, तो जन्मपत्री की जगह मार्कशीट दिखाती थीं, तो भगा दी जाती थीं। पर एक लड़का ऐसा मिला, जिसने मार्कशीट ही स्वीकार कर ली।

खतरा उठाने के अपने साहस का जिक्र करते हुए मैत्रेयी ने बताया कि शादी के बाद मैं अपनी किताबों के साथ अपने प्रेम-पत्र भी ले आईं। वे पत्र आज भी मेरे पास हैं। मैंने उन पत्रों को न फेंका, न जलाया। लड़कियों को क्यों डराया जाता है। स्त्री के अंदर बहुत प्रेम होता है। मैंने प्रेम को कहीं रुकने नहीं दिया। मैंने कुछ छिपाया नहीं। छिपाती तो प्रेम को अपराध बना लेती। हम केवल स्नेह करना और प्रेम करना ही नहीं उनका आदर करना भी जानते हैं। उस प्रेम में सेक्स नहीं था। प्रेम के नाम पर सेक्स होता है तो हत्याएं होने लगती होती हैं। शादी के बाद भी आकर्षण होता है। यह मनुष्य की प्रवृत्ति है, इसमें अपराध कहां? मेरे पति ने मुझे ऐसे ही स्वीकार किया। स्त्री का स्वभाव है प्रेम करना। उसे सामंजस्य बिठाना आता है। इसीलिए मैं स्त्रियों पर ही लिखने लगी। *'गुड़िया भीतर गुड़िया'* से जुड़े सवाल पर मैत्रेयी जी ने डॉ प्रभा खेतान और उनकी कृति *'अन्या से अनन्या'* को याद किया। उन्होंने यह स्वीकारा कि *'कस्तूरी कुंडल बसै'* के बाद *'गुड़िया भीतर गुड़िया'* लिखने की प्रेरणा उन्हें *'अन्या से अनन्या'* को पढ़कर मिली। यह मैं अपने पति से छिपा-छिपाकर लिखी। यह डर नहीं था, एक हिचक थी। स्त्री के लिए आत्मकथा लिखना, इतना आसान नहीं था। प्रभा जी, मन्नू भंडारी, रमणिका गुप्ता, जिनकी भी आत्मकथा आई, किसी के साथ पति नहीं था। लेखन में सलाहें नहीं चलतीं।

Shweta Aggarwal and Vandana Bhatia

Yashika Tripathi

मैत्रेयी ने अपने नाम, लेखन में स्त्री स्वर, भय दिखाकर स्त्री से परंपराओं के पालन, पति की उम्र को लेकर करवा चौथ आदि पर खुलकर विचार रखे। उन्होंने कहा श्रद्धा, आस्था अपनी जगह है पर इसके तह में कुछ भी नहीं है। आखिर स्त्रियों की उम्र को लेकर कितने व्रत हैं? अगर व्रत रहने से उम्र बढ़ती तो सारे अस्पताल बंद कर दीजिए। इस तरह के ढकोसले की बजाय पति का सहयोग करना सबसे बड़ा व्रत है। मैत्रेयी ने ग्यारहवीं कक्षा में प्रेम-पत्र के रूप में मिली कविता का जिक्र किया और माना कि उस प्रेम ने उन्हें लेखक बना दिया और कविताओं को लेकर रुचि भी उसी के चलते हुई। उन्होंने बताया कि शादी के पच्चीस साल बाद मैंने लिखना शुरू किया। उन्होंने पति और परिवार के दायित्व के बीच लेखन को जिंदा रखने की अपनी जद्दोजेहद पर अपनी बात रखी और श्रोताओं के सवालों के भी उत्तर दिए। कार्यक्रम के अंत में वंदना भाटिया और श्वेता अग्रवाल ने अतिथि वक्ता और संवादकर्ता का अभिनंदन किया।

कलम *फरीदाबाद के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण और ह्युमैने फाउंडेशन का भी सहयोग मिला।*

The Untold Story of a Man of Dharma

Ashwani Kumar Goela (General Manager, Radisson Blu Plaza), Anindita Chatterjee, Archana Dalmia, Karuna Goenka, Neelima Dalmia Adhar and Shinjini Kulkarni with Lord Meghnad Desai, Bibek Debroy and Apra Kuchhal

A naturalised British economist of Indian origin, the renowned columnist and former Labour politician, Baron Meghnad Desai, was awarded the Padma Bhushan in 2008 for his outstanding contribution to humanity. Desai is a global luminary famous for his work in developmental economics. He is Professor Emeritus at the London School of Economics, and serves as the founder-chairman of the Meghnad Desai Academy of Economics in Mumbai. An author of several exemplary books, Desai's latest work is titled *Mayabharata: The Untold Story Behind the Death of Lord Krishna*. The book tries to unveil the secrets behind Sri Krishna and his death, the aftermath of the Kurukshetra War and many other interesting facets of one of India's greatest epics, the *Mahabharata*.

> "Lord Krishna died in the end because he had planned his death. He knew that maintaining *dharma* is a difficult task mastered by only a few. He designed the technique of his death. Otherwise, Krishna cannot be killed by anybody else because he is God"

Prabha Khaitan Foundation recently organised a session of **Kitaab** for the book's launch in Gurugram. Shinjini Kulkarni, **Ehsaas** Woman of Noida, delivered the welcome speech as she introduced the author, the chief guest, Bibek Debroy, and the moderator for the session, Apra Kuchhal, who is the Foundation's Honorary Convenor for Rajasthan and Central India Affairs. Debroy, an Indian economist serving as the chairman of the Economic Advisory Council to the Prime Minister of India, unveiled Desai's book to begin the session.

Why did Desai name his book *Mayabharata*? "Because *Maya* is the hero of the story," responded the author. "The book is sort of based on the blueprint of the *Mahabharata*, but the narrative wasn't changed. I just gave a different perspective on what may have happened. I didn't rewrite the *Mahabharata*."

"We can interpret *Maya* in two ways; it's double-edged," he continued. "There is the concept of the Mayan civilization, and that of Maya Danaav. So, I thought the hypothesis that Maya Danaav came from the Mayan civilization was intriguing." Elaborating on his discoveries and why he felt the desire to connect the two, Desai added, "The Mayan civilization is now defined by the historical remnants of its fantastic buildings, which are found in and around Guatemala and Mexico. The idea of bridging the two came to my mind when I studied the architecture and construction of the Mayans, and coupled it with the fact that, in the *Mahabharata*, it was Maya Danaav who built Yudhisthira's majestic palace."

> "We can interpret *Maya* in two ways; it's double-edged. There is the concept of the Mayan civilization, and that of Maya Danaav. The idea of bridging the two came to my mind when I studied the architecture and construction of the Mayans, and coupled it with the fact that, in the *Mahabharata*, it was Maya Danaav who built Yudhisthira's majestic palace"

Desai's book is characterised by strong women, be it Draupadi, Uttara, Kunti or Lord Krishna's wives. When Kuchhal asked about his thought process behind writing about such strong women characters, Desai credited it to the women in his family. "I was privileged to have encountered and had experiences with powerful women. I like strong women characters in my book. Even in the *Mahabharata*, Draupadi is my favourite female character. She had to pave her own way. Although she was married to five people, she felt alienated. In a battle of legitimacy in succession in the *Mahabharata*, bearing a son was her only way of keeping him a generation ahead of Uttara's child."

Steering the conversation towards Lord Krishna and his death, Desai said, "Lord Krishna died in the end because he had planned his death. He knew that maintaining *dharma* is a difficult task mastered by only a few. He designed the technique of his death. Otherwise, Krishna cannot be killed by anybody because he is God."

Desai's book, however, doesn't focus intricately on the conversations between Krishna and Arjun, as he did not particularly want to focus on a single episode, given that the conversation is complex and filled with details and interpretations. In spite of this, there are some exquisite lines on the principles of Dharma explained by Lord Krishna, some of which Kuchhal read out. The session soon moved on to a Q&A round, with the literary enthusiasts of Gurugram interacting with Desai. It was an interesting exchange filled with fascinating questions about Desai's life and work, the story of *Mayabharata* and the idea of Dharma. Vandana Singh felicitated Desai, Kuchhal and Debroy before Kulkarni concluded the event with a formal vote of thanks.

*This session of **Kitaab** was presented by Shree Cement Ltd in association with Rupa Publications and Radisson Blu Plaza, and with the support of **Ehsaas** Women of Gurugram*

Anant Vijay

Vandana Singh

Kishwar Desai

Nurturing The Nurturers

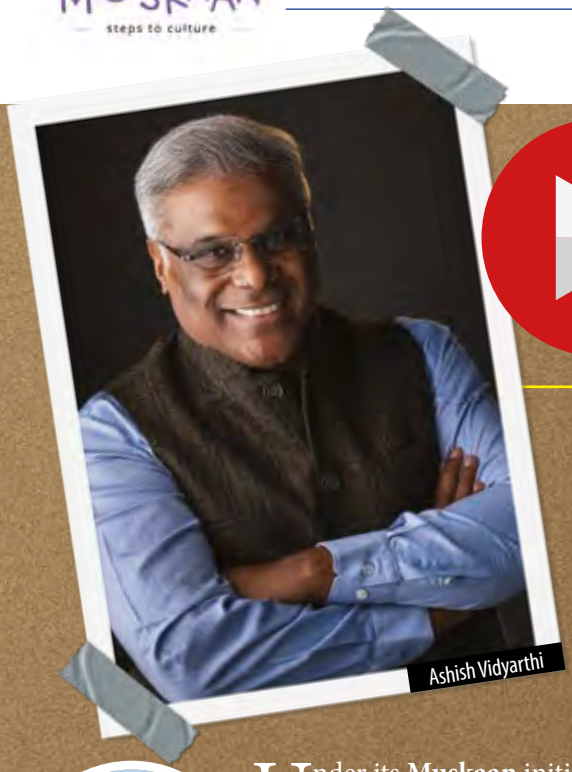
Ashish Vidyarthi

Under its **Muskaan** initiative, **Prabha Khaitan Foundation** aims to highlight and popularise national culture and heritage through various educational activities and programmes hosted for students across India. To commemorate Teacher's Day, **Muskaan** hosted a special interactive session with the notable actor, Ashish Vidyarthi. In a career spanning over three decades, Mr Vidyarthi has worked in hundreds of films in over 11 different languages. He is also one of India's most prominent motivational speakers and the co-founder of the AVID MINER organisation that conducts inspirational talks, sessions and workshops and provides consultations to citizens nationwide.

The session welcomed hundreds of teachers from all walks of life and academia. Mr Vidyarthi began with a warm greeting as he remarked on the diversity of the audience. One of his first topics was the importance of one's journey through life. He addressed his audience and blended with them as he shared his life experiences, anecdotes from the past and the events that shaped his life. One of his favourite memories is that of being confronted and scolded by his childhood mentor and the vice-principal of his school, a person with whom he now shares an intimate bond. Mr Vidyarthi stressed upon the importance of a teacher's influence on students, and how teachers could be scary and strict but also bearers of invaluable knowledge, advice and support. The world would acknowledge them for their immense contributions. However, this session was about "nurturing the nurturers," as he put it. Learning can never stop for anyone, and Mr Vidyarthi wanted the teachers to learn to nurture and develop themselves further. He spoke about the evolving nature and situations of life, and the need to evolve with the times and experiences of the world outside classrooms.

The audience

As the session moved forward, Mr Vidyarthi began asking the audience to look for ideas, ambitions and dreams that inspired them. He talked about how he perceived life and how, as a budding actor, he was determined to create unique realities to experience during his life. Instead of being focused on a single profession or kind of work, he focused his curiosity and enthusiasm on other fields of life. He emphasised the importance of being open to different paths, experiences and being more than just a worker or a professional. He asked the audience to look deep within themselves and rediscover the hidden aspects and attributes they had forgotten. He asked for a solemn promise that these values and quests would be taught to their students, so that when the world of their childhood changes, they take on the new world with a fresh, vigorous and welcoming attitude.

The session was conducted with the purpose of urging teachers to take the time to venture down the untrodden paths they desire to explore, to imbue their lives with purpose and become better human beings so that they can nurture the youth. With his wisdom, Mr Vidyarthi was able to captivate the audience and win their hearts and minds.

Muskaan reaches out to children across the country to participate in similar educational and cultural programmes with teachers, social workers, environmentalists and pioneers in their fields. It aims to impart knowledge and awareness about many such social, cultural and environmental issues. People can always follow **Muskaan**'s channels and social networks for updates and further details.

Subhrajyoti Maitra
Class XII, Don Bosco Park Circus

__Muskaan__ is presented by Shree Cement Ltd

प्रेम की तलाश आपके भीतर हमेशा चलती रहती है: प्रत्यक्षा सिन्हा

Pratyaksha Sinha

Kanak Rekha Chauhan

"लेखक कोई एक्टिविस्ट नहीं होता है। वह केवल अपने समय और समाज को सटीक ढंग से दर्ज करने की कोशिश करता है। ऐसे ही प्रेम को परिभाषित करना बहुत मुश्किल है।" **कलम** दिल्ली में मेहमान वक्ता प्रत्यक्षा सिन्हा ने यह बात एक सवाल के जवाब में कही। आरंभ में आयोजकों की ओर से नीलिमा डालमिया अधार ने अतिथियों का स्वागत किया और कला, शब्द, साहित्य, संस्कृति और महिलाओं को मजबूती दिलाने की **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की मुहिम के बारे में विस्तार से बताया। फाउंडेशन द्वार देश और दुनिया के तीस से अधिक शहरों में संचालित *'एक मुलाकात विशेष'*, *'लफ़्ज़'*, *'आखर'*, *'पोथी'*, *'सुर और साज'*, *'द राइट सर्कल'* और *'किताब'* आदि कार्यक्रमों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि **'कलम'** का उद्देश्य लेखकों, कलाकारों और साहित्य प्रेमियों को उनके प्रशंसकों से सीधे जोड़ना है। अतिथि वक्ता के ही शब्दों में उनका परिचय देते हुए नीलिमा ने बताया कि प्रत्यक्षा लिखती हैं, सोचती है, गुनती हैं, पावर ग्रिड में वित्त विभाग की नौकरी करती हैं, संगीत और लिबरल आर्ट में रूचि रखती हैं, इतिहास और समय के रहस्य में मनुष्य के अस्तित्व का सन्दर्भ खोजती हैं। हरेक महादेश में एक बार घूम लेना, हर समंदर के पानी को छू लेना, इन जगहों के लोगों से मिल लेना, उनका खाना चख लेना, उनकी भाषा सीख लेना और इस एक जीवन में अनेक जीवन जी लेने की ख्वाहिश रखती हैं।

अधार ने बताया कि प्रत्यक्षा का जन्म बिहार के गया में 26 अक्टूबर, 1963 में हुआ। लेखन की शुरुआत ब्लॉग से हुई। हिंदी और अंग्रेजी में लिखती हैं और अनुवाद भी करती हैं। आपकी चर्चित पुस्तकों में *'जंगल का जादू तिल-तिल'*, *'पहर दोपहर, ठुमरी'*, *'बारिशगर'*, *'तुम मिलो दोबारा'*, *'तैमूर तुम्हारा घोड़ा किधर है'*, *'ग्लोब के बाहर लड़की'*, *'एक दिन मराकेश'*, *'मीट मी टुमॉरो'* *'रेन सांग'* आदि शामिल हैं। मुक्तिबोध पर लेख और उनकी कुछ कविताओं का अंग्रेज़ी में अनुवाद भी किया है। आपको सोनभद्र कथा सम्मान, इंडो नॉर्वेजियन पुरस्कार, राजेन्द्र यादव हंस कथा सम्मान के अलावा कृष्ण बलदेव वैद फेलोशिप मिल चुकी है, और आप संगम हाउस रेजिडेंसी की फेलो भी रही हैं। नीलिमा ने प्रत्यक्षा से आगे की चर्चा के लिए **अहसास** वूमेन लखनऊ कनक रेखा चौहान को आमंत्रित किया। कनक ने पहला सवाल ही प्रत्यक्षा के बचपन और जवानी को लेकर पूछा। उनका उत्तर था, "बचपन रांची में बीता। वहां की मिट्टी लाल है। पूरा झारखंड बहुत खूबसूरत है। मेरा शहर मेरे भीतर हमेशा मेरे साथ चलता है। भले ही मैं 20-21 सालों से गुरुग्राम में हूं, पर मेरी जड़ें वहीं हैं, जो हमेशा मुझे अपनी ओर खींचती हैं। जवानी के कुछ दिन वहां और कुछ पटना में बीते।"

प्रत्यक्षा ने कहा कि मुझे इतिहास बहुत प्रिय है। दिल्ली में हर जगह विरासत बिखरी पड़ी है। कभी-कभी मुझे लगता है कि समय अतीत, भविष्य और वर्तमान सब एक साथ चलते रहते हैं। उन्हें देखने की दृष्टि चाहिए। बहुत सारा रहस्य बचा है। लिंग भेद से जुड़े सवाल पर प्रत्यक्षा ने कहा कि बहुत सारी चीजें अनजाने में घट जाती हैं। मैंने जब नौकरी ज्वाइन की थी तो ट्रेनिंग के दौरान पूरे परिसर में मैं अकेली लड़की थी, तो लोग मुझे देखने आते थे। ऐसे ही तब पटना के मेरे दफ्तर में लेडीज टायलेट तक नहीं था। आज हालात बदल गए हैं। पर जब आप लेखक होते हैं तो आप जेंडर से अलग हो जाते हैं। प्रत्यक्षा ने नौकरशाही के अपने अनुभवों और अपने लेखन के चरित्रों से जुड़े सवाल पर भी खुलकर उत्तर दिया और कहा कि चैलेंजिंग टास्क का अपना एक मजा है। मैं नौकरशाही से लेखन की ओर आती-जाती रहती हूं। भाषा और शिल्प से जुड़े सवाल पर प्रत्यक्षा ने बताया कि कॉलेज से निकलने के बाद जॉब के दौरान अंग्रेजी में ही लिखना, बोलना होता था। पर ब्लॉग लेखन ने मुझे हिंदी की ओर लौटाया। उस दौरान मैंने मां-पिता से जो शब्द सुना था उन्हें याद करना शुरू किया। आज हम हाइब्रिड भाषा का इस्तेमाल करते हैं। लिखने के दौरान मुझे पुराने शब्द याद आने लगे, मैं उन शब्दों को सहेजने लगी, जो मैंने माता, पिता, नानी से सुने थे।

प्रत्यक्षा ने अपनी पुस्तक से कुछ अंश शेयर किया और अपनी पात्र हीरा से जुड़े सवाल का उत्तर दिया। उन्होंने सहजीवन के बीच इतर संबंध, हीरा के परपुरुष तारिक की ओर आकर्षण, प्रेम में पड़ने और उसके लिए अपने पति निर्मल को ही दोष देने या उसकी ओर झुकाव के चलते पति से प्रेम के फिर से बढ़ने से जुड़े सवालों के उत्तर दिए। उन्होंने बताया कि शादियों की एकरसता के चलते प्रेम में पड़ने की तलाश सतत चलती रहती है। प्रत्यक्षा ने कहा कि उनकी यह पुस्तक उनकी नायिका के प्रेम में पड़ने, उसकी तलाश और उसके गिल्ट की कहानी है। नायिका इस सवाल से जूझती है कि क्या ऐसा एक समाज बन सकता है, जिसमें पुरुष दोस्त बन सकते हों। प्रत्यक्षा ने श्रोताओं के सवाल का भी उत्तर दिया। उन्होंने बताया कि यह कहानी उनकी कुछ सुनी हुई, कुछ भोगी हुई, कुछ कल्पना मिश्रित है। प्रेम और वासना से जुड़े सवाल में प्रत्यक्षा ने कहा कि मन बहुत बदमाश है। यह एकरूपता से भागता है, और उसी की ओर लौटता है। आज भारत में भी ओपेन मैरिजेज की बात हो रही है। लिव इन की बात आज बहुत नॉर्मल है। मालविका जोशी ने अतिथि वक्ता का अभिनंदन किया।

Malavika Joshi

Neelima Dalmia Adhar

Santosh Shekhar

Preeti Gill

V.P. Vaidik

अहसास *वूमेन दिल्ली के सौजन्य से आयोजित* ***कलम*** *दिल्ली के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। दिनेश नंदिनी रामकृष्ण डालमिया फाउंडेशन और मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण का सहयोग मिला।*

लिखना दरअसल लड़ना है मेरे लिए: अल्पना मिश्र

Alpana Mishra

Deepa Mishra

"मैंने पाया शब्दों को कविता की तरह जरूर, लेकिन अपनाया उसे प्रतिरोध के हथियार की तरह। ये ताकत जब मुझे समझ आ गई तो हर बार जितनी बेचैनियां हैं, गुस्सा है, सबके लिए शब्द ही हथियार बने।... लिखना दरअसल लड़ना है मेरे लिए।" यह कहना है **कलम** रांची की अतिथि वक्ता अल्पना मिश्र का। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित इस आयोजन में आयोजकों की ओर से स्वागत वक्तव्य **अहसास** वूमेन रांची डॉ सीमा सिंह ने दिया। उन्होंने 'अपनी भाषा, अपने लोग' के मौलिक विचार को बढ़ावा देने के लिए **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की बहुविध गतिविधियों का उल्लेख किया और बताया कि **'कलम'** के अलावा **'एक मुलाकात विशेष'**, **'लफ़्ज़'**, **'आखर'**, **'पोथी'**, **'सुर और साज'**, **'द राइट सर्कल'** और **'किताब'** जैसे बेहद लोकप्रिय कार्यक्रमों का उद्देश्य लेखकों, कलाकारों को साहित्य प्रेमियों और उनके प्रशंसकों के साथ सीधे जोड़ना है।

मेहमान वक्ता का परिचय देते हुए उन्होंने कहा कि अल्पना का जन्म 18 मई, 1969 को हुआ। हिंदी साहित्य से स्नातकोत्तर और काशी हिंदू विश्वविद्यालय से पीएचडी डिग्रीधारी अल्पना की पहली कहानी 'ऐ अहिल्या' हंस के अक्तूबर 1996 अंक में प्रकाशित हुई। आपके 2 उपन्यास, 7 कहानी संकलन, 3 आलोचना पुस्तकें और एक संपादित-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। जिनमें उपन्यास *'अन्हियारे तलछट में'*, *'अस्थि फूल'*; कहानी संकलन *'भीतर का वक्त'*, *'छावनी में बेघर'*, *'कब्र भी कैद औ' जंजीरें भी'*, *'स्याही में सुरखाब के पंख'*; आलोचना पुस्तक *'स्त्री कथा के पांच स्वर'*, *'सहस्त्रों विखंडित आईने में आदमकद'* और *'स्वातंत्र्योत्तर कविता'* को काफी चर्चा मिली। आपकी रचनाएं कई देशी-विदेशी भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं और आप शैलेश मटियानी स्मृति कथा-सम्मान, परिवेश सम्मान, राष्ट्रीय रचनाकार सम्मान, शक्ति सम्मान, प्रेमचंद स्मृति कथा सम्मान, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता और वनमाली कथा सम्मान से सम्मानित हैं। अल्पना से संवाद **अहसास** वूमेन लखनऊ दीपा मिश्रा ने किया।

Poonam Anand

Seema Singh

Mayank Murari

Shagufta

दीपा ने अल्पना के बचपन और लिखने को लेकर लगाव के बारे में पूछा। अल्पना ने बताया कि मैं अध्यापक माता-पिता की संतान थी। हमें किताबें ही मिलती थीं और मैं तो ऐसी बन गई थी कि किताबें छू कर, सूंघ कर बता देती थी कि ये कितनी पुरानी हैं, इनका मूल्य क्या है? इनमें क्या है। पूरे वातावरण में न्याय-अन्याय के प्रश्न ही गूंजते थे। प्रोफेसर लास्की और प्रेमचंद को मैं बचपन में ही जान गई थी। एंजेल की कहानियां जैसे साथ ही चलते थे। जब मैं 14 साल की ही थी, तो एक छोटा सा अन्याय हुआ और मुझे उस सीख को आजमाने का मौका मिला। अपनी मौसी और मौसा के संग घूमने से संग जुड़ी घटना का उल्लेख करते हुए उस कविता की चंद पंक्तियां सुनाईं, जो उन्होंने उस समय लिखी थी

पिंजड़े में बंद था पक्षी
थी प्रकृति उसकी स्वतंत्र
तन मगर था बंद
क्या करे लाचार था
नर की निर्दयता का....

अल्पना ने कहा कि जब उन्होंने अपने माता-पिता को यह कविता सुनाई तो वे स्तब्ध रह गए। इन्हीं से मुझे शब्दों की ताकत का पता चला। बहुत पहले से कविताएं छपने लगी थीं। लेकिन बाद में लगने लगा कि कहानी में आना चाहिए क्योंकि स्पेस ज्यादा चाहिए, ज्यादा खुलकर बात कही जा सकती। कहानी के बाद जब और स्पेस की जरूरत पड़ी तो उपन्यास की तरफ आ गई।

दीपा के यह पूछने पर कि आप पंडित हजारी प्रसाद द्विवेदी के परिवार से जुड़ी हैं, उनकी कौन सी बात आपको याद है, जिसे आप सीख मानकर, या मंत्र मानकर आज भी उसका अनुसरण करती हैं? अल्पना का उत्तर था, "तीन बातें हैं। पहली है- *हृदयेन अपराजितः* यानी हृदय से अपराजित रहना, दूसरी है- *अपुतो भयावृत्ति* यानी भय से मुक्त रहना, डरना नही है, न तो गुरु से न तो मंत्र से, तीसरी है- *अविचल दृष्टि* यानी दृष्टि के मामले में समझौता नहीं। इसे मैंने मंत्र की तरह ही लिया और जिद की तरह अपनाया। मैंने परिवार में बहुत उतार-चढ़ाव देखे। सभी का अपना स्वाभिमान और जिद थी।"

'अस्थि फूल' उपन्यास की लेखन प्रक्रिया से जुड़े सवाल पर अल्पना ने झारखंड से अपने लगाव के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि जब वे ये उपन्यास लिख रही थी तो इसकी गति बहुत धीमी थी। पर नब्बे के दशक के बाद औरतों, बच्चों की ट्रैफिकिंग के मामले इतनी तेजी से बढ़ रहे थे। इस बीच एक घटना ऐसी घटी जिससे मुझे झटका लगा। उन्होंने हरियाणा की उस घटना के बारे बताया, जब एक वाइवा के दौरान कुछ लड़कियों ने उनसे दूसरी लड़कियों के दुख के बारे में बताया। अल्पना ने अपने उपन्यास के कई पात्रों के सहयोग, संघर्ष के बारे में बताया और कहा कि भूख की कोई भाषा और क्षेत्र नहीं होता। इस उपन्यास को लिखने में आठ वर्ष लग गए।

एक पाठक ने पूछा कि क्या आप इसे लिखते हुए रोती थी? यह सही बात थी। अल्पना ने नागार्जुन की एक कविता को याद करते हुए कहा कि यह संकट केवल स्त्री का संकट नहीं है, यह संवेदना का संकट है, सियासत का संकट है, सृष्टि का संकट है, सरोकार का संकट है, सबसे बढ़कर यह मनुष्यता का संकट है। चर्चा के दौरान उन्होंने अपनी दूसरी रचनाओं, कहानियों, आलोचना, संपादन, स्त्री स्वर से जुड़ी प्रक्रिया, जापान यात्रा से जुड़ी जिज्ञासा का समाधान किया। इस दौरान उन्होंने *अस्थि फूल* के चुने हुए अंश का पाठ किया, दर्शकों के सवालों के उत्तर दिए और कहा कि लेखक को अपनी जमीन पर टिके रहना है। कार्यक्रम के अंत में **अहसास** वूमेन रांची पूनम आनंद ने अतिथि वक्ता अल्पना और मुक्ति शाहदेव ने संवादकर्ता दीपा का अभिनंदन किया।

__अहसास__ वूमेन के सौजन्य से आयोजित __कलम__ रांची के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण का सहयोग मिला।

एक फनकार हमेशा जिंदा रहता है: हिमांशु बाजपेयी

Rashi Garg

Himanshu Bajpai

दास्तानगोई दो शब्दों से मिलकर बना है, दास्तान यानी कहानी, गोई यानी कहना या सुनाना। ये कहानी तो है पर एक खास किस्म की कहानी है। ये तबील एक लंबी कहानी है जो किस्सा दर किस्सा आगे बढ़ती है।" यह बात **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित '**कलम** आगरा' में अतिथि वक्ता के रूप में लेखक, किस्सागो हिमांशु बाजपेयी ने कही। कार्यक्रम का आरंभ **अहसास** वूमेन चांदनी चोपड़ा के वक्तव्य से हुआ। उन्होंने कला, साहित्य और संस्कृति को बढ़ावा देने के साथ ही फाउंडेशन द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों की जानकारी दी। *आईटीसी मुगल* की ओर से ज्योति चित्कारा ने सबका स्वागत किया। **अहसास** वूमेन आगरा विनती कथूरिया ने अतिथि वक्ता का औपचारिक परिचय दिया। उन्होंने कहा कि बाजपेयी लखनऊ में पैदा हुए और वहीं पले-बढ़े। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय से लखनऊ के ऐतिहासिक नवल किशोर प्रेस पर पीएचडी की है। लखनऊ को अपनी कर्मभूमि बनाकर लखनवी तहजीब, लखनवी अवाम और संस्कृति के तानेबाने बुनते हुए दीवानागार लिखते हैं। बाजपेयी ने किस्सागोई को नया रूप दे कर कहानी कहने के पुराने अंदाज 'दास्तानगोई' को फिर से जिंदा किया है। उन्होंने आगे के संवाद के लिए राशि गर्ग को आमंत्रित किया।

गर्ग ने बाजपेयी से पहला सवाल किस्सागोई और दास्तानगोई को लेकर पूछा कि यह है क्या? और आप इससे कैसे और कब से आप जुड़े, आपका सफर कैसे शुरू हुआ? बाजपेयी ने कहा कि किस्से सुनाना मुझे अच्छा लगता है।दास्तान एक ऐसी कहानी है जो कई-कई दिन, कई-कई रात, कई-कई हफ्तों, कई-कई सालों तक मुसलसल सुनाई जाती है। दास्तानें उर्दू में बहुत सुनाईं गईं। जो सबसे मशहूर दास्तान हुई उसका नाम है *'दास्तान-ए-अमीर हमज़ा'*। बाजपेयी ने अपनी बात को विस्तार देते हुए कहा कि हिंदुस्तान ने दास्तानगोई को भी अपना बना लिया। अकबर बादशाह ने हमज़ा नामक पेंटिंग भी बनवाई थी, उस पर वह मंजर बनवाया था, जिसके सामने खड़ा होकर दास्तानगो किस्सा सुनाता था। बाजपेयी ने मुगल दरबार और लखनऊ में दास्तानगोई के पहुंचने, मीर अमन देहलवी ने किस्सा चार दरवेश का अनुवाद, अकबर के दास्तानगोई से प्रेम और नवलकिशोर प्रेस की भूमिका की भी विस्तार से चर्चा की।

बाजपेयी ने यह भी कहा कि रिवायती दास्तानगोई 1928 मीर बाकर अली देहलवी की मौत के बाद खत्म हो गई। 2005 में इस फ़न को महमूद फ़ारूक़ी द्वारा दोबारा जिंदा करने की कोशिश हुई। बाजपेयी ने यह माना कि दास्तानगोई में उनके पास जो भी अच्छा है, वह सब अंकित चड्ढा का है। अंकित दास्तानगोई के जादूगर थे। अंकित उनसे पहले से फुल टाइम दास्तान कर रहे थे और हर चीज में आगे थे। अंकित ने ही मुझे बार-बार कहकर दास्तानगोई में खिंचा। मेरी किताब *'किस्सा-किस्सा लखनऊवा'* अंकित को ही समर्पित है। एक आम इनसान और फनकार में यही अंतर होता है कि एक फनकार हमेशा जिंदा रहता है। बाजपेयी ने कहा कि दास्तानगोई में कुछ भी असली नहीं है। उन्होंने बताया कि यह जमीन कहानियों का स्वागत करती है। भारत में आधुनिक दास्तानगोई में काफी कुछ शामिल किया गया है। बाजपेयी ने *'किस्सा-किस्सा लखनऊवा'* से जुड़े सवाल पर भी उत्तर दिया और कहा कि उन्होंने लखनऊ शहर को किस्सों के जरिए समझाने की कोशिश की है। उन्होंने अपनी पुस्तक के कवर से जुड़े सवाल का भी जवाब दिया कि यह हमारे दोस्त सिराज़ हुसैन ने डिजाइन किया है। हमारी कोशिश थी कि जो लखनऊ की पहचान है, या जिनका लखनऊ में अहम किरदार है, पर उन्हें समय के साथ बिसरा दिया गया है, उन्हें कवर पर लाकर एक ट्रिब्युट दिया जाए। इस क्रम में उन्होंने उन उस्तादों का जिक्र भी किया, जिनको कवर पर जगह दी गई है। ऐसे लोगों में नौशाद के गुरु युसूफ उस्ताद और कथाकार अमृतलाल नागर जैसे लोग शामिल हैं।

'किस्सा-किस्सा लखनऊवा' में आपने आम लोगों के जीवन को लिया है। इसकी क्या वजह है? बाजपेयी का कहना था कि लखनऊ के कल्चर और तहजीब को अगर किसी ने परवान चढ़ाया तो वे आम लोग थे। लखनऊ का मामूली से मामूली आदमी भी लखनवीयत में डूबा हुआ था। उन्होंने एक फूल बेचने वाली और शायर का किस्सा सुनाया। बाजपेयी ने बातचीत के दौरान कई छोटे-छोटे किस्से सुनाए। ऐसे किस्सों में ट्रेन का एक वाकिआ, मैकेनिक द्वारा स्कूटर की पेंच कसने वाला किस्सा, एक टेलर मास्टर का किस्सा भी सुनाया। बाजपेयी ने कहा कि लखनऊ में ज़बान की एहतियात का बहुत ध्यान रखा जाता है। वहां जबान एक तहज़ीब है। शब्द ब्रह्म है, तो लखनऊ में केवल लिखे हुए नहीं बोले हुए शब्द की अहमियत है। लखनऊ में जिनके पास काम नहीं था, पर अगर बातें करने का फ़न था, उन्हें भी फ़नकार माना जाता था। ज़बान की एक संजीदगी होती है। उन्होंने

Vinti Kathuria, Shweta Bansal and Chandni Chopra

Jyoti Chitkara

जीवन में ट्रेडिशन के महत्त्व पर जोर दिया। बाजपेयी ने कहा कि हर आर्ट फार्म में पॉलिटिक्स तो होती है। लखनऊ में दो तरह के लखनऊ हैं। लखनऊ की ज़बान उसका तौरतरीका है।

बाजपेयी ने अमृतलाल नागर से जुड़े सवाल का भी उत्तर दिया। उन्होंने कहा कि वे उनके लिए एक गुरु जैसे थे। उन्होंने लखनऊ पर कितनी किताबें लिखीं। मैं ज़िंदगी भर ऐसी कोशिश करने को तैयार हूं कि उनकी तरह लिख सकूं।। मैं चाहता हूं कि लोग मेरी लिखाई में उनकी खुशबू सूंघे, मैं नागर जी का दीवाना हूं। बाजपेयी ने अपनी जड़ों से जुड़े रहने पर बल दिया और स्वीकारा कि शो की व्यस्तताओं के चलते वे किताबें नहीं लिख पाते। बाजपेयी ने सवाल-जवाब सत्र में दर्शकों के सवाल का भी उत्तर दिया। कार्यक्रम के अंत में अरुण डांग ने अतिथि वक्ता और संवादकर्ता का अभिनंदन किया। **अहसास** वूमेन आगरा श्वेता बंसल ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

***अहसास** वूमेन के सौजन्य से आयोजित **कलम** आगरा के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। आईटीसी मुगल और दैनिक जागरण का सहयोग मिला।*

राजस्थानी और राजस्थान ने देश को भाषा और ग्रंथ संग्रह के संस्कार दिए: डॉ श्रीकृष्ण 'जुगनू'

राजस्थानी को हटा दें तो आपके पास भाषा ही कहां है? राजस्थान तो वह धरती है जहां बोलियां ही बोलियां है। राजस्थान को तो मैं बोलियां का संग्रहालय मानता हूं।" यह कहना है राजस्थानी भाषा के साहित्यकार श्रीकृष्ण 'जुगनू' का, जो **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा *ग्रासरूट मीडिया फाउंडेशन* के सहयोग से आयोजित **'आखर'** में अपने कृतित्व व व्यक्तित्व पर कला समीक्षक एवं चित्रकार चेतन औदिच्य से संवाद कर रहे थे। 'जुगनू' ने बताया कि मेरे पिताजी ने अपने जीवनकाल ने एक लाख से अधिक भजन लिखे, उनसे प्रेरित होकर ही मुझे लिखने की प्रेरणा हुई। लेखन मुझे विरासत में मिला है और कविताएं मेरे खून में है, इसलिए मैं खुद को एक अनुवांशिक लेखक मानता हूं। मेरी पहली किताब सन् 2003 में प्रकाशित हुई और अभी तक 200 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

Abhilasha Pareek

Pramod Sharma

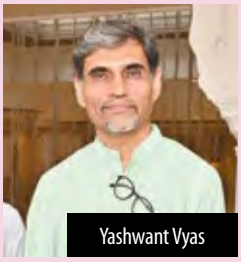
Yashwant Vyas

Pramod Verma

राजस्थानी के अलावा संस्कृत, पाली, हिंदी और अंग्रेजी भाषा में भी लेखन करने वाले जुगनू ने अपनी साहित्यिक यात्रा से जुड़े सवाल का उत्तर यों दिया, "उदयपुर से चित्तौड़ तक बहने वाली बेड़च नदी को वहां के लोग अपनी मां और बाकी सभी नदियों को अपनी मौसी के रूप में मानते हैं। इसी नदी के किनारे आयड़ सभ्यता पनपी जो मेवाड़ से लेकर मालवा तक विद्यमान रही। लिखने की शुरुआत मैंने कविताओं से की क्योंकि मेरे पिता भी कविताएं ही लिखते थे। लेकिन मुझे लगा कि साहित्य केवल कविता तक ही सीमित नहीं है। मुझे घर पर अधिकतर धार्मिक ग्रंथ ही देखने को मिले। उक्ति रत्नाकर देखने के बाद मुझे लगा कि राजस्थानी संस्कृत के सर्वाधिक निकट है। यहां सरस्वती नदी बहने के कारण यह सारस्वत प्रदेश रहा है। वेद से लेकर पुराणों और मानवीय महत्त्व के अनेक ग्रंथ राजस्थानी में है। राजस्थानी भाषा और राजस्थान ने देश को भाषा और ग्रंथ संग्रह के संस्कार दिए हैं। इसी कारण मुझे लगा कि मैं राजस्थानी में कार्य करूंगा। निमाड़ से लेकर मारवाड़ तक गाया जाने वाला गीत *'संझ्या थारै घर जा'* एक शैली और एक ही लय है। इसी तरह जयपुर के गलता में संत अनंतदास जी ने परिचय साहित्य का सृजन किया जो बहुत विलक्षण है। उन्हीं की प्रेरणा से रैवासा पीठ के नाभादास जी ने भक्तमाल लिखा है। ऐसा ही अन्य साहित्य भारत की सांस्कृतिक एकता का परिचायक है।"

राजस्थानी भाषा परम्परा शस्त्र और शास्त्र का समन्वय करती है, आपका क्या कहना है? के उत्तर में जुगनू ने कहा, "राजस्थानी भाषा में साहित्य का खजाना है। राजस्थान राज्य प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान इसका उदाहरण है जिसमें राजस्थानी के बहुत से ग्रंथ हैं। गोपाल नारायण बोहरा बहुत बड़े विद्वान हुए हैं। पूरे देश में जितने शिलालेख और ताम्रपत्र हैं, उसकी तुलना में राजस्थान में कई गुणा अधिक ताम्रपत्र हैं। इस मामले में राजस्थान समृद्ध इलाका है, भाषा की दृष्टि से धनाढ्य प्रदेश है, यह बात अलग है कि हम चर्चा ही नहीं करते हैं।" राजस्थानी भाषा पोथियों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि दीवारों पर, मंदिरों में, शिलालेखों पर भी है। आपका क्या कहना है? जुगनू ने बताया कि देश में चित्तौड़ ऐसा इलाका है जहां पर 100 से अधिक किले हैं। छोटे से लेकर बड़े तक 200 श्लोकों तक, यहां तक कि महाकाव्य वाले शिलालेख भी है। कीर्ति स्तम्भ, जिसे हम विजय स्तम्भ कहते हैं। आबू, सिरोही, बूंदी, राग प्रशस्ति, राजसमंद की पाल पर और ऐसे ही अन्य शिलालेख हैं। इनमें से अधिकतर शिलालेखों पर राजस्थानी में ही लिखा गया है। इन पर राजस्थानी भाषा के स्वरूप की जानकारी मिलती है और यह पूरे राजस्थान में है। राजस्थान में इस पर काम ही नहीं हुआ है।

कविता से जुड़े सवाल पर जुगनू ने बताया कि मैंने मंच पर 20 साल कविता पाठ किया है। फिर मुझे लगा कि मुझे एक रात का कवि नहीं बनना है। उन्होंने काव्य मंच पर चर्चित होने वाली 1978 में लिखी एक कविता का जिक्र किया, और उसे सुनाया भी। उन्होंने कहा कि राजस्थानी चाहे कविता हो या साहित्य कई दृष्टियों से अपूर्व है। मेरी मायड़ भाषा है मुझे लगता है कि इसकी जितनी सेवा कर सकें वह कम है। इसमें 263 प्रकार के गीत केवल रघुवर्चस्व प्रकाश में है कि रघुनाथ जी का चरित्र हम इस प्रकार लिख सकते हैं।

राजस्थानी पोथियों और पांडुलिपियों के सर्वेक्षण और सूचियों से आम जनता को क्या लाभ मिला है? के उत्तर में जुगनू ने कहा कि राजस्थानी में ऐसा कोई विषय नहीं है जिस पर लेखन नहीं हुआ हो। राजस्थानी में जितनी विविधता, कविता, विधा पर काम हुआ है, वह सब इसके संग्रह पोथी भंडारों में मौजूद है। राजस्थान राज्य प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान इसका उदाहरण है। इसमें राजस्थानी के साथ अन्य भाषाओं का लेखन भी मौजूद है। राजस्थानी में बहुत सारा तकनीकी ग्रंथ और वास्तु है, पर जयपुर का वास्तु चित्तौड़ के वास्तु से अलग है। इस वास्तु से संबंधित बहुत से ग्रंथ हमारे साहित्य में मौजूद हैं। वास्तु पर 100 किताबें राजस्थानी में है। रत्नशास्त्र का पहला अनुवाद राजस्थानी में ही मिलता है। देश में संस्कृत और अन्य भाषाओं से अनुवाद सबसे पहले राजस्थानी में ही शुरू हुआ। यह हमारे लिए गर्व की बात है। राजस्थान सिद्धांत और व्यवहार का प्रदेश है। राजस्थान की बोलियों में जितना आपसी समन्वय है वह अन्य प्रदेशों में नहीं है।

कार्यक्रम के दौरान श्रीकृष्ण 'जुगनू' ने अपनी प्रमुख पुस्तकों *'चितौड़गढ़ का इतिहास'*, *'मेवाड़ का प्रारम्भिक इतिहास'* और *'लिछमी पण म्हारी लक्ष्मण कार और गीत म्हारा'* कविताओं को पाठ भी किया।

__प्रभा खेतान फाउंडेशन__ और ग्रासरूट फाउंडेशन की ओर से आयोजित __आखर__ राजस्थान के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर आईटीसी राजपूताना का सहयोग मिला।

Gratitude Springs From The Soul

Suchita Maheshwari

"Acknowledging the good that you already have in your life is the foundation of all abundance."

— Eckhart Tolle

When you go deep into the present, gratitude arises spontaneously, even if it's just the gratitude for breathing, or the liveliness you feel in your body. Gratitude is when you acknowledge the aliveness of the present moment. That's the foundation for successful living. You play a significant role in what is good in your life. Your talent and skills bring an abundance of goodness in other forms: some internal, like happiness, and some external, like respect. The tricky part is to thrive and reach your full potential, and for that, you must have confidence in your goodness, talent and skill. Confidence comes from a deeper understanding of yourself. And knowing that you are good, talented and skilled will foster abundance. Believing that you can do a good job is one of the first crucial steps to doing a good job, in any area of life. If you're a student, knowing you can ace the test is going to make studying for the test a breeze. If you're a basketball player, knowing you can sink a free throw is going to help you sink the free throw. If you're in an interview, knowing you are the best person for the job will help you secure that job.

Every September 21, people worldwide celebrate Gratitude Day. Busy with the rat race, we forget to thank the Lord for what we have. The feeling of gratitude and the meaning of a 'thank you' are nearly lost today. To awaken these lost spirits, **Prabha Khaitan Foundation**, under its **Muskaan** initiative, celebrated World Gratitude Day with the students of Classes III and IV. Suchita Maheshwari graced the event with her august presence. Ms Maheshwari is an MCM, EQ, mental health and PQ RAKtivist — a member of the Random Acts of Kindness community. Their mission is to spread smiles all around the world. Ms Maheshwari wished for everyone to know that they have the strength to better the world by practising small acts of kindness. She told the children that gratitude is a feeling or showing an appreciation for something done or received.

The session started with a lovely speech by the Foundation's Student Programme Advisor, Sumitra Ray, where she introduced the purpose of the session and the host to the audience. This was followed by learning activities and games, one of them being the 'Gratitude Garden', which had four levels. At each level, we had to name five things we are grateful for to move to the next level. Each level had its own feelings: for example, the feeling of being angry in Level 1, which shifted to the feeling of frustration in Level 2. The children had to pass virtual places like the Frowny Forest and the Swarm. They came up with so many things they were grateful for, and it was heart-warming to see them realise the importance of the people, privilege and other things in their lives. The fourth level was the Gratitude Garden, where children discovered the Gratitude Pebble. This can calm you down, irrespective of the situation or your age. When you start becoming restless, you just need to close your eyes, rub the pebble and think of things you are thankful for. Your mind may not work in that given situation, but you can always be thankful for your possessions and position. It is easy to be sad, but it takes courage to be happy and determination to be grateful. Gratitude can do wonders and lift your mood, as it fills your heart with joy.

The enthusiastic participation of the children showed how they are ready to accept new feelings. They will be true to themselves and be grateful for what they have, be it gratitude for friends, parents, teachers, family members and school, or material things like a phone, internet, tables and chairs. Ms Maheshwari even suggested that children share their observations with their parents and carry the Gratitude Pebble so that it can calm them down in dull moments. The games and the Gratitude Pebble fostered interest in the young minds and kept them glued to their screens throughout the session. If anyone asks me what gratitude is, my reply would simply be, "Gratitude is a feeling that gives me a reality check at my lows and binds me to my roots during my highs."

Tanesha Choraria
Class XI, Sri Sri Academy

***Muskaan** is presented by Shree Cement Ltd*

Bengal's Flame Of Love For Puja Sahitya

Tilottama Majumder

Tanmoy Chakraborty

Soumitra Mitra

Durga Puja is that time of year that everyone in Bengal looks forward to. **Prabha Khaitan Foundation** organised a special session of **Aakhar** at The Conclave to entertain the audience with an evening of conversations titled *Sharad Sahitya*. This was a festive literature meet featuring renowned Bengali novelist Tilottama Majumder and columnist Tanmoy Chakraborty, both of whom discussed literature and publications around festivals, including the *Pujabarshiki*. The *Anandamela Pujabarshiki* is a special-edition festival publication by Ananda Publishers that captures the essence of Durga Puja. The guests were eager to know more about Majumder's novel, which was released in this year's edition.

> "Even Satyajit Ray's *Feluda* was first published as a *puja* edition. The *Pujabarshiki* has done an amazing job in keeping the spirit of festive literature alive. *Sharad sahitya* has become prominent in Bengali literature and culture
> — **Tilottama Majumder**"

The discussion on festive literature, the evolution of Durga Puja and the changing trends of *puja sahitya* was attended by several dignitaries and renowned personalities. Saiful Islam introduced the event, and theatre stalwart and the Foundation's Advisor for Bengali Language, Theatre and Film Programmes, Soumitra Mitra, delivered the inaugural address to the guests of honour and the audience. "*Sharad* literature is an integral part of Bengali literature. That's why the Foundation and Purba Paschim continued this initiative during the pandemic *via* digital platforms," he remarked. Majumder and Chakraborty discussed the origins of *Pujabarshiki*, and its rise in popularity among the masses. Chakraborty took the opportunity to praise Shirshendu Mukhopadhyay's sci-fi novel which was also published in this year's edition. He pointed out that *Sharad sahitya* or *puja sahitya* dates back to the pre-Independence era, when a lot of it consisted of patriotic poems and verses.

"Even Satyajit Ray's *Feluda* was first published as a *puja* edition," said Majumder. "I would say that the *Pujabarshiki* has done an amazing job in keeping the spirit of festive literature alive. *Sharad sahitya* has become prominent in Bengali literature and culture, so the tenfold rise in *Pujabarshiki*'s readership in the past decade is not surprising. But I worry about the quality and its representation in the future, as I see the focus shifting more towards business and profit rather than the audience's entertainment."

"Modern-day authors are compelled to accept the terms and conditions laid down by publishing houses to avoid rejection," she continued. "The word limit is restricted, and writers need to follow guidelines and face redlining, whether it's prose or poetry. Unnecessary and unjustified conditions restrict creative thinking and the flow of the writing process, ultimately affecting the quality of a writer's work." The evening did, however, end on a positive note — to mark the beginning of the *Sharad Utsav,* the author treated everyone in attendance to a melodious rendition of Rabindrasangeet before the closing speech was delivered.

Saiful Islam

Gautam De

***Aakhar** Kolkata was presented by Shree Cement Ltd in association with* Anandabazar Patrika *and Purba Paschim*

मुझे लगा अधूरी चीजों का देवता तो मैं खुद हूं: गीत चतुर्वेदी

"हमारा जीवन दरअसल पूरा होने का भ्रम देता है, पर हम अधूरा जीवन जी रहे होते हैं। हमारी सारी कहानियां अधूरी होती हैं।" यह कहना है कवि–लेखक गीत चतुर्वेदी का, जो **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित **कलम** हैदराबाद में उपस्थित थे। आयोजकों की ओर से मानसी मलिक ने चतुर्वेदी का स्वागत करते हुए फाउंडेशन की गतिविधियों की विस्तार से चर्चा की। अतिथि वक्ता का परिचय देते हुए मलिक ने बताया कि चतुर्वेदी ने अब तक ग्यारह पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें दो छोटे उपन्यास संग्रह और तीन कविता संग्रह शामिल हैं। आपके कविता संग्रह *'न्यूनतम मैं'* और *'ख़ुशियों के गुप्तचर'* को हिंदी जगत में खूब सराहना मिली। आपकी रचनाओं के अनुवाद करीब 22 देशी–विदेशी भाषाओं में हो चुके हैं। आपकी कृति *'सिमसिम'* के अंग्रेज़ी अनुवाद को अंतर्राष्ट्रीय संस्था पेन अमेरिका का *'पेन–हैम ट्रांसलेशन ग्रांट'* मिल चुका है। आपकी कई रचनाएं अमेरिका के छह विश्वविद्यालयों के प्रकाशनों में शामिल हैं। कथा लेखन के लिए आप सैयद हैदर रज़ा फैलोशिप, कविता के लिए भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, कथा के लिए कृष्ण प्रताप पुरस्कार, शैलेश मटियानी पुरस्कार और कृष्ण बलदेव वैद फैलोशिप से सम्मानित हैं।

मलिक ने आगे के संवाद के लिए अहसास वूमेन इंदौर उन्नति सिंह को आमंत्रित किया। सिंह ने *'अधूरी चीजों का देवता'* पुस्तक के शीर्षक की तारीफ करते हुए पूछा कि आपने इस पुस्तक का ऐसा नाम क्यों रखा? अधूरेपन से आपका क्या कहना है? उत्तर में चतुर्वेदी ने फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ की इस नज़्म–

वो लोग बहुत खुश–किस्मत थे
जो इश्क़ को काम समझते थे
या काम से आशिकी करते थे
हम जीते जी मसरूफ़ रहे
कुछ इश्क़ किया, कुछ काम किया...
काम इश्क के आड़े आता रहा
और इश्क से काम उलझता रहा
फिर आखिर तंग आ कर हमने
दोनों को अधूरा छोड़ दिया।

का जिक्र करते हुए कहा कि फ़ैज़ के साथ ही दुनिया के तमाम दार्शनिकों का, शायरों का, कवियों का यह मानना है कि हम कुछ भी पूरा नहीं कर पाते। हो सकता है हमारी मृत्यु हो जाए। सदियों पहले कालीदास का निधन हो गया पर क्या कालीदास की कहानी पूरी हुई है? क्या लैला–मजनू की कहानी कभी पूरी हुई है? मेरी अपनी पूरी जिंदगी अधूरे कामों का संग्रह है। मेरी कई कृतियां अधूरी हैं, कई सारी मुलाकातें अधूरी हैं। उस अधूरेपन को शब्द देने की कोशिश में इस किताब की रचना हुई। अरुंधती रॉय की किताब *'द गॉड ऑफ स्माल थिंग्स'* के हिंदी अनुवाद का नाम था *'मामूली चीजों का देवता'*, मुझे लगा अधूरी चीजों का देवता तो मैं खुद हूं। वहीं से ये विचार आया था।

(L-R) Mourya Boda, Mansi Malik and Anjum Babukhan

सिंह के इस सवाल पर कि आपके लेखन में मृत्यु या लास का जिक्र बहुत बार आता है, आप इससे इतना क्यों प्रभावित हैं? चतुर्वेदी का उत्तर था, "मृत्यु बहुत आकर्षित करती है। मुझे ऐसा लगता है कि दुनिया के जो तमाम बुद्धिजीवी हैं, कलाकार हैं वे कहीं न कहीं का मृत्यु से एक खास रिश्ता होता है, क्योंकि वे कविता, कहानी या कला में इसलिए जाना चाहते हैं कि वे मृत्यु को चुनौती दे रहे होते हैं। कविता या कहानी हमें अमर बना देती हैं। अगर हम कविता, कहानी, चित्र या फिल्म के किरदार बन गए तो भले ही हमारी मृत्यु हो जाती है, पर हमारी कहानी चलती रहती है। हम अमर बने रहते हैं। कवि बड़े जादूगर की तरह होते हैं। अगर वे किसी को अपनी कविता में जगह दे दें तो वह अमर हो जाता है। कहीं न कहीं मौत से एक प्रतिस्पर्धा है। मेरी कविता में भी मृत्यु को लेकर एक आब्शेसन होता है। यह एक अनसुलझी गुत्थी है, जिसे न साइंस सुलझा पाया न ही दर्शन। *छांदोग्य उपनिषद* का एक किस्सा है। तब तक देवताओं को अमरत्व मिला नहीं था। समुद्र मंथन हुआ नहीं था। मृत्यु देवताओं के पीछे पड़ गई, तो देवताओं ने छंदों के भीतर छिपा लिया। *छांदोग्य उपनिषद* का ऋषि कहता है कि ये छंद देवताओं को बुरी मृत्यु से बचा लेगा। जब कविता देवताओं को बचा सकती है तो हम मनुष्य क्या हैं।

चतुर्वेदी ने चार्ली चैप्लिन के प्रति अपनी दीवानगी और उनके प्रेम के बारे में बताया और कहा कि उनका प्रेम भी ट्रैजिक स्टोरी में बदल गया। चतुर्वेदी का कहना था कि कई बार हम इनसानों से कम छवियों से प्यार करते हैं। लेखकों को अपनी एक्स्टेंडेड फैमिली बताने से जुड़े सवाल का भी चतुर्वेदी ने उत्तर दिया और प्रेमचंद, टालस्टाय, कामू आदि लेखकों का भी जिक्र किया और अर्ध नारीश्वर, अहं ब्रह्मास्मि, अद्वैत, संवाद और संगीत, कविता या गद्य पर अपनी बात कही। चतुर्वेदी ने कहा कि मेरा पहला प्यार कविता, कहानी या पोएट्री नहीं था, म्यूजिक था। उन्होंने स्मृति, भविष्य, कल्पना और यथार्थ को उद्धरण के साथ बताया। उन्होंने कहा कि प्रेम परिभाषाओं से दूर है। यह जानने–समझने की नहीं अनुभव करने की चीज है। चतुर्वेदी ने आग्रह पर कुछ कविताएं भी पढ़ीं, जिनमें कोविड काल के दौरान पिता को खोने पर लिखी ये पंक्तियां भी शामिल थीं।

जब तुम मर जाओगे
सूर्य में समा जाएगी तुम्हारे नेत्रों की ज्योति
तुम्हारी सांसें अपने जैसी हवाओं को खोज
उनसे दोस्ती करेंगी...

चतुर्वेदी ने सवाल–जवाब सत्र में श्रोताओं के सवालों के भी उत्तर दिए और दुनिया की सभी भाषाओं का सम्मान करने की आवश्यकता पर बल दिया। **अहसास** वूमेन हैदराबाद अंजुम बाबूखान ने धन्यवाद ज्ञापित किया। आयोजकों की ओर से पुष्पा बंसल ने चतुर्वेदी का अभिनंदन मधुबनी शॉल से किया।

__अहसास__ वूमेन के सौजन्य से आयोजित __कलम__ हैदराबाद के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर हैं आईटीसी कोहिनूर।

Shrayana Bhattacharya

Blending Bollywood and Economics

Mohua Chatterjee

The word 'economics' inspires in our minds the names of revered economists like Amartya Sen, Manmohan Singh, Raghuram Rajan and, more recently, Abhijit Banerjee. What it also invokes are myriad images of scholarly books and articles dealing with concepts which lie beyond the layman's ambit of understanding. The scope of the subject condenses the everyday stories of the lives of the people into statistics, which only a select group of people can comprehend. However, Shrayana Bhattacharya, in her book, *Desperately Seeking Shah Rukh: India's Lonely Young Women and the Search for Intimacy and Independence*, moves beyond the academic jargon of economics and tells the stories of India's working women through their understanding of the Bollywood star, Shah Rukh Khan, in a way that they become at once riveting and impactful. **Prabha Khaitan Foundation** organised another session of **An Author's Afternoon** with Shrayana Bhattacharya at the Taj Bengal.

An economist at the World Bank's social protection and labour unit for South Asia, Bhattacharya has based her book on how women experience the Indian economy, analysed through their love and adoration for Khan and his films. In conversation with the author was Mohua Chatterjee. Bhattacharya spoke about the resilience of India's working women and their aspirations for achieving economic freedom. The session was introduced by Shefali Rawat Agarwal, **Ehsaas** Woman of Kolkata.

How did writing come to an economist? Bhattacharya admitted that she had always been a "hobby writer", and she loved the "act of writing". "I never thought that I was writing a book, I thought that I was writing a series of journal entry notes," she explained. On the subject of economic inaccessibility, she pointed out, "The economy is not about men wearing suits and discussing numbers and the investment climate. The economy is all about all of us gathered here. It is a set of everyday, intimate interactions."

> "In my book, Shah Rukh Khan became a metaphor – nobody was talking about him. The women were talking about how they struggled to find money to watch him in a movie. Talking about their favourite film star became an unusual way to talk about women's access to economic independence. They are looking for men who are reciprocal and supportive; they are looking for a family and a society that values their work. The women use his films and interviews to express these things"

It was only when Bhattacharya was sent to the slums of Ahmedabad to conduct a survey on the garment and *agarbatti* workers that she found out that women were tired of being asked

the same questions and facing the subsequent inaction. These women, she realised, were looking for a livelier conversation that allowed them to talk about themselves and their daily lives. She soon found out that it was their love for Shah Rukh Khan and his films that they wanted to talk about, and that which ran as a common thread between them.

"Khan became a metaphor – nobody was talking about him," said Bhattacharya. "The women were talking about how they struggled to find money to watch him in a movie. Talking about their favourite film star became an unusual way to talk about women's access to economic independence. They are looking for men who are reciprocal and supportive; they are looking for a family and a society that values their work. The women use his films and interviews to express these things." Thus, in Bhattacharya's book, Khan does not remain an icon; he becomes a prism through which the author explores the lives of women who are united in their aspirations and adoration for the actor.

> When we start talking about women's issues, men become reluctant. They are also reluctant to help with household work, resulting in a world where women are stuck in low-paid or unpaid jobs at home. Women not only pay higher taxes for living alone, but also pay an emotional tax because they are made to feel isolated and judged for desiring a life outside the home

"There'd be no GDP without women," remarked Bhattacharya, while talking about how women's labour is grossly undervalued and underpaid in the country. "Who's raising our workforce? Who's feeding them and taking care of them? In India, 64% of women's work is unpaid." She added that men contribute significantly to the problem. "When we start talking about women's issues, men become reluctant," she said. "They are also reluctant to help with household work, resulting in a world where women are stuck in low-paid or unpaid jobs at home. Women not only pay higher taxes for living alone, but also pay an emotional tax because they are made to feel isolated and judged for desiring a life outside the home."

Highlighting the difference between the salaried and propertied classes of the country, Bhattacharya pointed out that the difference between the two classes is so high that those who do not own property suffer from the anxiety of making it in life. "All the women in the book are trying to own a home to have that sense of stability, and none of them actually come from a property-owning background," she said. "SRK struggled with rentals and built his house, Mannat, which is why all these women stand outside Mannat and stare at it." Thus, Shah Rukh Khan's success serves as an inspiration to all the women desperately wanting to make it in life. Bhattacharya's concluding comment said it all: "They say never meet your heroes, but if it's Shah Rukh Khan, you definitely should!" The session came to a close with Anindita Chatterjee, Executive Trustee of the Foundation, delivering the vote of thanks, and Bhattacharya and Chatterjee being felicitated by Pooja Poddar.

> This was such a joyful and enriching experience! I learned a lot and it was so wonderful meeting different women and hearing their experiences! The team from **Ehsaas** and **Prabha Khaitan Foundation** took such great care of me and my ideas. I look forward to the next!
>
> **— Shrayana Bhattacharya**

An Author's Afternoon *was presented by Shree Cement Ltd in association with Taj Bengal Kolkata and* The Telegraph Online—My Kolkata

A still from the film *Pokchi*

Raising awareness about red panda conservation

The Day Of the Red Panda

International Red Panda Day is celebrated every year on the third Saturday of September in order to spread awareness about the declining numbers of the red panda population. As of 2022, less than 10,000 red pandas remain across the globe. **Prabha Khaitan Foundation**, under its **Muskaan** initiative**,** celebrated International Red Panda Day on September 23. A session different in tone, this one was informative, illuminating and, most of all, fun.

The session started with the Foundation's beautiful anthem, followed by a formal introduction. Neha Raghav took over the proceedings and started with a slideshow presentation on red pandas. She taught the audience a lot about the World Wildlife Fund (WWF) and the fire cats, instantly bringing out the enthusiasm in the audience.

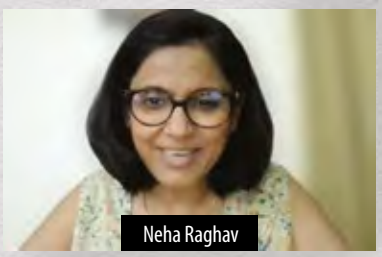

Neha Raghav

Red pandas, found mostly in the eastern Himalayas and in Sikkim, are small, almost cat-sized mammals covered in reddish brown fur on their back and black fur on their bellies and legs. But, despite their name, red pandas aren't actually pandas! "They're called red pandas because they eat bamboo just like the giant pandas," explained Ms Raghav. She went on to talk about how red pandas are endangered, having faced a 50% decline in their population in the last two decades, owing to climate change, deforestation and entrapment by locals living in the eastern Himalayan regions. "We are connected to nature and nature is connected to us," she said, while elaborating on the need to protect red pandas. "While there isn't much we can do sitting in our homes, spreading awareness is helpful and important."

Next came the much-awaited moment for the young audience — the screening of the short film, *Pokchi: The Red Panda*, which took us on a trip across Sikkim! The red panda is Sikkim's state animal. From bamboo-eating red pandas that spend most of their time on trees, to the fields and mountains of the beautiful state, the film explored the flora and fauna of Sikkim, covered the diversity of its animals and birds, and was a splendid visual experience!

Before ending the session, Ms Raghav conducted an interactive quiz to see what the audience had learned. And the participants did not disappoint! The chat box of our Zoom session overflowed with responses. It was wholesome to witness the excitement with which everyone communicated. As the session concluded, it was clear that the attendees left with much more information about the adorable little critter, giving us hope of raising more awareness about red pandas and their survival, thus fulfilling the purpose of the gathering.

Anushka Sachdeva
Class XI, The Palace School

*This session of **Muskaan** was presented by Shree Cement Ltd in association with WWF*

Why Indian Women Love Shah Rukh Khan

Shrayana Bhattacharya

Madhuri Halwasiya

Shrayana Bhattacharya has earned fame and accolades not just for her acumen as an economist, but also for the unique way in which she has explained Indian women's relationship with the country's economy — through the prism of India's biggest Hindi film superstar, Shah Rukh Khan. **Prabha Khaitan Foundation** held its first ever Kanpur session of **The Write Circle** at The Landmark Hotel in the city, with Bhattacharya as the guest. The economist at the World Bank's social protection and labour unit for South Asia was in conversation with Madhuri Halwasiya, **Ehsaas** Woman of Lucknow.

The event began with Geeta Malhotra, **Ehsaas** Woman of Kanpur, welcoming Bhattacharya and introducing her to the audience. The author has been trained in development economics at Delhi University and Harvard University, and her work focuses on issues related to social policy. She has worked on research projects with bodies such as the Centre for Policy Research, SEWA Union and the Institute of Social Studies Trust. Her writings have appeared in *The Indian Express*, the *Economic and Political Weekly*, the *Indian Quarterly* and *The Caravan*. With Halwasiya, Bhattacharya discussed her book, *Desperately Seeking Shah Rukh: India's Lonely Young Women and the Search for Intimacy and Independence.*

On the subject of her book, Bhattacharya pointed out that even though the title mentions the iconic Shah Rukh Khan, *Desperately Seeking Shah Rukh* is, in fact, not about him. In the course of her research, she realised that Khan becomes the lens through which the women of India negotiate with their daily challenges, and try to fulfil their aspirations and ambitions. While interacting with the audience, Bhattacharya admitted that women are usually too harsh on themselves, and are conditioned to take responsibility when anything goes wrong — a trait that is detrimental to their well-being. Her book, thus, presents a powerful commentary on the lives of Indian women and the way they deal with societal and economic inequities. Most importantly, it provides women with a toolkit to navigate the changing landscape of the Indian economy and society in their search for freedom and happiness.

> “Even though the title of my book mentions the iconic Shah Rukh Khan, *Desperately Seeking Shah Rukh* is, in fact, not about him. In the course of my research, I realised that Khan becomes the lens through which the women of India negotiate with their daily challenges, and try to fulfil their aspirations and ambitions. Women are usually too harsh on themselves, and are conditioned to take responsibility when anything goes wrong — a trait that is detrimental to their well-being”

Geeta Malhotra

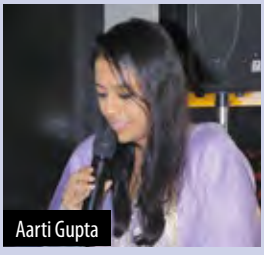
Aarti Gupta

Kanika Vaid

The event concluded with Aarti Gupta, **Ehsaas** Woman of Kanpur, delivering the formal vote of thanks, followed by a book-signing session by the author.

***The Write Circle** Kanpur is presented by Shree Cement Ltd in association with* Dainik Jagran, *The Landmark Towers and with the support of **Ehsaas** Women of Kanpur*

"There are two powers in the world; one is the sword and the other is the pen. There is a third power stronger than both, that of women." These were the words of the youngest Nobel laureate, Malala Yousafzai, who is an example of a girl child who fought for her right to education, and succeeded. Indeed, what happens when you combine women and education? There is no force more powerful than an educated woman who has had access to opportunities to develop her faculties. Yousafzai, who hails from Pakistan, had been attacked by the Taliban for daring to go to school. In spite of her severe injuries, she survived to tell her incredible story. Not only did she go on to complete her education, but she also inspired millions of girls like herself to fight their circumstances and demand better opportunities. She also used her voice to urge world leaders to take action to secure a brighter future for thousands of girls who are still struggling for the most basic necessities. Today, Yousafzai is a force to reckon with, and is respected by children and adults alike for her intelligence and vision.

While Yousafzai is one example of a girl child who took the lead, she isn't the only one. With the climate crisis looming large, there is one voice that has been consistent in raising awareness. Greta Thunberg's name is synonymous with climate and environmental activism, and she has emerged as one of the most important voices putting pressure on world leaders to take immediate action to counter climate change. The Swedish activist shocked the world with her speech during the plenary session of the 2018 United Nations Climate Change Conference (COP24), when she held MNCs and world leaders responsible for the reprehensible condition of the Earth's environment and the impending climate crisis. She, too, encouraged children across the globe to protest against the actions of adults today that are jeopardising the futures of young people.

When girls are empowered, they grow into women who become key players in society. Sanna Marin, the Prime Minister of Finland, is the country's youngest politician, indeed one of the youngest in the world. Similarly, Jacinda Arden, the Prime Minister of New Zealand, Kamala Harris, the Vice-President of the United States of America, and Nagua Alba, the youngest member of the Spanish parliament, among many others, have become examples of women holding important political positions the world over, and are crafting important resolutions for women's uplift and empowerment.

Closer home, Indian women have been at the forefront of leading global companies as CEOs and

MDs. Leena Nair, CEO of Chanel, Roshni Nadar Malhotra, Chairperson of HCL Technologies and CEO of HCL Corporation, Sharmistha Dubey, CEO of Match Group, and Aruna Jayanthi, Managing Director, Capgemini Canada and Latin America, are some of the most powerful women in the country and in the world of business. As trailblazers in their fields, they have proved that women are just as capable as their male counterparts in their professions. Having shattered several glass ceilings, these figures have become role models for young Indian women.

On December 19, 2011, the United Nations General Assembly adopted Resolution 66/170 declaring October 11 as the International Day of the Girl Child, bringing to attention the challenges that are faced by girls across the world. The occasion is centred on the belief that adolescent girls, when allowed a safe environment to thrive, study and be healthy, end up becoming the leaders of tomorrow. This day also seeks to raise awareness about the fact that investing in girls' rights today ensures a fair and non-partisan future for all. The vision sees all girls working towards solving global crises. And yet, even though 2022 marks the 10th anniversary of the Internal Day of the Girl Child, girls all over the world still face challenges.

ARTWORK BY **SUDIPTA KUNDU**

"Some of the biggest challenges to girls' education continue to be poverty, gender-based violence and child marriage, all of which especially plague countries in South Asia and Africa. These challenges have been exacerbated by humanitarian conflicts around the world, the Covid-19 pandemic and the climate crisis. And while the International Day of the Girl Child also celebrates the ability girls have to overcome even the worst difficulties, the responsibility of equipping girls to become equal global citizens lies with everyone"

In its State of World Population Report, 2020, the United Nations Population Fund reported that the number of "missing" women is 14.2 crore, which shows that the evil of female foeticide and infanticide still thrives. The UN also points out that around the world, 129 million girls are out of school, including 32 million of primary school age, 30 million of lower-secondary school age, and 67 million of upper-secondary school age. Only 49 per cent of countries have achieved gender parity in primary education, 42 per cent in lower secondary education and a mere 24 per cent in upper secondary education. Some of the biggest challenges to girls' education continue to be poverty, gender-based violence and child marriage, all of which especially plague countries in South Asia and Africa.

These challenges have been exacerbated by humanitarian conflicts around the world, the Covid-19 pandemic and the climate crisis. And while the International Day of the Girl Child also celebrates the ability girls have to overcome even the worst difficulties, the responsibility of equipping girls to become equal global citizens lies with everyone. Each of us must support the women around us in our own ways. Maya Angelou said, "I'm a woman. Phenomenally. Phenomenal woman. That's me." **Prabha Khaitan Foundation** echoes this sentiment, and believes in celebrating the indomitable spirit and resilience of girls not just on the International Day of the Girl Child, but every day.

1947: A History of Human Experiences

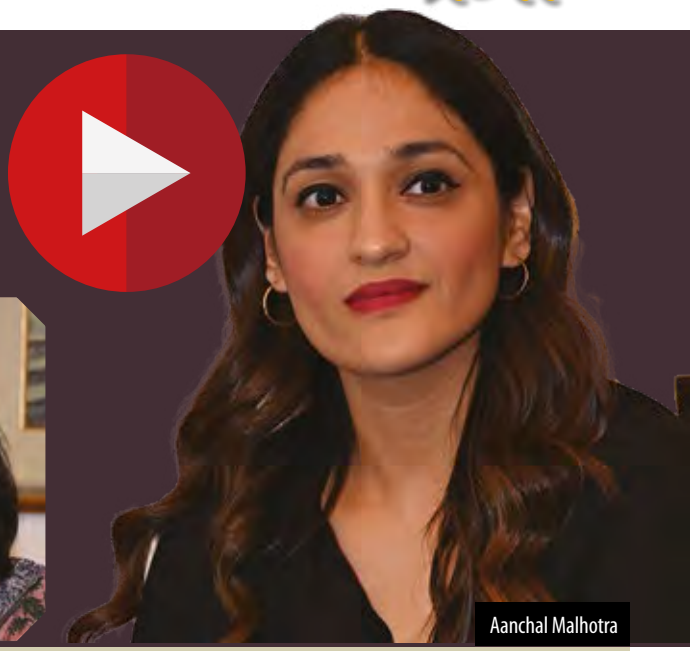

Vaidehi Singh

Aanchal Malhotra

History teaches us what's written in the official records. It was never about the human experience. Younger generations need to know about those experiences." These were the words of author Aanchal Malhotra, whose award-winning first book, *Remnants of a Separation,* takes a unique and sensitive look at Partition. Malhotra is an oral historian who believes that the repercussions of the Partition of India have been felt across generations, and continues to have an impact on our lives even today. *Remnants of a Separation* documents stories and experiences related to what is possibly the most pivotal event in the history of the Indian subcontinent. **Prabha Khaitan Foundation** organised a special session of **The Write Circle** in Jaipur, where Malhotra discussed the book and her experience of writing it. In conversation with her was Vaidehi Singh, the Founder-Principal of Maharaja Sawai Bhawani Singh School, Jaipur.

Malhotra acknowledged that dealing with the memories of Partition is traumatic. "I first realised this while talking about it with my grandparents, who, too, had to endure many hardships," she said. "The experience of Partition is what connects us with those who live across the border. It binds us. Our stories don't begin with our birth or with our parents. They go way back, to moments and events that shaped the future."

Aakriti Periwal

Mita Kapur

> The experience of Partition is what connects us with those who live across the border. Our stories go way back, to moments and events that shaped the future. I didn't want to homogenise the story of Partition through tales portraying a singular image of violence. The reality is much more complex. Even though forging relationships during Partition feels unimaginable, there are numerous accounts of friendship, love and marriage that grew out of the creation of two nations, including that of my grandparents

"I didn't want to homogenise the story of Partition through tales portraying a singular image of violence or anything that has always been traditionally accepted," she continued. "It's not us *versus* them. The reality is much more complex, and we must ask the difficult questions. In many instances, I let my emotions get the better of me, which was reflected in some of those stories. I have felt vulnerable while writing the book, as I had to learn and unlearn so many things."

Malhotra and Singh spoke about the impact of Partition on different regions across the country. Punjab was discussed in detail, as it was one of the main sites of violence at that time. Bengal, too, was discussed, for its porous borders and lack of heavy militarisation. Both Malhotra and Singh agreed that Sindh as a region is rarely discussed in conversations about Partition, even though it was severely impacted.

To inject some positivity into such an intense conversation, Malhotra acknowledged that several stories she gathered for her book recounted the beginning of many new relationships. "Even though forging relationships during Partition feels unimaginable, there are numerous accounts of friendship, love and marriage that grew out of the creation of two nations, including that of my grandparents," she remarked. The session concluded with several questions from the audience: an interaction that reflected the fact that Partition remains an ever-evolving memory among most of us.

The Write Circle *Jaipur was presented by Shree Cement Ltd in association with Siyahi, Spagia Foundation and ITC Rajputana, and with the support of* ***Ehsaas*** *Women of Jaipur*

क्या कभी नीले पहाड़ देखे हैं तुमने... कलम अजमेर में द्वारिका उनियाल

Dwarika Uniyal

Amit Rajvanshi

"जिंदगी का ब्लैकबोर्ड लिए यहां-वहां फिरता हूं
वक्त की चाक से लिखता हूं मिटाता हूं
कभी सीखने की जिद थी, आज सिखाने का बहाना है..." यह कहना है, लेखक, अध्यापक और कवि द्वारिका उनियाल का। वे **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित **कलम** अजमेर में अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। आगे की चर्चा अमित राजवंशी ने संभाली। उनियाल का परिचय देते हुए राजवंशी ने बताया कि आपकी पैदाइश उत्तराखंड में हुई और पढ़ाई राजस्थान में। आपने रेडियो पर भी अनेक कार्यक्रम किए और हाल ही में आपका काव्य संकलन *'उम्मीदों के पंख'* नाम से प्रकाशित हुआ है, जो पाठकों द्वारा बहुत सराहा गया। शिक्षा जगत में उनियाल के पच्चीस साल से अधिक के अनुभवों का उल्लेख करते हुए राजवंशी ने बताया कि वर्तमान में प्रोफेसर उनियाल बेंगलुरु स्थित राष्ट्रीय विद्यालय यूनिवर्सिटी में प्रो-वाइस चांसलर पद पर सेवारत हैं।

राजवंशी ने उनियाल से उनकी लेखन यात्रा और राजस्थान से जुड़े उनके अनुभवों के बारे में पूछा। उनियाल का उत्तर था कि राजस्थान मेरे दिल के करीब है। मैं शिक्षक हूं, यह सबसे बड़ा परिचय है। जहां तक लिखने की बात है, यह एक कशिश है, एक जुनून है, एक जिद है। अपनी बात को काव्यात्मक अंदाज में उनियाल ने शब्द दिए-

मैं लिखता हूं कि
खयाल को बेवजह मन में सोचकर जाया नहीं करते।
खयाल को हवा लगनी चाहिए,
उसे कागज पर उकेर कर
जिंदा रखना जरूरी है
फिर चाहे
कलम की निब से उसकी निभे न निभे।

मैंने नौ साल की उम्र में लिखना शुरू किया। हर आदमी की जिंदगी में एक ट्रिगर प्वाइंट होता है, मेरे लिए वह ट्रिगर प्वाइंट था 31 अक्तूबर, 1984 जब इंदिरा जी की हत्या हुई थी। हम सबने वह दर्दनाक दृश्य उस जमाने में देखा, रेडियो पर सुना। मेरा बाल्यमन बहुत आहत था। उस समय मैं कितनी हिंदी जानता था। उसी आहत मन से मैंने लिखा-

इंदिरा तुम तो हो गई कुर्बान
तुम तो थी बहुत महान
गांधी की इंदु थी तुम
नेहरू की प्रियदर्शिनी
देश बचाने आई तुम
थी तुम दूरदर्शिनी...

हमारे बनने में सबसे बड़ा योगदान हमारे स्कूल का था। हमारे शिक्षकों ने कहा कि बेटा तुमने बहुत अच्छा लिखा है। जब आप छोटे होते हो तो आपके ऊपर बहुत दबाव होता है, अच्छा करने का। मेरी बड़ी बहनें, मां-पिता का बहुत दबाव था। मैं तबसे लगातार लिख रहा हूं। खाने से मैं राजस्थानी ज्यादा हूं। मेरे पिताजी के दिल में हमेशा पहाड़ जिंदा रहा। उन्होंने जिंदगी के अपने अनुभवों को याद करते हुए 1995 तक लिखने और फिर बीस साल तक लेखन का सूखा पड़ने की बात बताई।

2015 में आपको लेखन की ओर किस चीज ने लौटाया? उनियाल ने बताया कि प्रबंधन के क्षेत्र में अकादमिक होना बहुत कठिन होता है। आपका जो अध्ययन का दायरा होता है, वह आपके जॉब के हिसाब से तय होता है। पहले मैं हिंदी में सोचता था। बाद में प्रोफेशन के हिसाब से अंग्रेजी में ही सोचने-लिखने लगा। मैंने बचपन में हिंदी साहित्य का सब कुछ पढ़ा, पर बाद में छूट गया। मसूरी में लालबहादुर शास्त्री अकादमी में दीपक रमोला से हुई मुलाकात का जिक्र करते हुए उनियाल ने वह पूरा वाकिआ सुनाया, जिसके चलते वह लेखन की दुनिया में लौटे। उन्होंने अगले दिन पहाड़ों पर बारिश और कोहरे के चलते लिखी 'वो क्या बूंद थी जो झरना बनी' की कुछ पंक्तियां भी सुनाई-

कल रात कड़कड़ाके बिजली गिरी
लाल टीन की छत पर भरभरा बरसा पानी छमाछम
सुबह उठा तो कोहरे की रुई में लिपटा सूरज नम...

इस तरह सिलसिला चल निकला। मैंने अपनी कविताएं ह्वाट्स एप पर कुछ कवियों को कविताएं भेजनी शुरू कर दीं। उनमें प्रताप सोमवंशी प्रमुख हैं, जिनकी किताब है कि *'इतवार छोटा पड़ गया'*। उन्होंने हमेशा कविताओं को देखा, सराहा, कई बार सुधार को भी कहा। उनियाल ने अपनी कविता पर गुलज़ार के प्रभाव को एकलव्य की तरह बताया। उन्होंने बताया कि मैं एक विजुअल पोएट हूं। उन्होंने कहा कि आकाश की नीलिमा दूर से दिख रहे पहाड़ों पर छा जाती है, और वे हरे नहीं नीले दिखते हैं। उन्होंने एक कविता सुनाई-

क्या कभी नीले पहाड़ देखे हैं तुमने
हरे पत्तों को चीर जब वो सुनहरी किरण
सफेद बादलों से ढंकी बर्फीली चट्टानों से टकराती है
तो उसे चोट लग जाती है
शायद नील पड़ जाती है जहां-तहां
उसी नीलिमा के प्रतिबिंब को ढोते वे पहाड़ नीले पड़े रहते हैं।

Gunjal Sharma and C.P. Dewal

उनियाल ने संवाद के दौरान अपनी कविताओं पर चित्रकार पत्नी स्नेहा नौटियाल के प्रभाव का भी जिक्र किया और काव्य संग्रह *'उम्मीदों के पंख'* के नाम के पीछे की कहानी और कविता को सुनाया। पंक्तियां थीं-

सपनों को उड़ने के लिए,
हवाई जहाज का टिकट नहीं लगता
बस,
पलकों को उम्मीदों के पंख चाहिए...

उनियाल ने संवाद के दौरान कई कविताएं सुनाईं और श्रोताओं के सवालों के भी उत्तर दिए। उन्होंने अपनी कविताओं पर प्रकृति के प्रभाव को स्वीकारा। उनियाल ने शिक्षा के महत्त्व, जीवन में सीखने की ललक के बारे में भी बताया और प्रशिक्षु सिविल सेवकों से जुड़े अपने विचार साझा किए। उन्होंने यह माना कि लोग अच्छा काम कर रहे हैं, इसलिए देश चल भी रहा है। पद्मश्री से सम्मानित साहित्यकार सीपी देवल ने अतिथि वक्ता उनियाल और संवादकर्ता राजवंशी का अभिनंदन छत्तीसगढ़ से मंगाई गई शॉल से किया। फाउंडेशन की यह पहल स्थानीय शिल्प को बढ़ावा देने का हिस्सा है।

अहसास *वूमेन के सौजन्य से आयोजित* ***कलम*** *अजमेर के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। वी केयर का सहयोग मिला।*

Surfing on the Divine Tides of Harmony

Ricky Kej

Dipali Bhasin

After receiving his first Grammy Award, Ricky Kej was invited by the Prime Minister's Office to meet Narendra Modi. "The Prime Minister expressed his desire to launch a music album on the environment and climate change at the Paris climate conference. I felt honoured to be the PM's choice for composing an album on climate change by collaborating with musicians from around the world." Kej took this opportunity to make the album, *Shanti Samsara*, which featured 500 musicians from 40 countries. As an environmentalist himself, Kej collaborated with like-minded musicians who had a passion for music as well as the environment, and were concerned about climate change and the actions required to save the planet. Kej spoke about all of this and more at a special session of **Ek Mulakat** organised by **Prabha Khaitan Foundation** in Meerut. He was in conversation with Dipali Bhasin, **Ehsaas** Woman of Delhi.

Kej spoke about his famous Grammy acceptance speech. "With my idol, Stewart Copeland, beside me during my speech, I just said what came to mind," he said. "And at that moment I could think of *Vasudhaiva Kutumbakam*, which is a Sanskrit phrase that speaks of the true essence of living in complete harmony with all species, and the coexistence of all life forms and elements of Nature. Sanskrit is a poetic language. It has an energy of its own. It allowed me to express my emotions."

When asked about Indian music, Kej had some valuable words for the audience. "Indian music is not synonymous with Bollywood," he said. "Classical musicians are breaking cultural barriers on the world stage, following in the footsteps of greats like Pandit Ravi Shankar and Pandit Vishwa Mohan Bhatt. Sadly, this is more appreciated outside India. We must delve deep into our culture and create our own uniqueness instead of copying the West. Folk music is almost extinct because of the urbanisation of music."

Kej and the Foundation have also collaborated on the initiative, ReWear4Earth, that promotes sustainable living. "The textile industry is damaging our environment," Kej said. "ReWear4Earth tries to encourage sustainable fashion and re-wearing outfits. But we need collective effort to raise awareness and convert that into action. Artists must come together and use their art forms to express thoughts and ideas that bring about change."

After a Q&A session, Garima Mithal, **Ehsaas** Woman of Meerut, delivered the vote of thanks and Mrs Rana felicitated Kej with a *kantha uttoriyo*.

***Ek Mulakat** Meerut was presented by Shree Cement Ltd in association with* Dainik Jagran*, Crystal Palace and with the support of **Ehsaas** Women of Meerut*

Garima Mithal

Anshu Mehra

Speak Up, Seek Help And Find Your Tribe

Parul Khanna Parashar

Advaita Kala

Anubha Arya

The importance of mental health for achieving personal goals has been increasingly acknowledged in recent years. Yet, people struggling with mental health issues continue to face discrimination. Mental health awareness is the need of the hour, and was the topic of discussion at a virtual session of **Tête-à-Tea** organised by **Prabha Khaitan Foundation** on the YouTube page of Kahalli. Screenwriter Advaita Kala was in conversation with psychologist Parul Khanna Parashar. Anubha Arya, **Ehsaas** Woman of Patna, welcomed Parashar and Kala.

"I have seen several factors that lead to anxiety, panic attacks and other mental health issues both in children and adults," said Parashar, who is the director of Sanjivini Society for Mental Health. "Some of these are an increasing dependence on material things, competing with others for a better life, and a disjointed family. And now, social media has become a place where negativity is bred and where people chase the fancy lives of fake influencers. It's natural to have moments of anxiety and depression. You need to know when to reach out and ask for help. At other times, use the pressure and anxiety to realise your shortcomings and turn them into motivators for change."

Parashar then pointed out the alarming signs of deteriorating mental health. "When anxiety becomes a disorder, it will affect your daily functioning," she warned. "Look out for physiological signs (pain or palpitations), psychological signs (uneasiness, helplessness or hopelessness), and behavioural changes. Seek help if your well-being is being affected. There is a noticeable trend that women are more likely to talk about their mental health than men. This has to change. Men have to come forward, as repressing emotions only causes more psychological damage."

> "When anxiety becomes a disorder, it will affect your daily functioning. Look out for physiological signs (pain or palpitations), psychological signs (uneasiness, helplessness or hopelessness), and behavioural changes. Seek help if your well-being is being affected. There is a noticeable trend that women are more likely to talk about their mental health than men. This has to change"

What else causes anxiety or mental illness? "I have observed that a poor lifestyle and indulgence in stimulants and recreational drugs add to people's mental health issues," Parashar said. "The basics for good mental health are clear: sleep, nutrition and exercise for the body, and freely expressing yourself for the mind." But Parashar also laid stress on the most important point: limiting social media usage. "You should not become a recluse or lose touch with current affairs, but that cannot be used as an excuse for social media addiction."

Parashar recommended some breathing exercises and emphasised the importance of raising awareness for managing mental health issues. "Focus on your physical health, practise relaxation activities, indulge in a hobby, and find the people you can gel with." Arya concluded the event with a vote of thanks.

*This session of **Tête-à-Tea** was presented by Shree Cement Ltd in association with Kahalli*

लोग राजनेताओं, चर्चित शख्सियतों के बारे में जानना चाहते हैं: रशीद किदवई

Rasheed Kidwai

Apra Kuchhal

किसी भी राजनीतिक दल को पसंद और नापसंद करना आपकी निजी रुचि और निर्णय का हिस्सा हो सकता है, पर हर राजनीतिक दल के साथ ढेर सारा इतिहास छिपा होता है।" यह कहना है रशीद किदवई का, जो **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की ओर से आयोजित **कलम** कोयंबटूर में बतौर अतिथि वक्ता उपस्थित थे। आरंभ में **अहसास** वूमेन रूपा मोहनदास ने अतिथि किदवई और संवादकर्ता अपरा कुच्छल का स्वागत किया और फाउंडेशन की गतिविधियों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि प्रख्यात नारीवादी लेखिका, उद्यमी और परोपकारी डॉ प्रभा खेतान द्वारा अस्सी के दशक में स्थापित यह फाउंडेशन वर्तमान में कला, साहित्य और संस्कृति के साथ ही महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में भारत और विदेश के पैंतीस से भी अधिक शहरों तक पहुंच चुका है। 'अपनी भाषा अपने लोग' की सोच को बढ़ावा देने वाली खास पहल **'कलम'** का मकसद स्थापित और युवा लेखकों को ऐसा मंच मुहैया कराना है, जहां वे अपने प्रशंसकों से जुड़ते हैं, संवाद करते हैं।

अतिथि वक्ता किदवई का परिचय देते हुए रूपा ने कहा कि पत्रकार, लेखक, स्तंभकार और राजनीतिक विश्लेषक रशीद किदवई ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन के विजिटिंग फेलो, टेलीग्राफ के पूर्व सहयोगी संपादक रहे हैं। आपने नई दिल्ली के सेंट स्टीफंस कॉलेज से स्नातक और यूनाइटेड किंगडम के लीसेस्टर विश्वविद्यालय से जन संचार में मास्टर्स डिग्री हासिल की है। आपने सीएनएन-न्यूज 18, एबीपी न्यूज, एनडीटीवी, इंडिया अहेड न्यूज और इंडिया टुडे टीवी कई टेलीविजन चैनलों में योगदान दिया है। उन्होंने आगे के संवाद के लिए अहसास वूमेन राजस्थान और मध्य भारत की मानस समन्वयक अपरा कुच्छल को आमंत्रित किया। कुच्छल ने भारतीय भाषाओं और संस्कृति को लेकर फाउंडेशन की प्रतिबद्धता पर विस्तार से अपनी बात कही और किदवई से पहला सवाल उनकी चर्चित पुस्तक *'24 अकबर रोड'* को लेकर पूछा।

किदवई का उत्तर था कि 24 अकबर रोड दिल्ली में कांग्रेस का मुख्यालय है।

Roopa Mohandas

Poonam Bafna

सोनिया गांधी ने भी यह माना कि उन्हें मेरी किताब से ही यह पता चला कि वह पहले बर्मा हाउस हुआ करता था। राजीव गांधी, संजय गांधी किशोर उम्र में वहां जाया करते थे, खेलते थे। इस किताब में उन वजहों को देखने कि कोशिश की है कि क्यों कांग्रेस कभी ऊपर जाती है, कभी नीचे जाती है। उसका बिखराव क्यों होता है? आपको यह जानकर अचरज होगा कि अधिकांश राजनीतिक दल अपने पदाधिकारियों को कोई तनख्वाह नहीं देते। अगर वे सांसद, विधायक हैं तो बात और है। यह भी बहुत हद तक एक तरह से भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने की एक वजह है। इस पुस्तक के लिए मैं जब शोध कर रहा था तो बहुत सारे कांग्रेसी नेताओं से मिला, जिनका कहना था कि यह तो गांधीजी की पार्टी है, हम जनसेवा के लिए आए हैं। पर ऐसे समय में जब लोकसभा और विधानसभाओं में कांग्रेस प्रतिनिधियों की गिनती सिमट चुकी है, तब देश में पार्टी से हजारों पदाधिकारियों का घर कैसे चलेगा? यह स्थिति कांग्रेस ही नहीं, भाजपा और अन्य दलों की भी है।

किदवई ने कहा कि जब मैंने यह किताब लिखी तो यह भी लिखा कि वहां महिलाओं के लिए कोई शौचालय नहीं था। कई पार्टी पदाधिकारियों ने इसके लिए शर्मिंदगी महसूस की और ऐतराज भी जताया। इस पुस्तक में मैंने कांग्रेस का आलोचनात्मक मूल्यांकन किया है और छोटी से छोटी पर जरूरी बातों को दर्ज किया है। यह कोई प्रायोजित या प्रशंसात्मक पुस्तक नहीं है। यह कांग्रेस के उत्थान और पतन की कहानी है। कुच्छल ने पूछा कि किसी भी शख्सियत, चाहे वे शाहरुख खान हों या नरेन्द्र मोदी जी, उनके या तो प्रशंसक होते हैं या आलोचक। बतौर लेखक आप अपने तथ्य कैसे जुटाते हैं? किदवई ने कहा कि मेरी पहली किताब सोनिया गांधी की जीवनी थी। उन्होंने भी मुझसे पूछा कि आप मेरी जीवनी क्यों लिखना चाहते हैं? मैंने कहा कि मैं आपके बारे में लोगों को बताना चाहता हूं। मैंने उस किताब में ढेर सारे तथ्य दर्ज किए हैं। जैसे सोनिया गांधी शादी से पहले काफी दिनों तक इंदिरा गांधी की पारिवारिक दोस्त बच्चन परिवार के साथ रही थी। अमिताभ बच्चन तब इतने पॉपुलर नहीं थे। राहुल और प्रियंका इसीलिए अमिताभ बच्चन को मामू कहकर बुलाते हैं। सोनिया गांधी ने कई बार कहा भी है कि उनकी तीन मांएं थीं। इंदिरा गांधी, तेजी बच्चन और पाओला माइनो। तो यह बात लोगों के सामने आनी चाहिए। मैं केवल तथ्य और संदर्भ के साथ लिखता हूं। लोग राजनेताओं, चर्चित शख्सियतों के बारे में जानना चाहते हैं।

किदवई ने अपनी किताब *'हाउस ऑफ सिंधियाज'* से जुड़े कई सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि यह इकलौता परिवार है, जो एक भी दिन बिना सत्ता के नहीं रहा है। उन्होंने कहा कि हम हमेशा वंशवाद की आलोचना करते हैं, पर अगर यह नहीं होता तो भारतीय राजनीति में महिलाओं और अल्पसंख्यकों को जो प्रतिनिधित्व आज मिला है, वह भी न मिलता। हमारे लोकतंत्र में कई खामियां हैं। इस पुस्तक में सास-बहू का झगड़ा, मां-बेटे का विवाद, संपत्ति विवाद, सियासी झगड़े सभी शामिल है। इसमें किसी का पक्ष और विरोध नहीं है, केवल तथ्य है। किदवई ने जीवंत विपक्ष, बहुमत और अल्पमत के संबंध, लोकतंत्र की खूबसूरती, पचास शख्सियतों पर लिखी पुस्तक में फूलन देवी, शेख अब्दुल्ला, चंद्रास्वामी, आरके धवन, इंदिरा गांधी, भारतीय राजनीति में भ्रष्टाचार और स्वच्छ राजनीति के लिए पैसे की आवश्यकता आदि पर अपने विचार और रोचक किस्से सुनाए और सवाल-जवाब सत्र में भी हिस्सा लिया। अंत में ऐश्वर्या ने अतिथि वक्ता किदवई का अभिनंदन और पूनम बाफना ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

__अहसास__ वूमेन के सौजन्य से आयोजित __कलम__ कोयंबटूर के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर वेलकम होटल

The Story of Ordinary Indians Under Lockdown

Barkha Dutt

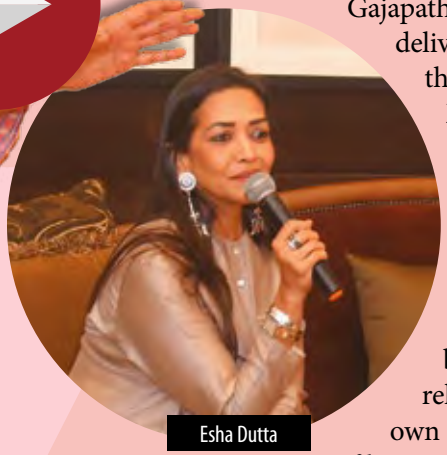
Esha Dutta

The name Barkha Dutt is synonymous with fearless journalism. Her deep dive into the stories of people in war-torn areas as well as her coverage of the Kargil War, the Mumbai attacks and the 2004 Tsunami are a testament to Dutt's dedication to her craft and her empathy for the struggles of the common people. This dedication is further reflected in her book, *Humans of COVID: To Hell and Back,* which documents the effects of the pandemic on the ordinary citizens of India, a crisis that led to the biggest exodus of migrant workers.

Prabha Khaitan Foundation organised a special session of **The Write Circle** in Chennai to learn more about Dutt and her book. Vidya Gajapathi Raju Singh, **Ehsaas** Woman of Chennai, delivered the welcome note before introducing the author and the moderator, Esha Dutta, **Ehsaas** Woman of Kolkata. Although Dutt's work may seem like a book on the pandemic, it is actually a story of tragedy, of the plight of the people, and of hope and humanity. "My book is the story of India," said Dutt. "It's not just about the wrath of the virus, but how it compelled us to look at our relationships again. It does have some of my own stories, but it mainly narrates accounts of hope, courage and the resilience of our unsung heroes. I lost my father to Covid, and although I know that everyone who lost someone they loved must be going through an emotional crisis, there is hope for self-recovery. That's why I say that you'll find yourself in the book."

> "My book is the story of India. It's not just about the wrath of the virus, but how it compelled us to look at our relationships again. It does have some of my own stories, but it mainly narrates accounts of hope, courage and the resilience of our unsung heroes. I lost my father to Covid, and although I know that everyone who lost someone they loved must be going through an emotional crisis, there is hope for self-recovery. That's why I say that you'll find yourself in the book"

Vidya Gajapathi Raju Singh

Kaveri Lalchand

Deepika Goyal

Dutt then drew a parallel between her experiences of reporting on Kargil and the pandemic. "Kargil and Covid were the two transformative assignments of my life," she said. "When I realised that the exodus of migrant workers is going to be the biggest humanitarian crisis ever known, I knew I couldn't tell the story sitting in a studio. This is exactly how I felt during the Kargil War. I took a break from my fellowship in Oxford to write this book, but it was more difficult to pen these accounts than I had imagined. However, I knew that I was privileged to be able to record a historic event, and people needed to know these stories. That drove me to finish this book and get it published."

The session ended with a Q&A round with Dutt. Deepika Goyal, **Ehsaas** Woman of Chennai, delivered the vote of thanks, and, in conclusion, Sunita Shahaney, the Honorary Consul of Chile, felicitated Dutt.

The Write Circle *Chennai was presented by Shree Cement Ltd, with the support of* ***Ehsaas*** *Women of Chennai*

Writing as a Part of Life

Shraddha Murdia

Bhawana Somaaya

When one thinks of Bollywood, one inevitably encounters the name of Bhawana Somaaya, who, in the course of her career of four decades, has established herself as a noted film journalist, critic and author. The enthralling stories of Somaaya's life came to the fore and kept the audience engaged as **Prabha Khaitan Foundation** organised another session of **The Write Circle** in the bustling city of Ahmedabad. Shaneel Parekh, **Ehsaas** Woman of Ahmedabad, welcomed Somaaya, the audience and the moderator of the event, Shraddha Murdia, **Ehsaas** Woman of Udaipur, on behalf of the Foundation.

Discussing her illustrious career as a renowned journalist and writer with over 13 titles to her name, Somaaya highlighted her experience of translating the works of the Prime Minister, Narendra Modi into English. What sparked her affinity towards the Gujarati language? "I was born a Gujarati and Ahmedabad has been a home for me," remarked the author. "My older brother used to teach me and my siblings Gujarati from pictorial books." With most of her career developing spontaneously, the opportunity to translate the books written by the Prime Minister came without much preface.

> "While translating Modiji's work, I found him and myself. And *Sakshi Bhaav* was special because it was particularly intense, with a high emotional quotient"

Talking about her experience of translating *Sakshi Bhaav* and *Aankh Aa Dhanya Chhe*, she confessed that she did not want gender to overpower the translation since she was a woman translating the male gaze. "While translating Modiji's work, I found him and myself. And *Sakshi Bhaav* was special because it was particularly intense, with a high emotional quotient," said Somaaya.

Despite her close association with Bollywood, the author confessed that she had never consciously been a history enthusiast. This, in fact, became the basis of her journey. The author also expressed her discontent with the *#BoycottBollywood* campaign. "Nobody has the right to demean the hard work of actors and all others involved in making a movie," she said.

The event drew to a close with an invigorating Q&A session with the audience. The author was felicitated by Abhay Mangaldas, and Priyanshi Patel, **Ehsaas** Woman of Ahmedabad, delivered the formal vote of thanks on behalf of the Foundation.

Shaneel Parekh

Abhay Mangaldas felicitates Bhawana Somaaya

Priyanshi Patel

***The Write Circle** Ahmedabad was presented by Shree Cement Ltd in association with Karma Foundation, The House of MG and* Divya Bhaskar*, and with the support of **Ehsaas** Women of Ahmedabad*

यात्रा हमें बाहर से अधिक अंदर की ओर खिंचती है: गगन गिल

Gagan Gill

Pooja Poddar Marwah

"मुझे लगता है कि जितना हम बाहर ट्रैवल करना चाहते हैं, उससे ज्यादा तो हम अंदर की तरफ ट्रैवल कर लेते हैं। कोई भी ट्रैवल बाहर की तरफ नहीं जाता। हमें लगता है कि हम बाहर जा रहे हैं लेकिन वह हमें अपने अंदर की तरफ ले लेता है।" **प्रभा खेतान फाउंडेशन** द्वारा आयोजित **कलम** देहरादून में यह कहना था अतिथि वक्ता कवयित्री, लेखिका गगन गिल का। आरंभ में अतिथियों का स्वागत हयात रीजेंसी के देहरादून के महाप्रबंधक हरकरन सिंह ने किया। उन्होंने इस बात पर खुशी जाहिर की कि देहरादून में इस कार्यक्रम से कलम के सत्र की शुरुआत हुई है। अतिथि वक्ता का परिचय, धन्यवाद और फाउंडेशन की गतिविधियों की जानकारी **अहसास** वूमेन देहरादून पूजा खन्ना ने दी। उन्होंने कोलकाता स्थित **प्रभा खेतान फाउंडेशन** के महिला सशक्तीकरण, कला और संस्कृति के क्षेत्र में भारत और विदेश के लगभग 30 शहरों में चल रहे कार्यक्रमों की चर्चा की।

गिल का परिचय देते हुए खन्ना ने कहा कि आपका जन्म 18 नवम्बर, 1959 को दिल्ली में हुआ। आपने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी साहित्य में एमए किया है। आप हार्वर्ड युनिवर्सिटी में पत्रकारिता की नीमेन फैलो रही हैं। आपकी 9 मौलिक पुस्तकें, 9 अनुवाद, 6 संपादित ग्रंथ और अंग्रेज़ी व जर्मन में 4 अनुवाद पुस्तकें प्रकाशित हैं। आप 1990 में प्रतिष्ठित आयोवा इंटरनेशनल राइटिंग प्रोग्राम में विश्व लेखकों के बीच सबसे युवतम लेखिका थीं। आपकी लोकप्रिय पुस्तकों में कविता-संग्रह *'एक दिन लौटेगी लड़की'*, *'अंधेरे में बुद्ध'*, *'यह आकांक्षा समय नहीं'*, *'थपक थपक दिल थपक थपक'*, *'मैं जब तक आयी बाहर'* एवं गद्य पुस्तकें *'दिल्ली में उनींदे'*, *'अवाक्'*, *'देह की मुंडेर पर'* आदि शामिल हैं। आपकी कई रचनाएं अमेरिकी, ब्रिटिश व जर्मन विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम का हिस्सा हैं। आपको भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, संस्कृति सम्मान, केदार सम्मान, हिंदी अकादमी साहित्यकार सम्मान, द्विजदेव सम्मान, अमर उजाला शब्द सम्मान से नवाजा जा चुका है। आप द्वारा अनूदित पोलिश कवि हर्बर्ट की कविताएं हाल ही में प्रकाशित हुई हैं। लेखक प्रतिनिधिमंडल के सदस्य के रूप में आपने चीन, जर्मनी, मॉरीशस, नेपाल, फ्रांस, आदि देशों की यात्राएं की हैं।

गिल से आगे का संवाद **अहसास** वूमेन देहरादून पूजा मारवाह ने किया। गिल ने ट्रैवल से जुड़े सवाल पर प्रकृति की नैसर्गिक सुंदरता विशेषकर हरियाली और पेड़ों के सौंदर्य की तारीफ की। देहरादून के पहाड़, कोच्ची और केरल की हरीतिमा की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि एक रात मैं सर्च कर रही थी तो दुनिया की सबसे खूबसूरत ट्रेन यात्राएं दिख गईं। उनमें साइबेरिया के साथ पश्चिमी घाट पर मेरी नजर पड़ी। मुझे लगा कि यह यात्रा तो मैं कर सकती हूं। इसके लिए कोई वीजा भी नहीं लगेगा, और अगले दिन मैं ट्रेन में थी। किताब जैसे एक दुनिया खोलती है, चाहे वह साहित्य हो, कथा हो, या कविता हो, पर जब आप किसी देश में जाते हो, तब आपको पता चलता है कि जिस जगह पर हम होते हैं, वह भी हमें संसार को, उस जगह को लेकर हमारी समझ को बढ़ाता है।

Pooja Khanna

Harkaran Singh

Indrani Pandhi

Rachna Pandhi

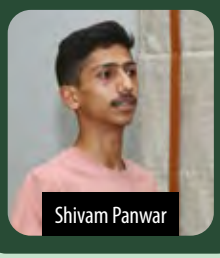
Shivam Panwar

एक सवाल के उत्तर में गिल ने कहा कि मैं उन लेखकों में हूं, जो अपनी हर किताब अलग लिखने की कोशिश करता है। मारवाह के इस सवाल पर कि क्या लेखक हर समय लेखक ही रहता है? गिल का उत्तर था, हां। वह लिखे चाहे न लिखे। वह जिस तरह चीजों के साथ जुड़ता है, संघर्ष करता है, उसे ढूंढता है। ऐसे भी कांफिडेंट लेखक हैं कि वे जब चाहें लिख दें, और कुछ ऐसे भी लेखक हैं जिन्हें लिखने में पांच साल लग जाता है। डर और अकेलेपन से जुड़े सवाल पर गिल का उत्तर था कि यह लेखक के साथ ही नहीं, सभी के साथ होता है। हम छोटी-छोटी चीजों के साथ जुड़ जाते हैं। खरीदना चाहते हैं। अगर कोई भी चीज, चाहे कला हो, या अच्छी फिल्म अगर आपको अपने बारे में सोचने के लिए बाध्य करती है, तो यह उसकी सफलता है। परिवार और बचपन से जुड़े सवाल पर गिल ने घर में पढ़ाई के माहौल, नौकर द्वारा किताब देने, पोथी पढ़ने, दीवान पर तकिया रखकर लोककथाएं पढ़ने और दूरदर्शन के ब्लैक एंड ह्वाइट जमाने वाले कार्यक्रमों को याद किया।

महाजन ने गिल की पुस्तकों का जिक्र कर पूछा कि आपको किस चीज ने प्रेरित किया? गिल का उत्तर था ऐसी कोई चीज बताना मुश्किल है। यह आकस्मिक होता है। मैंने कोई मृत्य देखी तो उस पर लिखा, कोई ख्वाब देखा तो उस पर लिखा। मेरा लेखन डार्कनेस से जुड़ा है। वह मेरे अंदर है कि बाहर पता नहीं। कैलाश मानसरोवर यात्रा संस्मरण से जुड़े सवाल के उत्तर को गिल ने करीने से टाल दिया और कहा कि मैं वहां किताब लिखने नहीं गई थी। उन्होंने श्रोताओं के सवाल के भी उत्तर दिए। उन्होंने सहजीवन, अकेलेपन, शिक्षा नीति, राजनीतिक जागरुकता, इतिहास, परंपरा, किताबें आदि पर अपनी राय रखी। भाषा से जुड़े सवाल पर कहा कि भाषा की दुर्दशा भाषा से ही खत्म होगी। इसे बचाना अभिभावकों की भी जिम्मेदारी होगी। हमें इसके लिए जागरूक होना होगा। साहित्य के पाठक होने के नाते हमें यह समझना चाहिए कि साहित्यकार महत्त्वपूर्ण नहीं होता, किताबें महत्त्वपूर्ण होती हैं। एक संपादक को अपनी पत्रिका में ऐसी चीजें लिखनी चाहिए, जो परेशान कर दें। अंत में अभिनंदन का दायित्व इंद्राणी पांधी और रचना पांधी ने उठाया।

__अहसास__ वूमेन के सौजन्य से आयोजित __कलम__ देहरादून के प्रायोजक हैं श्री सीमेंट। हॉस्पिटैलिटी पार्टनर हयात रीजेंसी देहरादून और मीडिया पार्टनर दैनिक जागरण का भी सहयोग मिला।

In Honour of a Literary Giant

Geetanjali Shree has done India proud in an unprecedented manner — *Tomb of Sand*, the English translation of her 2018 Hindi novel, *Ret Samadhi*, won the International Booker Prize earlier this year, becoming the first book translated from any Indian language to win this coveted honour. **Prabha Khaitan Foundation** hosted a dinner for Shree at the ITC Royal Bengal in Kolkata, an event that was attended by illustrious personalities such as Lady Kishwar Desai and others. The guests who came to greet the author enjoyed a lavish spread of Bengali and Italian delicacies, complete with mouth-watering desserts. Here are a few glimpses from the evening.

Geetanjali Shree with Sundeep Bhutoria

Sumit Dasgupta and Ruchika Gupta

Kishwar Desai

Phuchkas of many hues, a unique element of the delectable spread

Esha Dutta

Celebrating a Legend

When it comes to Prabha Khaitan, not much remains unknown. A passionate advocate of women's empowerment and a true aficionado of literature and the arts throughout her life, her contribution to the world of letters and culture in India has been noted and appreciated by stalwarts from the country and beyond. It is no surprise that the novels she wrote have become seminal pieces of literature that are re-visited by readers time and again.

It is thus only fitting that the Rajasthan Sahitya Akademi and the Spandan Mahila Sahityak Avem Shakshnik Sansthan organised a seminar titled *Dr Prabha Khaitan Ka Vaicharik Sansaar* at the Press Club of Jaipur. The event was inaugurated with the lighting of the lamp by the chief guest, the renowned poet, translator and Padma Shri awardee, Chandra Prakash Deval, the special guest, Durgaprasad Agrawal, the noted litterateur, Mamta Kalia, the president of the Rajasthan Sahitya Akademi in Udaipur, Dularam Saharan, and the president of Spandan Sansthan, Neelima Tikku.

The inauguration was followed by the *Saraswati Vandana* sung by Nirupama Chaturvedi. Tikku began the session with a welcome address; she spoke about the life and pioneering initiatives of the author, and also discussed at length some of her notable works, such as her autobiography *Anya Se Ananya*, and the novels, *Chhinnmasta* and *Peeli Aandhi*. This was followed by Kalia sharing her fond memories of the author, and the varied experiences and inspirations that marked her remarkable life.

The chief guest, Deval, shared how Khaitan's literature has been a source of inspiration for his writing. Agrawal discussed the relevance of Khaitan's work for the youth of today, and Saharan talked about how her writing can help in the uplift and development of Rajasthan's literature. The seminar, which was attended by several literary enthusiasts from the city, concluded with the vote of thanks by Madhuri Shastri.

सीकर में प्रभा खेतान प्रशिक्षण केंद्र का शुभारंभ

अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान द्वारा संचालित केंद्र में महिलाओं को सिलाई प्रशिक्षण

समाज में हर वर्ग की स्त्री के सशक्त होने का जो स्वप्न प्रख्यात नारीवादी लेखिका, उद्यमी और परोपकारी प्रभा खेतान ने अस्सी के दशक में देखा था, उसे जमीनी स्तर पर साकार करने का काम प्रभा खेतान फाउंडेशन कर रहा है। इसी क्रम में राजस्थान के सीकर जिले में *प्रभा खेतान प्रशिक्षण केंद्र* के नाम से एक सिलाई केंद्र का शुभारंभ पिछले दिनों हुआ।

अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान सीकर द्वारा संचालित यह प्रशिक्षण केंद्र महिला स्वावलंबन एवं सशक्तीकरण की दिशा में रोजगार प्रशिक्षण कार्यक्रम चला रहा है। **प्रभा खेतान फाउंडेशन** के सहयोग से संचालित इस प्रशिक्षण केंद्र में क्षेत्रीय महिलाओं को सिलाई, बुनाई, कढ़ाई आदि का निःशुल्क प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

सीकर के वसंत विहार में *प्रभा खेतान प्रशिक्षण केंद्र* का विधिवत रूप से शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर *अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान* की डायरेक्टर डॉ अनुपमा सक्सेना ने बताया कि यह प्रशिक्षण केंद्र **प्रभा खेतान फाउंडेशन** कोलकाता के सहयोग से संचालित हो रहा है। यह बेहद प्रसन्नता की बात है कि *अभिव्यक्ति कला प्रशिक्षण संस्थान* को **प्रभा खेतान फाउंडेशन** की तरफ से यह प्रोत्साहन मिल रहा है।

संस्थान और फाउंडेशन, दोनों संस्थाओं का उद्देश्य है कि सीकर में अगर महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए सिलाई कार्य को प्रोत्साहित किया जाए, तो जो महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं हैं, वह भी सिलाई सीख कर भविष्य में आत्मनिर्भर हो सकेंगी। फिलहाल इस केंद्र में महिलाओं को तकनीकी रूप से सिलाई के गुर सिखाए जाएंगे, जिससे वे स्वयं सहायता समूह के रूप में आगे बढ़ सकेंगी और अपने घर–परिवार के संचालन में सहायक हो सकेंगी।

इस अवसर पर अतिथियों द्वारा रचना टेलर की तरफ से सिलाई प्रशिक्षण केंद्र का विधिवत फीता काटकर शुभारंभ किया गया। प्रशिक्षण केंद्र के शुभारंभ अवसर पर जिला रोजगार अधिकारी रोहित पारीक, प्रो विनोद बहादुर सक्सेना, संस्थान के कोषाध्यक्ष डॉ नेकी राम आर्य, रचना टेलर सीकर के संचालक सुभाष एवं भारी संख्या में महिलाएं उपस्थित थीं।

Always Moving Towards the Future

Prabha Khaitan Foundation is always expanding its horizons in the realms of art, culture, social justice and relationship-building. Aiding its every effort are its associates and the **Ehsaas** Women from all corners of the country, who carry the responsibility of the Foundation's events magnificently on their able shoulders. In keeping with this spirit of growth and progress, the Foundation conducted meetings in Kolkata recently with associates, **Ehsaas** Women and those who may probably join the **Ehsaas** family. Also present at these meetings was Apra Kuchhal, the Foundation's Honorary Convenor of Rajasthan and Central India Affairs. Here are a few glimpses of the meetings.

Sundeep Bhutoria, Mansi Kamdar Shah, Anindita Chatterjee, Apra Kuchhal and Manisha Jain meet the prospective Ehsaas Women from Guwahati, Rashmi Narzary and Pronami Bhattacharya

Sundeep Bhutoria, Mansi Kamdar Shah, Anindita Chatterjee, Apra Kuchhal and Manisha Jain meet Tanushree Kumari Singh, an associate from Delhi, and Shruti Agarwal, Ehsaas Woman of Kanpur

Ehsaas Snapshot

Priyanka Kothari, Ehsaas Woman of Nagpur, and Pooja Khanna, Ehsaas Woman of Dehradun, at The Doon School in Dehradun

Few things are more precious to **Prabha Khaitan Foundation** than the bonds forged between **Ehsaas** Women from different corners of the country. These friendships truly symbolise the national unity that the Foundation wishes to foster. Thus, when two **Ehsaas** Women from Nagpur and Dehradun met recently, it was a cause for celebration.

Moving Forward Together

Prabha Khaitan Foundation has always been at the forefront of promoting India's varied culture and heritage. But at the core of the Foundation's vision has been the goal of foregrounding women's achievements, especially through its unique initiative, **Ehsaas**. Created to constantly work towards empowering women, the soul of the initiative have been the women from different walks of life who have worked tirelessly for societal good and have been spearheading many of the Foundation's programmes and events. Indeed, today, when one thinks of the Foundation, one has to acknowledge the contribution of the **Ehsaas** Women who are always ensuring the seamless organisation and execution of the Foundation's events, and making sure that its vision is upheld. With our constant journey towards new vistas, we are always excited to have on board with us women who have made a mark on the world through their professional and social achievements. As the Foundation expands its activities in the historic city of Hyderabad, we are delighted to welcome the **Ehsaas** Women of Hyderabad into the fold!

Anjum Babukhan

A visionary thought leader and an awarding-winning educationist, Anjum Babukhan describes herself as a lifelong learner. With over two-and-a-half decades of experience in implementing the best teaching methodologies, her book, *ABCs of Brain Compatible Learning*, is a seminal work that is as informative as it is actionable. An empowering human development trainer, Babukhan provides key insights for educators, parents, and lifelong learners to navigate education as well as personal and professional development in the 21st century. Having completed her Ed.M. in Human Development and Psychology at the prestigious Harvard Graduate School of Education, Babukhan, through the book and her educational YouTube channel, provides tried and tested approaches that parents and educators have implemented effectively and confidently to enhance learning and development. Babukhan was also invited to be the keynote speaker at the Franklin Covey Global Summit held in Orlando, Florida in 2019, and is a member of the Franklin Covey Educator Advisory Board. A pioneer, Babukhan has been a panellist for many major events, and has been recognized widely for her exemplary contributions to the field of education.

Mansi Malik

A food scientist who has worked in the production unit of the famous fast food chain, Nirula's, Mansi Malik holds an M.Sc degree in Food Science and Nutrition from Lady Irwin College, Delhi University. Currently associated with Malik Cars Pvt. Ltd, a dealer of passenger cars of Tata Motors and Fiat Auto in Hyderabad, Malik is a founder-member of the Young FICCI Ladies Organization (YFLO), and has held various posts such as that of Treasurer (2006-2007), Secretary (2007-2008 and 2008-2009) and Vice-Chairperson (2009-2010). She was also the Chairperson for FICCI FLO, Hyderabad Chapter, from 2010 to 2011, and subsequently held the post of Honorary Secretary at YFLO for the year 2014-2015. She is presently the convenor for the Past Chairpersons Council, which is responsible for providing guidance to the current YFLO Chairperson.

Malik is a practitioner of and believer in *reiki*, the Japanese art of healing. She practises various forms of *reiki* to heal herself and others while maintaining her physical and mental well-being.

Mourya Boda

Mourya Boda holds a Bachelor's degree in law and a Master's degree in business management. Both have contributed immensely to her success as an animal biotech entrepreneur — she currently occupies the position of Chairperson at Brilliant Bio Pharma Private Limited, which is engaged in the manufacturing of veterinary biologicals and medicines. While the company's 10KL-capacity bioreactors for cell propagation and virus production are a first in India, Brilliant's Biosafety Level 3 (BSL-3) containment manufacturing facility is the largest in the world.

At present, Boda is a governing body member of Blue Cross of Hyderabad and a former governing body member of FICCI FLO, New Delhi. She had chaired the Hyderabad Chapter of the Young FICCI Ladies Organization in the past. Over the last decade-and-a-half of her entrepreneurial journey, Boda has comprehended the immense value that a company can generate by putting its people ahead of profits, and has succeeded in scaling up her business manifold.

Help For the Voiceless

Few pursuits are more noble than helping those who cannot help themselves. This is why it is every human being's duty to advocate for and look after animals. Leading the charge in this regard is Ashari – People for Animals, an animal hospital that runs solely on donations and caters to the needs of animals rescued off the streets as well as those that are immobilised and chronically ill. At present, Ashari is housing and treating innumerable cows, dogs and cats, apart from its daily rescue and treatment operations, all of which are done free of cost.

Ashari's cattle section, at present, comprises a bovine population of 109. The funds required for their daily feedings and medication, as well as maintaining the staff and manpower required to sustain their ongoing care, come from donations. The well-being of animals has been central to the vision of **Prabha Khaitan Foundation**. Under its initiative, **Karuna**, which focuses on the protection of animals, the Foundation has provided financial aid to Ashari. Here are some photographs of Ashari's bovine unit, and the help it received from the Foundation.

The bovine unit at Ashari

A cow enjoys a treat

A view of the large unit for cattle

More treats for the cows

राग यमन: सीखना सुगम मगर निभाना कठिन

Praveen Kumar Jha

पहला राग जो स्कूलों में या गुरुकुलों में सिखाया जाता है, वह अकसर राग यमन (ईमन) होता है। जाहिर है इसकी वजह होगी कि यह सिखाना आसान होगा। अथवा यह कि इसमें सातों स्वर होते हैं। लेकिन, इस राग को कायदे से निभाना बहुत कठिन है।

शास्त्रीय संगीत में किशोरी अमोनकर से सुगम संगीत में लता मंगेशकर तक ने यमन को अपना प्रिय बनाया। एक क़िस्सा है कि मधुबाला को इस राग पर आधारित *'ज़िंदगी भर नहीं भूलेगी वो बरसात की रात'* गीत इतना पसंद आया कि उन्होंने स्वयं को 'मिस यमन' कहना शुरू कर दिया!

यह राग कितना प्राचीन है, यह कहना कठिन है। संगीत में जब ऐसे प्रश्नों का उत्तर नहीं मिलता तो अकसर कह दिया जाता है कि अमीर खुसरो ने बनाया। हालांकि यह अब मान्य है कि राग पहले से मौजूद था। कुछ लोग कहते हैं कि यह नाम 'यमुना' से बना, वहीं कुछ कहते हैं फ़ारसी के 'ईमान' से बना ईमन। मूल जहां कहीं भी हो यह कई मामलों में रागों का राजा है, और महफिलों की शुरुआत अकसर इस राग से होती है।

जब कभी हम तनाव में हों, यह राग सुना जा सकता है। यह मन को शांत कर देता है। शायद यह भी एक वजह रही हो कि फ़िल्मी संगीतकारों को यह राग बहुत पसंद था। लता मंगेशकर के गीतों की एक लंबी सूची बन जाएगी जो यमन पर आधारित है। वहीं आशा भोंसले का गाया *'निगाहें मिलाने को जी चाहता है'* यमन की मिसाल है। येशुदास ने *'जब दीप जले आना, जब शाम ढले आना'* में यमन की खूबसूरत छटा बिखेरी है। मोहम्मद रफी का गाया *'एहसान तेरा होगा मुझ पर'* या *'मन रे तू काहे न धीर धरे'*।

अगर ग़ज़लों की बात करें तो मशहूर ग़ज़ल *'रंजिश ही सही, दिल ही दुखाने के लिए आ'* और *'आज जाने की जिद न करो'*, दोनों ही इस राग पर आधारित हैं। इसी से इस राग का रेंज समझा जा सकता है कि जितना सुगम दिखता है, उतना ही कठिन भी है। इसकी संभावनाएं असीमित हैं।

राग के स्वरों पर ख़ास तकनीकी बात तो नहीं, लेकिन इतना जरूर कहूंगा कि जहां अकसर अन्य राग 'सा' (षडज) से उठाये जाते हैं, यह 'नी' (निषाद) से उठाया जाता है और 'रे' (ऋषभ) से घूम कर षडज पर आते हैं।

प–रे की संगति इस राग की पहचान है। पारंपरिक रूप से यमन में तीव्र मध्यम का प्रयोग है। कुछ घराने साथ–साथ शुद्ध मध्यम का भी प्रयोग करते हैं, और यमन कल्याण कहते हैं। सुनते हुए लगता है कि इस राग में एक पर्दानशीं की तरह मध्यम झांक कर वापस पर्दे में चला जाता है। वादी स्वर गंधार (ग) है, लेकिन मध्यम की छटा निराली है।

इस राग की सबसे अजीज पेशकशों में एक है जब पं. रविशंकर सितार पर हैं, और उनकी प्रथम पत्नी अन्नपूर्णा देवी जी सुरबहार पर। यह जुगलबंदी अप्रतिम है और कभी इत्मीनान से शाम को बैठ जरूर सुनी जानी चाहिए। एक मशहूर बंदिश जिसे कई गायकों ने गाया है–

"सखी ए री आली पिया बिन/ कलन परत मोहे/ घड़ी पल छिन दिन जबसे पिया परदेस गमन कीनो/रतिया कटत मोरे तारे गिनगिन"

ध्रुपद में दरभंगा घराने की प्रस्तुतियां इसे बड़े ही व्यवस्थित ढंग से विस्तार देती है। मल्लिक बंधु का गाया यमन श्रोताओं को जरूर सुनना चाहिए।

इस राग के कई भाई–बहन भी हैं, क्योंकि यह कल्याण थाट का रागांग राग है। यूं कहें कि यही डीएनए है, जिससे कई और रूप निकल सकते हैं। कुमार प्रसाद मुखर्जी ने लिखा है कि एक बार उस्ताद फैयाज ख़ान और विष्णु भातखंडे कश्मीर गए। वहां फैयाज ख़ान साहब ने महारानी को दस दिन में 18 प्रकार के राग कल्याण सुनाए! यहां से जब वह भातखंडे जी के साथ लौटने लगे तो उन्होंने अपना प्रिय शिष्य श्रीकृष्ण रतण्जनकर ही उनको सौंप दिया।

मुझे लगता है कि जो संगीत सुनना शुरू कर रहे हैं, वह भी यमन से ही शुरू करें। कानों की ट्रेनिंग के लिए वही पद्धति कारगर हो सकती है, जो गले की ट्रेनिंग के लिए होती है। इससे स्वरों का उतार–चढ़ाव और सभी स्वरों का एक खाका मिल जाएगा। दूसरी बात कि सुनते हुए फिल्मी गीत भी याद आने लगेंगे, तो जुड़ना सहज होगा। आखिरी बात की यमन का भंडार बहुत बड़ा है। इसे सुनते हुए अगर एक साल निकल जाएं, तो भी शायद कम पड़े।

प्रवीण कुमार झा एक संगीत प्रेमी और 'वाह उस्ताद' नामक पुस्तक के लेखक हैं। सम्प्रति वह नॉर्वे में चिकित्सक हैं।

Voice of Power: Inside the Mind of the Queen of Indian Pop

There is no questioning the iconic status that Usha Uthup has earned for herself in the nation's musical firmament. Now 74 years old, she has been singing for 53 years. A legend of live music, her versatility is unmatched: she has sung jazz, folk, pop and rock in a total of 17 languages, including Bengali, Assamese, Gujarati, Tamil and Malayalam. A beloved icon of Kolkata who has been closely associated with **Prabha Khaitan Foundation** for years, Uthup spoke to **Manisha Jain**, editor of *Prabha*, to talk about her sparkling career, her insights on the changing trends in the music industry, her signature looks and her vision for musicians in India in the future.

Usha Uthup

Manisha Jain

You have been associated with Prabha Khaitan Foundation for many years. How has the experience been for you?

Yes, I have indeed been associated with the Foundation for such a long time now! I met Sundeep Bhutoria so long ago that I do not even remember the exact time. But it was such a memorable meeting! He is immensely vibrant and dynamic as a person, and, at the same time, very understated and unassuming. He is doing so much for the sake of art and culture through **Prabha Khaitan Foundation**; that is what draws all of us to him. Artists of all kinds feel the way they do about him because of this quality he possesses. If anyone were to talk about individuals who are working steadfastly for the uplift of art and culture in India, I am sure that Sundeep Bhutoria's name would figure at the top of that list.

Prabha Khaitan Foundation, under its Kitaab initiative, recently launched the translation of your biography, *The Queen of Indian Pop: The Authorised Biography of Usha Uthup*, in Coimbatore. Have you ever thought about writing your own autobiography, and sharing the experiences you have had over the 50 years you have been in the industry?

You know, many people have put this question to me. They ask me, "Why don't you write?" The truth is that, somehow, it has never happened. I have never really thought about it. Come to think of it, I really should have jotted down so many things after 50 years in this industry! Honestly, though, I have never thought about writing my own story. Even Vikas Jha, who wrote the Hindi biography, first came to me asking for an interview. I never thought that the interview would become a biography one day.

I do have a lot of letters that I wrote to my father. I have jotted down all my thoughts and experiences in those letters. Sadly, I lost most of those letters a few years ago, when we dealt with a case of flooding. I must say that the contents of those letters were truly amazing.

You started singing when you were very young, but never underwent any professional training. Was this a deliberate choice or something that just happened?

It was not deliberate. It just so happened that I did not get any formal training in music. But I always knew that I had music in me. I love music. I have said this earlier: music is not my business, communication is. If I can communicate with people by singing a song, even within my family, then that is the best thing. My family's favourite song that they like me to sing is Manna Dey's *Kasme Vaade Pyaar Wafa*. No one could imagine that somebody who sings an energetic song like *Rambha Ho* would sing *Kasme Vaade Pyaar Wafa*.

So you see, there are many sides and colours to music, but for me, a song is a song. You can communicate so much through the lyrics of a song. To my mind, this makes for better communication. If I were trained, I would never have been able to sing a song like *The Windmills Of Your Mind* or *Listen To The Pouring Rain*. If you are trained in one genre of music, then you might not be able to sing in another genre, if you know what I mean.

You were born in Mumbai, began your career at a nightclub in Chennai at the age of 22, shifted to Kolkata soon after, and began singing at the legendary Trincas. What attracted you to the city of Kolkata?

I was not attracted to Kolkata at the beginning. But I was offered a contract to sing here; that excited me immensely. After that, I stayed on here, because of that one scandal in my life: the scandal that I eventually ended up marrying! And then, like any other wife who stays with her husband, I stayed on here in Kolkata. Later on, the attraction to the city of Kolkata deepened. Kolkata gets deep into your bloodstream, you know? I do not know how it happened, or why, but there it is.

We all remember your stellar acting performances in the films, *7 Khoon Maaf* and *X: Past is Present*. You look vivacious in front of the camera. Why do you not act more often?

You see, I do want to act. I hope that, after this interview, I get offered more roles and scripts! I am waiting to get some meaty roles. I do not want to play myself; I want to play a different sort of character. It would be really wonderful if I could get a role of another kind. I have acted in a lot of films with stars like Mammootty, Amitabh Bachchan and so on. I love acting, and am willing to play any role, be it the role of someone's mother, sister, helper, a street food vendor, anything!

With technological advancement that has enabled the usage of software processes like Auto-Tune these days, do you think that that singing as a profession has changed over the years?

I would say that the sky's the limit now, and that is just fantastic. The opportunities available for singers today are marvellous. Can you imagine that, at one time, in a country with a population of crores, there were only six singers of note — Lata Mangeshkar, Asha Bhonsle, Manna Dey, Mohammed Rafi, Kishore Kumar and Mukesh? Now, because of the electronic media and the wonderful reality shows that all our talent is being exposed to, everybody has got a platform to showcase what they have to offer. Auto-Tune and the other facilities that they have now are marvellous, because singers can achieve greater perfection.

"The opportunities available for singers today are marvellous. Can you imagine that, at one time, in a country with a population of crores, there were only six singers of note — Lata Mangeshkar, Asha Bhonsle, Manna Dey, Mohammed Rafi, Kishore Kumar and Mukesh? Now, because of the electronic media and the wonderful reality shows that all our talent is being exposed to, everybody has got a platform to showcase what they have to offer. Auto-Tune and the other facilities that they have now are marvellous, because singers can achieve greater perfection"

The only thing that I would say is missing is the warmth. The involvement of several people in a recording, rather than it being purely digital, is better. Having said that, I must say that I am a compulsive optimist; I never think in a negative way about anything. People keep saying, "*Aajkal* lyrics *ko kya ho gaya hai, gaane nahi hain, tune nahi hai, kuch nahi hai*!" To such people, I say, "*Sab kuch hai*". Give it time to become a classic! I am sure that the songs I sang decades ago are not familiar to a lot of people now; perhaps they are listening to those songs and asking, "What is this?" But that does not take away from the fact that today, those songs are iconic. So my advice is, please wait! There are many good lyricists and composers today; give them some time.

"There are many sides and colours to music, but for me, a song is a song. You can communicate so much through the lyrics of a song. To my mind, this makes for better communication. If I were trained, I would never have been able to sing a song like *The Windmills Of Your Mind or Listen To The Pouring Rain*. If you are trained in one genre of music, then you might not be able to sing in another genre"

The pandemic brought the life and work of performing artists to a standstill. At the time, you were involved in a lot of charitable initiatives that provided aid to the people around you. Tell us more about that.

Actually, when you think about it, it does not feel nice to talk about the good things one has done; or, rather, the things that one thinks are good. The fact of the matter is that God has been kind. Covid-19 ruined the lives of so many people. There were no shows or any avenues to earn for two years. I shared the meagre amounts of money I earned during those times with everybody. Nobody's salary was cut. All the technicians were paid. I am grateful to God that I could help the people around me.

Let us talk a little bit about your legendary looks — the beautiful Kanjeevaram *sarees*, the *gajras* and the *bindis*. Few would have thought that such a unique ensemble would be seen on performers singing jazz at nightclubs, but you have carried it off so beautifully! Was there a thought process behind this?

No, there was nothing. There was no marketing or positioning involved; it was all circumstantial, like you said before. I grew up in a musical family. My two elder sisters got to learn a little bit of Carnatic music, but I did not get that chance. I come from a very middle-class family. I was the fifth of six children. By the time it came to me, my parents probably did not think I had it in me to learn Carnatic music. As far as my on-stage looks go, if I look back, I think I was caught in my own web. I turned this into an iconic look, and now, I cannot travel anywhere without my *bindi*! Even the security personnel at airports point it out to me if I am not wearing a bindi; they say, with a proprietary air, "*Arre, aap bindi nah lagaye aaj*!" or "*Oh ma*! *Aaj ki holo*!" As I said, I am now caught in my own web: I cannot leave my house unless I am dressed in my *saree*, flowers and *bindi*. They are a part of my package today. But it was not deliberately planned at all.

What advice would you give to aspiring, talented musicians who are inspired by you, especially Indian artists who wish to make a mark on the global stage?

As always, I would tell them, "Hang in there!" If you believe in yourself, hang in there, and remember that the song is always bigger than the singer. You have to make the song your own and really do it your way. Do not try to be like other people. I cannot sing like Hariharan, Shankar Mahadevan, Shreya Ghosal or Arijit Singh, but hey, they cannot sing like me! So, you learn to do your own thing. More than anything else, what matters is not whether you are a good or a bad singer; it is about how original you are. So hang in there, and remember that there is no substitute for hard work.

"Remember that the song is always bigger than the singer. You have to make the song your own and really do it your way. Do not try to be like other people. I cannot sing like Hariharan, Shankar Mahadevan, Shreya Ghosal or Arijit Singh, but hey, they cannot sing like me! So, you learn to do your own thing. More than anything else, what matters is not whether you are a good or a bad singer; it is about how original you are"

Rapid Fire With Usha

A musical instrument you cannot live without?

Bass guitar!

Your favourite international music composer?

Santana and Quincy Jones.

What is playing on repeat on your playlist right now?

I am learning the Puja song!

Which identity do you associate yourself most with — a stage performer, a nightclub performer or a playback singer?

I would call myself a stage performer — more like a live music singer!

IN OUR NEXT ISSUE

Amish Tripathi

Anil Kapoor

Astha Arora

Bhawana Somaaya

Geetanjali Shree

Kshama Sharma

Mamta Mehrotra

Navdeep Suri

Pratyaksha Sinha

Ricky Kej

Saksham Garg

Shashi Tharoor

Susmita Mukherjee

REACH US AT

Address: 1A Camac Court, 25B Camac Street, Kolkata - 700 016, West Bengal, India

The digital version of the newsletter is available at pkfoundation.org/newsletter

newsletter@pkfoundation.org *FoundationPK* *PrabhaKhaitanFoundation* *prabhakhaitanfoundation*

For private circulation only